अभिशप्त

सामनेक मकानक किरायादार मोहल्लाक एक टा अनेरुआ कुकूरकें बासि भात रोटी खुआ-खुआ पोसुआ बना लेने अछि । एहि अप्रत्याशित दुलारसँ ओकर मिजाज बढ़ि गेल छैक आ ओ अकारणें प्रत्येक आबऽजायवलापर ओकरे दलानमे बैसल भुकैत रहैत छैक । मुदा, एखन एहि उदास दुपहरियामे, दलानमे राखल एक टा चौकीक तरमे दुबकल ओहो ओंघा रहल छैक ।

प्रकाशक कोठलीक खिड़की खूजल छैक आ पड़ोसीक दलानमे एक टा कुकूर ओंघा रहल छैक । बाँकी कतहु किछु नहि । सौंसे मोहल्ला सुन्न पड़ल छैक– सभ टा खिड़की-दरबज्जा बंद ! एहि उदास जरैत दुपहरियामे खिड़कीसँ बाहर तकैत प्रकाशकें कतेको बेर भ्रम भेलैक अछि जे दुपहरिया नहि, राति बीति रहल छैक आ सौंसे मोहल्ला पसरल इजोरियामे बेसुध पड़ल छैक । मुदा खिड़कीक छड़कें नांघिकऽ अबैत रौदक धाही प्रत्येक बेर ई भ्रम तोड़ि देलकैक अछि– इजोरियामे एतेक धाह नहि भऽ सकैत छैक, विरही प्रेमियोक हेतु नहि । आ, एहि अनुभूतिक संग उदास आ सुन्न दुपहरिया किछु आर उदास, किछु बेसी सुन्न लागऽ लगैत छैक । रोशनदानपर कचबचाइत बगड़ाक अनवरत कोलाहलो एहि सुन्नकें भरबामे असमर्थ रहि जाइत छैक । मुदा ओकर कचबचाहटि सुनि एक टा दुष्ट विचार बेर-बेर ओकरा तंग करैत छैक– मीरा आइ एतऽ नहि अछि । किएक ने एकर खोंताकें आइये उजाड़ि-पुजाड़ि कतहु फेकि दिऐक ? मीराक उपस्थितिमे जखन कखनो एहन विचार करैत अछि, ओ झट टोकि दैत छैक– ''रहऽ ने दियौक । अहाँक की बिगड़ैत अछि ? दिन भरिमे दस-पाँच खढ़क टुकड़ी खसा दैत अछि, बहारिकऽ फेकि दैत छिऐ । मात्र एतबे लेल ककरो बनल-बनाओल खोंता उजाड़ि देबैक ?'' आइ ओ नहि छैक तँ इच्छा होइत छैक जे मौकासँ फायदा उठाबी । मुदा नहि जानि किएक कतेको बेर सोचियो कऽ ओ नहि उठैत अछि आ रोशनदानपर बड़ मेहनतिसँ जमा

कयल गेल खढ़क ढेरीकेँ देखैत रहैत अछि– बड़ी काल धरि । आ फेर बिना खोँताक रोशनदानक कल्पना कऽ अकारण सहमि जाइत अछि ।

सहमि जाइत अछि आ ओम्हरसँ दृष्टि हँटा फेर खूजल खिड़कीसँ बाहर ताकऽ लगैत अछि । चौकी तर ओंघाइत कुकूर आब नीक जकाँ पसरिकऽ सूति रहल छैक । ओना सूतल देखि ओकरा ईर्ष्या होइत छैक– कोना निश्चिन्त सूति रहल अछि गाढ़ निन्नमे ! मुदा तत्क्षण 'श्वान-निद्रा'वला श्लोक मोन पड़ैत छैक आ अपन ईर्ष्यापर अपने हँसी लगैत छैक– कुकूरक निन्न कतहु गाढ़ होइ ?

ओ अपन दृष्टि सिकोड़ि लैत अछि आ देहकेँ बिछौनपर ढील छोड़ि दैत अछि । कनेक काल सूति ली, मोनमे सोचैत अछि । मुदा आँखि बन्द करिते खूजल खिड़कीसँ अबैत रौदक धाही असह्य लागऽ लगैत छैक । देहपर पसेनाक चुहचुही बुझाइत छैक, अपस्याँत नचैत पंखोक तरमे । हाथ बढ़ाकऽ खिड़कीक पल्ला ठेलिकऽ बन्द करऽ चाहैत अछि । मुदा हाथ ओतऽ धरि नहि पहुँचैत छैक । ऊठिकऽ खिड़की बन्द करबाक बात सोचियोकऽ बिछौनसँ नहि उठैत अछि ।

मुदा अपन एहि असफल चेष्टापर मिनी मोन पड़ि जाइत छैक । ओहो फर्शपर ठाढ़ि भऽ अपन छोट-छोट हाथ बढ़ा खिड़कीकेँ छूबऽ चाहैत अछि । मुदा हाथ नहि पहुँचैत छैक । ओ ओकरा उदास होइत देखैत छैक आ झट कोरामे उठा खिड़कीपर ठाढ़ कऽ दैत छैक आ तखन ओ बड़ी कालधरि छड़ पकड़ने खुशीसँ छरपैत रहैत छैक ।

मिनी मोन पड़ैत छैक आ उदास दुपहरिया आरो उदास भऽ जाइत छैक । मिनी-गुड्डूकेँ रहलासँ कतेक हुल्लड़ मचल रहैत छैक ! मीरा तँ दुनूकेँ सम्हारैत-सम्हारैत अपस्याँत भऽ जाइत छैक । सोचैत अछि– साँझखन जाकऽ दुनूकेँ लऽ अनतैक । मुदा लऽ अनबाक विचारक संगे मीराक एना चल जयबाक बात मोन पड़ि जाइत छैक । रोकियो ने सकलैक ओकरा । बुझयबा-सुझयबाक कोशिशो ने कयलकै । बुझाकऽ हारि गेल अछि । मीराक अपन दुःख सभसँ ऊपर छैक, अनकर बात ओ सुनऽ नहि चाहैत छैक, बुझबाक चेष्टो ने करैत छैक । ओ मात्र एतबे जनैत छैक जे 'ओकर घर' (अपन घर ओ आइ धरि नहि बुझलकै अछि) मे ओ अस्वीकृत छैक । घरक इच्छाक विरुद्ध, अपन पसिन्नसँ विवाह कयने अछि प्रकाश, ई गप्प एहि घरमे आबऽसँ पूर्वेसँ ओ जनैत छैक, एक्को दिन लेल बिसरल नहि छैक आ टूटल गृहस्थीक बिगड़ल आर्थिक अवस्था आ सुदीर्घ बीमारीसभक फेरामे ओझरायल घरक लोकक असमर्थताकेँ अपन उपेक्षा मानि-मानि ओ अपन धारणाकेँ

आरो पुष्ट करैत गेल छैक । एक्के घरमे, एक्के छतक नीचाँ वर्षो संग रहियोकऽ मीरा ओहि घरक कहियो नहि भऽ सकलैक जकरा ओ 'ओकर घर' कहैत छैक आ मात्र एही आशापर जीवि रहलि छैक जे कहियो प्रकाश समर्थ भऽ 'अप्पन घर' बनौतैक, जे 'ओकर घर'सँ भिन्न, जाहिमे मीराक किछु स्थान रहतैक, जकरा ओ यत्नपूर्वक सजाओत आ ओहन बनाओत जेहन ओ सपना देखैत रहलि अछि ।

आ समर्थ प्रकाश भऽ गेल अछि, मीरा बुझऽ लागलि छैक । बहुत रास आरो लोकसभ बुझऽ लागल छैक । किएक तँ नीक नोकरी करैत अछि । नीक कमाइत अछि । प्रशिक्षणक हेतु जखन ओ वर्ष भरि ओकरासँ दूर छलैक तँ मीरा कनियोँ उदास नहि भेलि छलैक । एक-एक दिनकेँ उत्साहपूर्वक कटैत गेलि छलैक– नव जिनगीक शुभारम्भक आशामे । एक-एक टा बितैत दिनक संग एक टा नव प्रातःक प्रकाश ओकर समीप अबैत जा रहल छलैक, जकरा बाँहि पसारिकऽ मीरा समेटि लेबऽ चाहैत छलि । प्रकाश लग सुरक्षित ओहि प्रशिक्षण-कालक पत्रसभमे ओहि नव प्रातक इजोत आइयो बन्दी बनल अहुरिया काटि रहल छैक ।

प्रशिक्षणसँ घुरलापर घर ओकरा भेटल छलैक आ मीरा रहऽ लागलि छलैक संगमे । मुदा मीराक सभ टा उत्साह, सभ टा स्वप्न एहि अनुभूतिक संग छिड़िआय लागल छलैक जे ओ एकसर नहि छल । ओकर संग 'ओकर घर' छलैक जे मीराक घर नहि छलैक । ई नवको घर 'हमर घर' नहि बनि सकलैक जाहिमे मीरोक किछु हिस्सा होइ, जकरा ओ अपन इच्छासँ सजाबय । ओ बुझि गेलैक जे प्रकाश एकसर नहि भऽ सकैत छैक, ओकर संग 'ओकर घर' रहतैक– सभ दिन । मीरा उदास भऽ गेलैक, हरदम उदासे रहैत छैक ।

ओ बुझाबऽ चाहैत छैक, मुदा हारि जाइत अछि । भरिसक ठीकसँ बुझाइए नहि पबैत छैक । भरिसक मौके नहि भेटैत छैक । भोरसँ डाक्टर, दबाइक हेतु भागम भाग, दिन भरि आफिस, आ आफिसक बाद फेर बितल राति धरि घर-गृहस्थी, पथ्य-परहेज आ दवा-दारुक व्यवस्था । बितल रातिमे जखन मीरा बगलमे पड़ि रहैत छैक तँ थाकल-ठेहिआयल रहलोपर किछु कहबा-सुनबाक इच्छा होइत छैक । मुदा दोसर बिछौनपर ओकर छोट भाइ लल्लन आ सपन तथा छोट बहिन लिली आ नीली जागलि रहैत छैक । जा धरि ओ सभ सुतैत छैक, गुड्डू जागि जाइत छैक । मात्र डेढ़ वर्षक छैक, मायक दूध चाहिऐक । दूध पिअबैत-पिअबैत मीरा अपनो सूति रहैत छैक । मुदा ओकर आँखिसँ निन्न हेरा जाइत छैक । बगलमे सूतलि मीरा सय-हजार मील दूर बुझाइत छैक– दिन-दिन दूर होइत । ओ डेरा जाइत अछि । आ, रातुक ओहि डेरायल एकसरपनीमे बड़ी काल धरि जागल रहैत अछि ।

आ भोरे मीरा उदास रहैत छैक । दिन भरि उदास रहैत छैक । ककरोसँ किछु कहैत नहि छैक । मुदा ओकर मौनक भाषा सभ अपन-अपन ढंगसँ बूझि रहल छैक । ई बिनु-कहल भाषा जेहन प्रकाश बुझैत छैक, आर क्यो नहि बूझि रहल छैक। मुदा अपन बात दोसरकेँ बुझयबामे प्रकाश सभ दिन असमर्थ रहल अछि ।

मायकेँ कैंसर आफ ब्रेस्ट्सक सन्देह छैक । दू माससँ इलाज भऽ रहल छैक । आब डाक्टरसभ कहि रहल छैक- कैंसर नहि, यूनिलेटरल एक्जिमा थिक । मुदा दर्द एखनो छैक । एहि दर्दसँ ओ ओतेक चिन्तित नहि छैक । सहबाक अभ्यास भऽ गेल छैक । तैयो चिन्तित रहैत छैक माय । बाबूजीकेँ डायबेटीज आ ब्लडप्रेशर तोड़िकऽ राखि देने छनि । मुदा तत्काल तंग कयने छनि औंठापरक एक टा छोटसन घाव । दू मासक इलाजक बादो ठीक नहि भऽ रहल छनि । मुदा ओ तऽ डेड टिशू छैक, ओहिमे दर्द नहि होइत छनि । दर्द होइत छनि एक-एक टा जीवित टिशूमे- सदिखन । आ ओहो चिन्तित रहैत छथिन । उमा पन्द्रह दिन पहिने एक टा शिशुकेँ जन्म देलकैक अछि, कमजोर छैक एखन । मुदा भौजीक मुँह देखिकऽ प्रायः ओ आरो कमजोर भऽ जाइत अछि । ओकरासँ पैघ इला स्वस्थ छैक, दिन भरि माय आ भौजीक संग भनसाघर आ अन्य काजमे व्यस्त रहैत छैक । मुदा भनसाघरमे गुमसुम फुलकी छनैत वा तरकारी कटैत भौजीक मुँह देखिकऽ ओहो रोगिआहि जकाँ भऽ जाइत छैक । छोट बच्चासभ कखनो-कखनो दुपहरियामे आइसक्रीम खयबाक जिदपर माय-बाबूजीसँ डाँट सुनि ओतेक नहि सहमैत अछि जतेक ओहन जिद्द करैत काल भौजीक उपस्थित रहलापर । मीराक मौनक अर्थ सभकेँ लागि गेल छलैक आ प्रकाश डेरायल रहैत छल ।

मुदा मात्र डेरायल रहलासँ प्रकाश ओहि स्थितिकेँ नहि टारि सकल जकर आशंका पछिला दू माससँ ओकरा आक्रान्त कयने छलैक । छुट्टीक दिन नहि जानि कतेक आलस ओकरा दबा लैत छैक । से नहि जानि । बिछौनसँ ऊठिकऽ हाथ-मुँह धोबाक इच्छो धरि नहि होइत छैक । अनेरो बिछौनपर पड़ल रहैत अछि । मिनी जाधरि ओहि घरमे रहैत छैक, कतहु नहि जाइत छैक । तखनो ओकरासँ चिपकल छलैक कि भनसाघरसँ माय जोर-जोरसँ बाजऽ लगलैक- "हमरालोकनि सभ दिन एहिना पाथर जकाँ अहाँक छातीपर बैसऽ नहि आयलि छी कनियाँ ! साढ़े तीन हाथक पुरुष ठाढ़ छथि एखन कमायवला । बीमारीक कारणेँ नचार पड़ल छी, नहि तँ एनामे क्यो एक्को क्षण रहत ?" मायक चिचिआयब क्रमशः कनबामे बदलि गेलैक आ फेर सभ टा निःशब्द । ओ साँस रोकि प्रतीक्षा करऽ लागल । हरदम बकबक करऽवाली मिनी सेहो दम साधि ओकर मुद्रा निहारैत रहलैक । किछु काल

उपरान्त मीरा दौड़लि अयलैक आ बिछौनपर पेटकान दऽ देलकैक । ओकरा किछु पुछबाक साहस नहि भेलैक । मायकेँ एना पड़लि देखि मिनी कानऽ-कानऽ सन भऽ गेलैक आ ओकर मुँह ताकऽ लगलैक । ओकर प्रश्न करैत आँखिसँ बचबाक हेतु प्रकाश बाथरूम जा हाथ-मुँह धोबाक विचार करऽ लागल । तखने दोसर कोठलीसँ बाबूजीक स्वर सुनाइ पड़लैक- "भेल ने सेहन्ता पूर ! दुखिते रही, मरि तऽ नहि गेल रही । बड़ सेहन्ता रहय जे बेटाक संग जाकऽ रही ।" एकाएक नहि जानि कोना ओ बाबूजीक समक्ष पहुँचि गेल आ कहलकनि- "ई अहाँक घर अछि- अपन घर । बीमारी द्वारे नचार नहि रहितौँ तँ एतऽ नहि अबितौँ, ई बात कोना बजलहुँ अहाँ ?" अपन बातक प्रतिक्रिया उपस्थित लोकसभक आकृतिपर बिन-देखने आ फेर अपन कोठलीमे घुरि बिछौनपर पड़ि रहल ।

आ एहि जरैत उदास दुपहरियामे खूजल खिड़कीसँ बाहर अकारण बेर-बेर तकैत बिछौनपर पड़ल अछि आ पड़ोसियाक मकानक बरण्डामे एक कुकूर ओंघा रहल छैक । रोशनदानपर बगड़ाक कचबचाहटि ओहिना जारी छैक, मुदा तीन पैघ-पैघ कोठलीवला डेरामे पूर्ण निस्तब्धता छैक । ओकर पन्द्रह दिनक भगिनियो आइ एको बेर नहि कनलैक अछि । एक टा मनहूस चुप्पी पसरल छैक । मीरा जेना-तेना दू कौर कण्ठक नीचाँ उतारि गुड्डू-मिनीकेँ संग लऽ चल गेलैक- एही शहरमे अपन बापक डेरा । ओ नहि रोकलकै । मुदा तैयो एहि डेरामे पन्द्रह आदमी छलैक- ओकर आठ भाइ-बहिन, माय-बाप, दुनू बहिनोइ, नोकर, दाइ आ एक टा पन्द्रह दिनक भगिनी । मुदा लागि रहल छलैक जेना क्यो ने होइ डेरामे, ओ एकसरे रहैत होअय ।

अपन बिछौनपर पड़ल अछि आ बाहर उदास दुपहरिया धधकि रहल छैक । रौदक धाही बिछौन धरि पहुँचि गेल छैक- मुदा तैयो ओ नहि उठैत अछि । पेटकुनियाँ भऽ जाइत अछि आ गेरुआमे मुँह गाड़ि लैत अछि ।

नहि जानि कतेक काल एना पड़ल रहैत अछि कि दरबज्जा खटखटाइत छैक । माय हेतै चाह लेने । सभ रविकेँ माय पाँच बजे चाह लऽ स्वयं उठबैत छलैक । ओ लपकिकऽ दरबज्जा खोलैत अछि । माय नहि, नोकर चाह लेने ठाढ़ छैक । चाह ओकरा हाथसँ लऽ ओ फेर बिछौनपर बैसि रहैत अछि । चाह एकदम ठण्ढा छैक, भरिसक बड़ी कालसँ दरबज्जा लग ठाढ़ छलैक । नोकरकेँ बजा फेरसँ चाह गर्म कऽ अनबाक बात सोचियोकऽ ओकरा नहि बजबैत छैक । एक्के घोँटमे सभ टा पीबि, खाली पियाली पलंग तरमे राखि दैत छैक ।

ऊठिकऽ दोसर कोठलीमे अबैत अछि । माय ओकर भगिनीकेँ दूध पिया रहलि छैक । लिली-नीली ओतहि बैसलि छैक । उमा बिछौनपर पड़लि छैक । इला प्राय: भनसाघरमे होयतैक आ लल्लन-सपन केम्हरो खेलाय निकलल छैक– ओ अन्दाज करैत अछि । माय ओकरा दिस ध्यान नहि दैत छैक आ उमा पड़ले-पड़ल आँखि बन्द कऽ लैत छैक । ओ किछु काल अनेरो ओहि कोठलीक चौखटिपर ठाढ़ रहैत अछि । फेर बाहरवला कोठलीमे अबैत अछि । ओकर दुनू बहिनोइ कोनो बातपर गरमागरम बहस कऽ रहल छलथिन, मुदा ओकरा देखिते दुनू चुप्प भऽ गेलाह । ओतहु किछु काल अनेरो ठाढ़ रहल । क्यो किछु नहि बजलैक । ओ बाहर बरण्डामे आबि गेल । बरण्डामे राखल अखड़ा चौकीपर पड़ल बाबू किछु पढ़ि रहल छलथिन, जोर-जोरसँ, भरिसक ओकरे शेल्फक कोनो अंग्रेजी उपन्यास । बाबूकेँ पढ़बाक शौक छलनि, मुदा समये ने भेटैत छलनि । तैयो जखन समय भेटैत छनि, एहिना जोर-जोरसँ पढ़ैत छथिन ।

ओ बरण्डामे राखल एक टा कुर्सीपर बैसि रहैत अछि । साँझ झलफला रहल छैक, मुदा बरण्डाक बल्ब नहि जरल छैक । बाबूक आँखि ओहिना कमजोर छनि, चश्माक लेन्स सेहो बेकार भऽ गेल छनि । डाक्टर ओकरा बदलबाक हेतु कतेको बेर कहि चुकल छनि । ओ ऊठिकऽ बल्ब जरा दैत छैक । बाबू एक बेर चौंकिकऽ देखैत छथिन आ फेर ओहिना पढ़ऽ लगैत छथिन ।

ओ फेर कुर्सीपर बैसि रहैत अछि । दू-चारि पाँती सुनिकऽ लगैत छैक जेना बाबू 'डाक्टर जिबागो' पढ़ि रहल छथिन । एक बेर फेर एकरा पढ़ब– ओ सोचैत अछि ।

भरि दुपहरिया चौकी तर ओंघाइत कुकूर कतहु मोहल्लामे पड़ा गेल छैक आ मकान-मलिकिनीक व्याकुल स्वर साँझक झलफलमे औना रहलि छनि ।

बाहर अन्हार जमकल जाइत छैक । ओ ऊठिकऽ फेर अपन कोठलीमे आबि जाइत अछि, मुदा लगैत छैक जेना कोठलीमे एखनो एक टा जरैत दुपहरिया बन्द छैक ॥

आफिससँ लंचरूममे चहल-पहल होबऽ लगैत अछि । अपन-अपन डिपार्टमेंटसँ डेढ़ बजिते सभ लंचरूम दिस पड़ाइत अछि । बनर्जी दूरेसँ हल्ला करैत

अबैत अछि– ''रिमेम्बर, एनी आफिसियल टाक पेनाल्टी फाइभ रुपीज ।'' चारू कातसँ समवेत स्वर उठैत अछि– येस...येस... ।

प्रकाश अपन कुर्सीपर मौन बैसल रहैत अछि । सभ दिन जकाँ आइयो एहि समवेत येस...येस... मे ओ सहयोग नहि दैत छैक । किएक तँ ओकरा बूझल छैक जे पन्द्रह मिनट पुरैत-पुरैत सभकेँ ई शर्त बिसरि जयतैक आ फेर वैह बोनस, डी.ए. आ प्रमोशनक गप्प– अन्तहीन ।

बनर्जी अपन कुर्सीपर बैसिते भट्टाचार्यक हाथसँ टिफिनक डिब्बा छीनि लैत छैक– ''देखी, आज के बौदी की दिये छे ?'' आ झट डिब्बाक दू टा पराठामेसँ एक टाकेँ मोड़ि-माड़ि मुँहमे राखि दैत अछि । भट्टाचार्यक मुँह लटकि जाइत छैक । मुदा बाहरसँ ओ शुष्क हँसी हँसैत रहैत अछि । बनर्जी बिना ओहिपर ध्यान देने जल्दी-जल्दी मुँह चला, ऊपरसँ एक घोँट पानि पीबि सभ टा गीड़ि जाइत अछि आ तखन भट्टाचार्यसँ कहैत छैक– दादा, यू आर ग्रेट ।

बनर्जीक ई सभदिना आदति छैक । अपने कहियो किछु नहि अनैत अछि । मुदा सभक डिब्बासँ लूझि-लाझि सभसँ नीक लंच ओकरे भऽ जाइत छैक । नहि जानि, आब ओ कोम्हर लुधकत, ताही डरेँ सभ अपन-अपन डिब्बा खोलि जल्दी-जल्दी कौर उठबऽ लगैत अछि । मुदा बनर्जी कहाँ मानऽवला ? श्रीवास्तवक डिब्बामेसँ एक टा अंडा उठा लैत छैक आ कहैत छैक– ''बौदी रोज आपको अण्डा खिलाता है, इसीसे तो इस उमेरमे भी लड़का निकाल दिया ।''

श्रीवास्तवकेँ अण्डा जयबाक अफसोस तँ होइत छैक, मुदा अपन मर्दानगीक तारीफसँ फूलिकऽ कुप्पा भऽ जाइत अछि आ सगर्व हँसैत अछि । श्रीवास्तव रिटायरमेंटक करीब पहुँचि रहल अछि, मुदा एहू साल एक टा बेटा भेल छैक । अवस्थामे बनर्जी ओकर बेटोसँ छोटे होयतैक, मुदा संगतुरिया जकाँ हँसी-मजाक होइत छैक दुनूमे ।

एक टा अण्डासँ बनर्जीकेँ संतोष नहि भेल रहैक । ओकरा उपाय सूझि गेलैक । लंचरूममे अबैत काल श्रीवास्तव नेङरा रहल छल, सभक ध्यान गेल रहैक । ओ झट पूछि बैसलैक– ''आज किया बात है दादा ? नगड़ा के चल रहा है ?''

श्रीवास्तव अपन पाजामानुमा पैण्टकेँ झट ऊपर उठा ठेहुन देखबैत कहैत छैक– ''क्या बताऊँ भाइ ! कल आफिस से लौटते वक्त सीढ़ी से उतरते हुए घुटने में मोच आ गयी । देखो न, नी-कैप भी पहन रखा है ।''

एक टा दुष्ट हँसी बनर्जीक ठोरपर पसरि गेलैक– ''सीढ़ी से उतरने में या कहीं और... ठीक-ठीक बोलो दादा.... ब्लफ नहीं...''

मतलब बूझि श्रीवास्तव तेना हँसैत छथि जेना लजायल स्वीकृति दऽ रहल होथि। सभ भभाकऽ हँसैत अछि। आ मौकासँ फायदा उठा श्रीवास्तवक डिब्बासँ एक टा पूरी उठा बनर्जी अपन मुँहमे धऽ लैत अछि।

तखने शुक्ला लंचरूममे अबैत अछि– मुँहमे पान, ठोरपर मुस्की। बनर्जी ओकरे पाछू पड़ि जाइत अछि– ''की दादा ! फुरसत मिल गिया ?''

''कथीक फुरसति ?'' –शुक्ला कनेक अकचकाकऽ पुछैत छैक।

''हम से नहीं उड़ो दादा ! हम सब देखा। आजकल डिक्टेशन बहुत हो रहा है स्टोनों को– उसी से फुरसत ! थोड़ा हमलोगों के लिए भी छोड़ दो दादा !''

''अरे क्या बकता है। दरबज्जा ठीक से बन्द करो। बाहर से किरानी लोग झाँक रहा है। सुन लेगा तो जान आफत में आ जायगी।'' शुक्ला डेराइत, मुदा प्रसन्न होइत कहैत छैक।

बनर्जी उठल आ दरबज्जा नीक जकाँ बन्द कऽ आयल। फेर शुक्लाक बगलमे कुर्सीपर बैसैत बाजल– ''अब सुनाओ दादा ! लोण्डिया फँसी की नही ? 'ए वन' माल है।''

शुक्लाक जीह चटपटा उठलैक जेना कोनो चहटगर चीज सामने पड़ि गेल हो ! थूक घोँटैत बाजल– ''सौ तो है भाई ! लिफ्ट भी बहुत देती है, मगर हिम्मत ही नहीं पड़ती, कैसे आगे बढ़ूँ ?''

''अरे हिम्मत करो पट्ठे ! वे सबकी सब एक-सी होती है। पर हमे भूल नहीं जाना। और अगर तुमसे नहीं होता, तो हमारे सेक्शन में भेज दो।'' –एकाउण्ट्स सेक्शनक प्रधान चोपड़ा चपचपाइत बाजल।

तखने मिश्रा मुँह धूआँ कयने लंचरूममे पयर देलक। चुपचाप अपन कुर्सीपर आबि बैसि गेल। प्रकाशोक ध्यान ओम्हर गेलैक। अबस्से कोनो अप्रिय घटना भेलैक अछि।

'क्या हुआ यार ?'' एक संग कतेको स्वर फुटलैक।

–''होयत की ? वैह पुरना रोग– यूनियन। काज करऽ कहियौक तँ यूनियन, कोनो गलती लेल पुछियौक तँ यूनियन। ऊपर रिपोर्ट करियौक तँ बड़ा

साहब कहताह जे अहाँ अयोग्य अफसर छी। नहि रिपोर्ट करियौक तँ नित्य अपने किरानी जकाँ खटू आ गारि सुनू। मोश्किलसँ एक घण्टा अपन कुर्सीपर बैसैत जायत, ताहूमे गप्प, चाह, सिकरेट। तखन काज कोना हो ? बड़ा साहबकेँ कहियनु तँ कहताह जे अहाँमे टैक्ट नहि अछि, टैक्टसँ काज निकालू। टैक्ट माने बेइज्जति सहू। आब हमरासँ नहि पार लगैत अछि ई रोज-रोजक बेइज्जति।

बात सभकेँ जँचलैक। सभक विभागमे यैह समस्या छलैक। कहियो 'गो स्लो' अभियान, कहियो 'वर्क टु रूल'। वर्क टु रूल माने वर्क एकार्डिङ्ग टु रूल नहि, माने नो वर्क। काज नहि करब। अहाँ अफसर छी, किछु बाजब ? बाजिकऽ देखि लियऽ तँ ! आफिसेमे नरेटी धऽ लेब। सड़कपर ठोकि देब।

सभ चारू कात मिश्राकेँ घेरैत बाजल– ''आखिर हुआ क्या ?''

–''बात तँ किछु नहि छलैक मुदा भऽ गेलैक बतङ्गर। टाइपिस्ट सिनहाकेँ तीन दिनसँ एक टा जरूरी चिट्ठी टाइप करऽ देने छलिऐक। आइयो ओहिना पड़ल छलैक। पुछलिऐक तँ बहस करऽ लागल जे टाइम नहि भेटैत अछि। हम पुछलिऐ जे दिन भरिमे कैक टा चिट्ठी टाइप करैत छी तँ बाजल चारि टा पाँच टा। हम कहलिऐक जे इन्टरव्यूमे तँ अपन स्पीड खूब बढ़ाकऽ लिखने रही। तँ कहऽ लागल जे तहिया ओ स्पीड रहय। आब घटि गेल अछि। जतबे पाइ भेटत, ततबे ने स्पीड रहत। हम कहलिऐक जे काजकेँ अनठबियौक नहि, टाइप कऽ चिट्ठी पठा दियऽ। बस एहीपर अड़ि गेल। कहऽ लागल जे अहाँ हमर अपमान कयलहुँ अछि, माफी माङू। हमरा आश्चर्य भेल जे उनटे चोरा मारामारी। तावत सभ टा नेता जुमि गेल। बड़ो साहेब अयलाह। आ सभ टा सुनि ओहो यैह कहलनि जे अहाँ अपन बात आपस लऽ लियौक आ माफी मङियौक। आब एनामे कोना काज होयत ?''

शुक्ला छड़पिकऽ ठाढ़ भऽ गेल– ''ई तँ सरासरि अन्याय थिकनि बड़ा साहेबक। गारि सुनू आ उनटे माफियो माङू। एना तँ खूब एडमिन्सट्रेशन चलतनि !

मिश्रा क्षुब्ध होइत बाजल– ''घास अफसर छी हमरालोकनि ! हमरालोकनिसँ तँ चपरासी नीक अछि। आइ.ए.एस.मे कम्पीट कयने रही, मुदा ज्वाइन नहि कयलहुँ। एतऽ ज्वाइन कयलहुँ जे हर-हर खट-खट नहि छैक। नीक पाइ भेटैत छैक, चैनसँ रहब।''

वर्मा गरजल– ''खाक अच्छे पैसे मिलते हैं ! न मकान की सुविधा, न सवारी की। चपरासी है भी तो पान तक लाकर नहीं देगा। ऐसी अफसरी से तो किरानीगिरी भली।''

प्रकाशक कानमे झुकिकऽ मिश्रा बजलैक– ''देखै छिऐक एकरसभक नाटक ? एखन सभ 'हँ-मे-हँ' मिलबैत अछि आ एतऽसँ जाकऽ बड़ा साहेब लग चुगलखोरी करत, मुफ्तक वाह-वाही लेत ।''

प्रकाशक मोन औना उठलैक । चुपचाप लंचरूमक दरबज्जा खेलि बाहर आयल । घड़ीमे दूसँ ऊपर भऽ रहल छैक । किछुए मिनटमे लंच-टाइम समाप्त होयतैक । मुदा आफिसमे चारू कात हल्ला मचल छलैक– कतहु ताश, कतहु शतरंज ! कतहु जोर-जोरसँ गप्प आ ठहाका । ओ एकर अभ्यस्त भेल जाइत अछि आब । शुरू-शुरूमे केहनदन लागल रहैक । चुपचाप अपन सेक्शनमे आबि जाइत अछि ।

लंच-टाइम खतम भऽ गेल छैक मुदा ओहिमे सभक डिब्बा दराजेमे बन्द छलैक । आब सौंसे सेक्शनमे टिफिनक डिब्बा टेबुलपर परसल छैक । ई क्रम तीन बजे धरि चलतैक । प्रकाश अपन दृष्टि अनेरे खिड़कीसँ बाहर सुदूर आकाशपर फेकि दैत अछि जाहिपर कारी-कारी मेघ बौआ रहल छैक । वर्षाक संभावना छैक ।

मुदा ठनका ओकरे सेक्शनमे खसैत छैक । सिंह जोर-जोरसँ गरजि रहल अछि– आब देखबैक अहाँलोकनि जे कोना मैनेजमेन्टक धज्जी उड़ैत छैक । बड़ लोकक आँखिमे धूरा झोँकलकैक, मुदा आब नहि चलतैक । इंदिरा जी, प्रधानमंत्रीक रंगति देखिए रहल छिऐक– पूरा झुकाव छैक कम्यूनिज्म दिस आ आब तँ नवका प्रेसीडेण्टो यूनियने नेता भेलाह अछि । पूजीवादीसभकेँ आब देखा देतैक । की कामरेड ?

सभ हँ-मे-हँ मिलबैत छैक । प्रकाशकेँ इच्छा होइत छैक जे सिंहसँ एक बेर कम्यूनिज्मक परिभाषा पुछैक ? पुछैक जे प्रधानमंत्री कम्यूनिस्ट कोना छथि ? मुदा तत्काल एहि इच्छाकेँ ओ दबा लैत अछि । आफत आबि जयतैक । सभ मिलि दस टा गारि देतैक आ ओ मुँह बाबि सुनैत रहत ।

सिंहक प्रवचन जारी छैक– ''एहि सारसभकेँ देखा देबैक हमहूँ सभ जे एकतामे कतेक शक्ति छैक ! एक-एक कऽ एहि बिल्डिंगसँ खिड़कीक बाहर सड़कपर फेकि देबैक । सभ टा अफसरी निकलि जयतैक ।

एतबा कहलाक बाद ओकर ध्यान प्रकाश दिस गेलैक जे सभ टा सुनियो कऽ बाहर खिड़की दिस ताकि रहल छल । कनेक व्यंग्यपूर्ण हँसी हँसैत ओ प्रकाशकेँ कहलकैक– ''अहाँ अधलाह नहि मानब झा बाबू ! हमरालोकनि जेनरल बात कऽ रहल छी, व्यक्तिविशेषक नहि ।''

प्रकाशकेँ जबर्दस्ती ओकर हँसीमे संग देबऽ पड़लैक– ''नहि-नहि, अधलाह किएक लागत ?'

मुदा ओकर आत्मामे क्यो चीत्कार कऽ उठलैक– नपुंसक ! कनेको पुंसत्व बाँचल छौक तँ रिजाइन कर आइये । एहि हल्लामे आर कतेक दिन जीबेँ ? मुदा तत्क्षण लगलैक जे रिजाइन करब सोचब संभव छलैक, मुदा वस्तुतः रिजाइन करब मोस्किल । रिजाइन कऽ ओ कतऽ जायत ? पचीस पूर भऽ गेलैक । आब आर कोन नोकरी भेटतैक ? आ यदि भेटियो जाइक तँ की होयतैक ? ई समस्या दोसरो ठाम आबि सकैत छैक । कतेक ठाम त्यागपत्र देत ? ककरा-ककरासँ लड़त ? ई समस्या संस्थाविशेष वा वर्गविशेषक नहि छैक, ओ जनैत छल । ई तँ मूल समस्याक एक टा छोट-छीन अंग छैक । असल समस्या छैक– राष्ट्रिय अनुशासनहीनता, राष्ट्रिय नैतिक ह्रास– सभ स्तरपर, सभ समाजमे, सभ व्यक्तिमे, एक टा अभिशप्त पीढ़ीमे जन्म लेने अछि जकर सम्पूर्ण अस्तित्व 'ट्रायल एण्ड एरर' पद्धतिमे तबाह भऽ रहल छैक । सभ व्यक्तिमे, सभ स्तरपर असन्तोष छैक । ओ कहाँ-कहाँ बौआयत ?

फेर लगलैक जेना एना सोचब कायरता छैक, पराजय-बोधक छैक । स्थितिकेँ यथावत स्वीकार कऽ लेब सामर्थ्यहीनताक द्योतक छैक । संघर्ष कयलासँ सभ टा बदलि सकैत छैक, एक टा नवीन क्रान्ति आबि सकैत छैक ।

'क्रान्ति' शब्द दिमागमे अबिते ओकरा हँसी लगलैक । 'क्रान्ति'क गप्प तँ सभ ठाम भऽ रहल छैक आइ-काल्हि । मुदा ई भ्रामक क्रान्ति तँ मात्र राजनीतिक क्षेत्रमे लेन-देनक हेतु एक टा लाभदायक शब्द छलैक– सर्वथा अर्थविहीन । कमसँ कम ओकरा सैह लगैत रहलैक अछि । ओ सभ दिनसँ निराशावादी अछि । घोर निराशाक क्षणमे ओकर तीव्र इच्छा भेलैक अछि जे अराजकता, अशान्ति, राजनीतिक अस्थिरता, असुरक्षा, उपद्रव, हिंसा आर बढ़ौक, ततेक बढ़ौक जे मनुष्यताक नाम-निशान नहि बचौक आ प्रायः तखन ओहि घोर अंधकारमे, ओहि सम्पूर्ण अराजकतासँ एक टा नव विधान, एक टा नव समाज जन्म लेतैक ।

मुदा, से नहि होयतैक । एहिना आस्ते-आस्ते ह्रास होयतैक, आ एक टा दू टा नहि, अनेको पीढ़ी एहिना एकरासँ त्रस्त रहतैक । ओकरा कालेजक जमानामे पढ़ल एक टा दार्शनिकक कथन मोन पड़लैक जे जनतंत्रमे विशेष आस्था नहि रखैत छल । ओ कहने छलैक जे जनतंत्रक एक टा एहनो रूप औतैक जाहिमे मनुष्यकेँ सड़कपरसँ हँटा जानवर राज करत, विद्यालयमे शिक्षककेँ भगा छात्र राज करत, आफिसमे आफिसरकेँ भगा कर्मचारी राज करत, घरमे स्वामीकेँ भगाकऽ स्त्री राज

करतीह आ नोकरसभ मालिकके मारि-पीटिकऽ बैसा स्वयं राज करत । ओहि दिनमे ओ आदर्शवादी छल । जनतन्त्र आ समतामे पूर्ण विश्वास रखैत छल । ओहि दार्शनिकक कथन पढ़ि ओकरा हँसी लागल रहैक । मुदा आइ सोचैत अछि जे किछु अतिशयोक्तिक संग ओकर कथन आइ चरितार्थ नहि भऽ रहल छैक ?

एक सप्ताहक बाद मीराकेँ लेबऽ अबैत अछि प्रकाश ! आइयो छुट्टीक दिन छैक– रवि । मिनी-गुड्डी ओकरा देखिते प्रसन्न भऽ जाइत छैक । दुनूकेँ दुनू हाथे एक संग कोरामे उठा ओ दुनूक गालपर लगातार चुम्मा लैत छैक । मीराक आँखिमे व्यंग्यक रेखा स्पष्ट झलकि जाइत छैक– ''एतेक दिनमे एक्को बेर घुरिकऽ हालो पुछऽ नहि अयलिऐक आ आइ बड़ प्रेम उमड़ि रहल अछि !'' ओ ओहि दृष्टिक भाषा पढ़ियोकऽ अनठा दैत छैक ।

दुनू गोटे एहिना किछु क्षण मौन रहैत अछि । प्रकाश अयबाक मन्तव्य प्रकट करैत अछि– ''चलब ?''

''कोन फायदा ?'' मीरा जवाब दैत छैक ।

प्रकाशक लेल ई उत्तर अप्रत्याशित नहि छलैक मुदा तैयो सुनिकऽ आश्चर्य भेलैक । आगू किछु बाजब निरर्थक लगलैक । कनेक काल बाद मिनी-गुड्डूकेँ अपनासँ फराक करैत उठैत बाजल– ''तखन चलैत छी ।''

–''माय कहलक अछि खाकऽ जाय लेल ।'' ई कहि बिनु उत्तरक प्रतीक्षा कयने मीरा चल जाइत छैक । प्रकाश किछु क्षण ओहिना ठाढ़ रहैत अछि । फेर जूता उतारि बिछौनपर पड़ि रहैत अछि । मौका पाबि मिनी छातीपर चढ़ि जाइत छैक । ओ जिद्द करऽ लगैत छैक– पप्पा, खिस्सा कहू ।

जल्दीमे कोनो खिस्सा मोन नहि पड़ैत छैक, मुदा मिनी मानऽवाली कहाँ ? जिद्द लागि गेल छैक । नचार प्रकाश किछु कहऽ लगैत छैक– ''एक टा रहय राजकुमारी, दूध सन उज्जर, मोती सन चकमक आ... देख, राजकुमारी एतहि आबि गेलैक ।''

मिनी हड़बड़ाकऽ छातीपरसँ उठि बैसैत छैक । प्रकाशो बैसि जाइत अछि। खूजल दरबज्जासँ मंजूकेँ अबैत ओ देखि लेने छलैक । सामने हाथ जोड़ने ठाढ़ि छलैक मंजू– मंजू दासगुप्ता ।

आ हाथ जोड़ने ठाढ़ि मंजूकेँ देखि ओकरा ओ दिन मोन पड़ैत छैक जहिया ओकर बरियाती एहि दरबज्जापर आयल छलैक । स्त्रीगणसभक झुण्डमे सभसँ आगू ठाढ़ि– गुलाबी साड़ी पहिरने एक टा मांसल चंचल छौंड़ी । बुट्टी-बुट्टीसँ तेजी झलकैत । सभ टा बीध करैत काल ओकर दृष्टि ओकरेपर गड़ल रहलैक जतऽ एक टा स्वच्छ हँसी हरदम ओकर दृष्टिक स्वागत कयलकैक । आन सभकेँ ओकर ई चेष्टा हल्लुक आ आपत्तिजनक लागल होयतैक संभवतः । मुदा ओम्हर ध्यान नहि देलकैक ।

आ तकर बाद नित्य बगलक क्वार्टरमे ओकर अड्डा जमऽ लगलैक । युवा हृदय, असंख्य असंबद्ध गप्प । ओकर अर्थ नहि, मुदा ओकर उत्साह, उमंग अजीव सन । बेर-कुबेर कथुक ध्यान नहि । कौखन टेगौरक कविता, आ कौखन सस्वर गीत– 'सात भाइ चम्पा जागो री जागो'वला आ 'निझुम संध्या, पंथ पाखिरा... ।' मंजूक सामीप्य ओकरा प्रिय लगैत छलैक ।

आ एहि सामीप्यक कारण नित्य पोस्टमैनक अयलापर ओकर बेचैनी, पत्र भेटलापर प्रसन्नता आ नहि भेटलापर उदासी ओकर दृष्टिमे आबि गेलैक आ जेना कोनो रहस्य बूझि जयबाक प्रसन्नता भेलैक ।

एक दिन टोकलकैक– 'परदेसीक पाती नहि आयल आइ ?''

ओ चौंकलि । फेर लजायलि । मुदा कनियेँ काल । फेर झट सम्हरैत बाजलि– ''अहाँ देखबै, देखाउ ?'' आ ओकर उत्तरक प्रतीक्षा नहि कऽ झट दौड़िकऽ भीतर गेलि आ हाथमे एक टा फोटो लेने आयलि– लियऽ, देखि लियौ, अछि ने एकदम 'उत्तम कुमार' सन ?

बंगला-रजतपटक लोकप्रिय नायकक संगे अपन प्रेमीक तुलना ओ गर्वपूर्वक कयलकैक । फोटो देखि ओकरो किछु साम्य बुझना गेलैक । ओकर पसिन्नपर बधाइ देलक । मुदा ओ प्रसन्न नहि भेलैक । एकाएक एकदम उदास भऽ गेलैक । बिनु पुछने कहऽ लगलैक– 'बाबा' ई विवाह नहि होबऽ देताह । हम कतेको बेर कहि चुकलियनि, मुदा नहि जानि किएक, हुनका पसिन्न नहि छनि ।

ओकरा प्रसन्न करबा लेल प्रकाश कहलकै– ''अहाँ चिन्ता किएक करैत छी, ब्राह्मण कुमार तँ उपस्थिते छी, जहिया कहब झट मंत्र पढ़ा बियाह करा देब ।''

आशाक अनुरूपे ओ भभाकऽ हँसलि आ लगातार हँसैत रहलि । ओहि दिन लगातार अनेको गीत अपन पसिन्नसँ सुनौलकैक, एतेक आत्मीयतासँ जे सासुकेँ चिन्ता भेलनि आ ओकरा बजाकऽ लऽ गेलथिन । बाटमे बुझौलथिन जे मंजू नीक

'लड़की' नहि अछि, एकर चालि-चलन ठीक नहि छैक, एकरासँ बेसी मेलजोल ठीक नहि । ओ बौक विद्यार्थी जकाँ सभ टा भाषण सुनैत रहल ।

मुदा वैह मंजू दासगुप्ता आइ कोठलीमे हाथ जोड़ने ठाढ़ि छलैक, माङमे सिन्दुर, देह आर अधिक मांसल, किछु-किछु स्थूल भऽ गेल छैक । आकृतिपर पूर्ण सन्तोषक भाव । दू वर्ष पूर्व विवाह भेल छलैक– ओ अनुपस्थित छल । हाथ जोड़ने ओकरे उलहन दैत रहलैक– ''आखिर ब्राह्मण-कुमारक दक्षिणा अहाँ पचाइये गेलहुँ ? एतेक बैमानी ?''

आ एहि परिहास मात्रसँ ओकर आकृतिपरक सन्तुष्टिक भाव बिला जाइत छैक आ तेहन उदासी पसरैत छैक जेहन कुमारि मंजूक मुँहपर फोटो देखौलाक बाद भविष्यक आशंकासँ पसरि गेल रहैक । दुनू आँखि डबडबायल ।

ओकरा अपनापर क्रोध होइत छैक । निरर्थक बेचारीकेँ कना देलिऐक ? भूतक गड़ल मुर्दा सामने राखि देलिऐक ? बात सम्हारैत पुछलक– ''खूब सुखी छी ने ?''

ओ मूड़ी डोलबैत अछि, बजैत किछु नहि अछि । आँखि ओहिना डबडबायल ।

आगू किछु नहि फुरलैक । चुप्प बैसल रहल । एहि बेर वैह टोकलकै– ''कने हमरा संग आयब ?''

प्रकाश अकचकायल ओकर मुँह देखैत रहि जाइत अछि । ओकरा एना अकचकायल देखि मंजू हँसी कयलकैक– चिन्ता जुनि करू । अहाँक संग कतहु पड़यबाक योजना नहि अछि । लजाकऽ प्रकाश झट ठाढ़ भऽ जाइत अछि । मिनीकेँ देहसँ फराक करैत अछि आ मंजूक संग ओकर क्वार्टरमे अबैत अछि । ओकरा एक टा कुर्सीपर बैसा, मंजू भीतर जाइत छैक आ एक टा मोट सन लिफाफ लेने बाहर अबैत छैक । लिफाफ ओकरा हाथमे दैत कहैत छैक– ''अहाँक दक्षिणा बाँकी रहि गेल छल ने, लियऽ ।'' सामने ठाढ़ि मंजू हँसबाक चेष्टा कऽ रहलि छलैक मुदा एक-एक टा शब्द तेना थरथरा गेल रहैक, जेना बजबामे कष्ट भऽ रहल होइ ।

लिफाफकेँ तरहत्थीपर तौलैत प्रकाश पुछैत छैक– ''बेस भरिगर बुझाइत अछि । ब्राह्मण कुमार प्रसन्न भेलाह, अखण्ड सौभाग्यक आशीर्वाद दैत छथि ।''

मुदा एहि बेर मंजू नहि हँसैत छैक । प्रकाशकेँ अपन तरहत्थीपर राखल लिफाफ रहस्यमय लगैत छैक । मंजू ओहिना स्तब्ध ठाढ़ि छैक । प्रकाश लिफाफकेँ हाथमे डोलबैत प्रश्न करैत छैक– ''खोलिकऽ देखि सकैत छी ?''

''देखि लियऽ ।'' मंजूक स्वर ओहिना थरथरायल छैक ।

प्रकाश लिफाफ फाड़ैत अछि । भीतरसँ बहराइत छैक नीक जकाँ तहिआयल बहुत रास पुरान पत्रसभ । सभक ऊपर प्रेम-सम्बोधन ''आमार सोना....आमार.... !'' ओकरा आगू नहि पढ़ल जाइत छैक । चिट्ठीक गड्डीकेँ पलटि दैत छैक । मुदा गड्डी पलटिते एक टा फोटो ऊपर आबि जाइत छैक । प्रकाश नीक जकाँ चिन्हैत छैक ओ फोटो– मंजूक 'उत्तम कुमार' ।

ओ आश्चर्यमे पड़ल मंजूसँ प्रश्न करैत छैक– ''हम ई सभ लऽकऽ की करब ?''

मंजू बड़ अधीरतासँ बाजि उठैत छैक– ''तँ हमहीँ ई सभ राखिकऽ की करू ? फाड़ि देबाक वा जरा देबाक साहस नहि होइत अछि । संग रखबाक क्षमता सेहो नहि अछि । घुरा देब सोचलो ने जाइत अछि । तखन की करू एकर हम ? एहि गुप्त इतिहासक अहीँ टा साक्षी छी; ई अहीँ लग रहय, सैह नीक ।''

प्रकाशकेँ ओहि काल मंजू बड़ असाधारण लगैत छैक– शरतक कोनो नायिका सन । ओ लिफाफ लेने घुरि अबैत अछि । मिनी ओहिना बिछौनपर ओकर प्रतीक्षामे बैसलि छैक । ओ फेर बिछौनपर पसरि जाइत अछि । फेर ओकर छातीपर सवार भऽ जाइत छैक– ''राजकुमारीवला खिस्सा कहू पप्पा !''

आ एहि बेर प्रकाश अनायास कहऽ लगलैक– ओहि दूध सन राजकुमारीकेँ एक दिन एक टा सुन्नर राजकुमार भेटलैक । दुनूक विवाह ठीक भऽ गेलैक, मुदा बीचमे एक टा जादूगर देखि लेलकैक ओहि राजकुमारीकेँ । ओ अपन जादूसँ राजकुमारीकेँ सुग्गा बना पिजरामे बन्द कऽ उड़ि गेलैक । राजकुमार कनैत देखैत रहि गेलै आ राजकुमारी पिजड़ामे बन्द तरफड़ाइत रहलि । राजकुमार आइयो रने-वने कनैत राजकुमारीकेँ ताकि रहल छैक आ राजकुमारी आइयो पिजड़ामे बन्द तरफड़ा रहलि अछि ।

भोजनक उपरान्त प्रकाश चलबाक उपक्रम करैत अछि मुदा बड़की सारि पुष्पा बाट छेकि लैत छैक– ''एतेक रातिकेँ कोना जायब ? बाबूजी मना करैत छथि ।''

पुष्पा अनेरो मुसकिया रहलि छैक । प्रकाश ओहि मुसकीक अर्थ बुझैत

छैक आ एक बेर मूड़ीसँ तरबा धरि पुष्पाकेँ निहारैत छैक । ओकरा ई देखि विस्मय भेलैक जे साभिप्राय मुस्कियबाक वयस भऽ गेल छैक पुष्पाक । ओकर विवाहमे पुष्पा 'फ्राक' पहिरैत छलैक आ कोरामे बैसैत छलैक । समय कोना ससरि जाइत छैक ?

अपना दिस एना टकटकी लगाकऽ तकैत देखि पुष्पा लजा गेलैक– "एना की देखैत छी !"

प्रकाश हँसी करैत कहलकैक– "देखै छी जे अहाँ सन क्यो बाट छेकि कहय जे राति भरि नहि जाउ, भोरे जायब, तँ कोना जा सकब ? मुदा जाय तँ पड़बे करत । डेरापर माय-बाबूजी चिन्ता करताह ।"

–"तकर चिन्ता नहि करू । डेरापर खबरि दऽ देलथिन अछि बाबूजी । आब अहाँ भोरे जायब ।"

प्रकाश बिछौनपर पसरि जाइत अछि । हाथ पकड़ि पुष्पाकेँ लग बैसा लैत छैक– "एक टा गीत सुनाउ ।"

एहि प्रस्तावसँ पुष्पा बड़ उत्साहित भऽ जाइत छैक । गयबाक ओकरा बड़ सऽख छैक । कंठ सेहो बड़ मधुर एवं लोचपूर्ण छैक । खाली समुचित प्रोत्साहन एवं परीक्षणक अभावमे अपेक्षित प्रगति नहि भऽ रहल छैक । प्रकाशे टा समय-समयपर ओकरा उत्साहित करैत रहैत छैक । ओकर प्रिय प्रस्तावपर उत्साहित होइत पुष्पा पुछैत छैक– "कोन सुनब ?"

–"कोनो सुनाउ, अहाँ अपने पसिन्नसँ ।"

–"आइ अपन पसिन्नवला गीत नहि सुनब ?" पुष्पा दुष्टतापूर्ण हँसी हँसैत छैक ।

–"हँ-हँ, ओ तँ सुनयबे करू पहिने ।"

पुष्पाकेँ ओ एक टा शास्त्रीय रागपर आधारित फिल्मी गीत सिखौने छलैक– 'पिया तो से नैना लागे रे !' आ जहिया कहियो मौका लगैत छलैक, ओ गीत अबस्से सुनैत छल । आइयो पुष्पा वैह गीत शुरू करैत छैक– पिया तो से नैना लागे रे !

ओकर स्वर सुनि दोसर कोठलीसँ अंजू आ प्रभा सेहो आबि जाइत छैक । प्रभा सबसँ छोट सारि छैक– मात्र आठ बरखक । आबिकऽ झट कोरामे बैसि जाइत

छैक । अंजू पुष्पासँ डेढ़ बरख छोट छैक, मुदा देखबामे दुनू एकतुरिये बुझाइत छैक । पुष्पा पिण्डश्याम छैक मुदा अंजू धपधप गोर, सभ बहिनसँ बेसी । प्रकाश ओकर नाम रखने छैक– 'मेम साहब ।'

बड़ी काल धरि ई संगीत-कार्यक्रम चलैत छैक । प्रकाश फरमाइश करैत जाइत छैक, आ पुष्पा गबैत छैक । तखने सासु कोठलीमे अबैत छथिन । प्रकाश धड़फड़ाकऽ उठैत अछि आ प्रणाम करैत छनि । ओ प्रकाशकेँ मोने-मोन किछु आशीर्वाद दैत बेटीसभकेँ डँटैत छथिन– "भरि राति संगीते सभ चलतैक ? सुतहो देबहुन कि नहि ?"

प्रकाश झट टोकैत छनि– "एखन कोन राति भेलैक अछि ! 'दादाजी'केँ आबऽ देथुन ।" सासु विरोधकेँ अस्वीकारैत कहैत छथिन– "हुनकर कोन ठीक छनि ? कखन औताह । भोरमे गप्प कऽ लिहथि, एखन आराम करथु । चलै चल ।"

सभ विदा होइत अछि मुदा जाइत काल पुष्पा-अंजूक ठोरपर अर्थपूर्ण हँसी प्रकाश साफ देखैत छैक ।

प्रकाश बिछौनपर एकसर पड़ल प्रतीक्षा करैत अछि मीराक अयबाक । मीरा अबैत छैक आ बत्ती मिझा ओकरा दिस पीठ फेरि निःशब्द पड़ि रहैत छैक । ओहो पड़ल रहैत अछि बड़ी काल । फेर अनायास ओकरे हाथ मीराकेँ छूबऽ-दुलारऽ लगैत छैक । मुदा मीरा जेना बर्फ-सन सर्द भऽ गेलि छैक । ओकरा छुबैत ओकर आङुर ठिठुरैत छैक । मुँह अपन दिस फेरऽ चाहैत छैक तँ स्पष्ट विरोधक अनुभव होइत छैक । जबर्दस्ती अपना दिस झीकैत छैक तँ ततेक तेजीसँ आ तेना आबिकऽ देहसँ लागि जाइत छैक जेना कहि रहल हो– "अहीँ लेल अयलहुँ अछि ने, लियऽ ।"

ओकर सभ टा शक्ति लुप्त भऽ जाइत छैक । देहसँ सटलि मीराकेँ कसिकऽ पकड़बाक सामर्थ्य हेरा जाइत छैक । अशक्त हाथ लोथ जकाँ ओकर सेरायल देहपर पड़ल रहैत छैक । ओहि लोथक बोझ मीराकेँ अखरैत छैक, ओ फेरसँ पलटि बिछौनक दोसर छोरपर चल जाइत छैक । फेर वैह छोट मुदा अजेय दूरी, कटाह, मौन आ असह्य अन्हार । दू प्राणी ओहिमे औनाइत अछि आ जागल रहितो सुतबाक लाथ करैत अछि– राति भरि ।

आफिससँ डेरा पहुँचिते प्रकाश देखैत अछि जे मोटा-चोटा बान्हल राखल

छैक आ सभ क्यो तैयार बैसल छैक । ओ अकचकायल सभक मुँह देखऽ लगैत अछि ।

—''हमरालोकनि आइ गाम जा रहल छी ।'' बाबूजी ओकर अकचकायल दृष्टिक अर्थ बूझि स्थिति स्पष्ट करैत छथिन ।

प्रकाश चिन्तामे डूबि जाइत अछि । ओकरा एहि बातपर ध्यान नहि जाइत छैक जे मीराक एहि डेरासँ गेलाक बाद आइ प्रथम बेर बाबूजी ओकरासँ बाजल छथिन । ओ ईहो नहि कहैत छनि जे अहाँक घाव एखन ठीक नहि भेल अछि, एखन कोना जायब ? ने ई कहि रोकबाक चेष्टा करैत छनि जे उमाक बच्चा एखन बड़ छोट छैक । ओ तँ दोसरे चिन्तामे डूबि जाइत अछि ।

बाबूजी ओकर ई त्रिन्ता बूझि जाइत छथिन । ओकरा ओहि स्थितिसँ उबारैत जकाँ कहैत छथिन– ''तोँ चिन्ता जुनि करह । गाम चिट्ठी लिखने छलिऐक । किरायाक टाका आबि गेल अछि मनिआर्डरसँ ।''

प्रकाश निश्चिन्त होइत अछि । मुदा सभक बीच अपनाकेँ बड़ अपरिचित सन पबैत अछि । सभक लग अकारण उपेक्षित जकाँ किछु काल बैसल रहैत अछि । समय होइत छैक आ सभ महेन्द्रू घाट आबि जाइत अछि । रिक्शासँ उतरिते बाबूजी अपन पाकिटसँ निकालि मोड़ल-माड़ल मैल सन किछु नोट दैत छथिन जकरा ओकर लजायल हाथ मुट्ठीमे लऽ लैत छैक आ ओ टिकटघर दिस दौड़ैत अछि । ओतुक्का लम्बा लाइन देखि ओ हतोत्साहित भऽ जाइत अछि । प्रथम-द्वितीय श्रेणीक खाली खिड़कीकेँ ललचायल तकैत ठाढ़ रहैत अछि । तखने ओहि लम्बा 'क्यू'सँ निकलि ओकरे आफिसक एक टा कर्मचारी लग आबि पुछैत छैक– ''कतऽ जायब सर ? लाउ, हम आनि दैत छी ।''

—''आठ टिकट दरभंगा ।'' एतबा कहि ओ मोचरल मैल नोट ओकर हाथमे राखि दैत छैक । ओ झट खिड़की दिस जाइत अछि । ओकर व्यवहार बड़ शालीन छलैक मुदा तैयो प्रकाशकेँ भ्रम होइत छैक जे मोचड़ल-माचड़ल नोट लैत काल ओ मुसकिया रहल छलैक ।

जहाजपर सभक बीच ओकर स्थिति पूर्ववत असामान्य भऽ जाइत छैक । सभ बड़ औपचारिक सन, जेना कोनो दूरस्थ सम्बन्धीकेँ विदा करऽ आयल हो । सभ गुमसुम रहैत छैक आ ओकरो बजबा लेल किछु नहि फुराइत छैक । जहाज खुजबाक घंटी होइते ओ माय-बापक पयर छूबि जल्दीसँ नीचाँ उतरि जाइत अछि ।

जहाज चल गेलाक बादो ओ बड़ी काल ओहिना ठाढ़ आँखिसँ अदृश्य होइत जहाज आ सामने पसरल गंगाक हिलकोर देखैत रहैत अछि आ ओकरा बेर-बेर मोन पड़ैत छैक पयर छूबाकाल बाबूजीक विदा दैत आँखिमे टूटल-टूटल स्वप्नक हिलकोर ।

हँ, एक टा स्वप्न हुनको टूटल छलनि– समर्थ बेटाक कान्हपर सभ टा बोझ दऽ बुढ़ारी शान्तिसँ बितयबाक स्वप्न । आ, समर्थ ओ भऽ गेल अछि से सभ जनैत छैक । नीक कमाइत अछि, नीक नोकरी करैत अछि ।

ओकर मोनमे किछु जोरसँ थरथरा उठैत छैक जेना एखने एक टा बड़का जहाज चल गेल हो आ पानि थरथरा रहल हो । ओ ओही ठाम जेटीपर हताश बैसि जाइत अछि आ दूर धरि पसरल गंगाक छातीपर छिड़िआयल अन्हारकेँ देखैत रहैत अछि । मुदा लगैत छैक जेना जाहि जेटीपर ओ बैसल अछि से धसल जाइत होइ । ओ ऊठिकऽ पड़ाइत अछि आ बेर-बेर पाछू घूरिकऽ तकैत अछि, जेना क्यो खेहारने अबैत हो ।

आफिससँ निकलबाक पहिने प्रकाश निर्णय कऽ चुकल छल प्रमोदक डेरा दिस जयबाक । पाँच बजिते आफिससँ बाहर निकलल आ एक टा रिक्शापर बैसि कालोनी दिस विदा भेल ।

रिक्शा जखन किछु दूर आबि गेलैक तँ ध्यान गेलैक जे पहिने टेलीफोनसँ पूछि लेब ठीक रहितैक । नहि जानि, डेरापर होयतैक कि नहि ? व्यस्त लोक छैक, साँझ भेने डेरा घुरिए आयब आवश्यक नहि छैक ओकरा लेल । डेरापर नहि होयतैक तँ हरानी व्यर्थ । मुदा, से समय आब बीति चुकल छैक । विदा भऽ गेल तँ आब घुरत किन्नहु नहि । जे होयतैक, देखल जयतैक । बूझत जे ओतेक दूर ओहिना टहलि अयलहुँ । आ, भऽ सकैत छैक जे प्रमोद नहि तँ कमसँ कम हेमा भौजीसँ भेँट भऽ जाइ । यद्यपि व्यस्त ओहो कम नहि रहैत छथि, मुदा भऽ सकैत छैक जे आइ घुरि आयलि होथि । बहुत दिन भऽ गेलैक भेँट भेना हुनकासभसँ । प्रकाशकेँ ई सोचि बड़ आश्चर्य होइत छैक जे आइ प्रमोदसँ भेँट भेना लगभग एक मास भऽ गेलैक । एहि बीच ततेक व्यस्त रहल जे प्रमोदोक ध्यान नहि अयलैक, जकरासँ कमसँ कम एक बेर भेँट होयब एहि दस वर्षक नियम रहलैक अछि ।

मुदा ओ व्यस्त छल तँ प्रमोद किएक ने भेँट कयलकैक ? कमसँ कम

टेलीफोनो तँ करितैक ? आइ फेर एक टा सन्देहक साप ओकर मोनमे अपन फेँच काढ़िकऽ ठाढ़ होइत छैक, ठीक ओहि राति जकाँ जहिया उमाकेँ अस्पताल लऽ गेल छलैक । मुदा ओहि दिन ओहि सन्देहक सापक फेँच नीक जकाँ थूरि देने छलैक प्रकाश । मुदा ओकर थकुचलहा फेँच फेर सुगबुगा रहल छैक आ प्रकाशकेँ ओहि दिनुका सभ टा घटना आइ फेर मोन पड़ि रहल छैक ।

रातिक दू बजे माय ओकरा उठौने छलैक– ''उठह । अस्पताल लऽ चलबाक बेर भऽ गेलह ।''

माय हड़बड़ायलि छलैक । मुदा प्रकाश निश्चिन्त छल । प्रमोद कहने छलैक जे बेर-कुबेर जखन काज होउ, टेलीफोन कऽ दिहें, हम आबि जयबौक ।

–''तोँ चिन्ता नहि कर माय !'' प्रकाश मायकेँ आश्वस्त करैत कहलकैक– ''प्रमोदकेँ टेलीफोन करैत छिऐक । सभ टा व्यवस्था कऽ देतौक ।''

बिछौनसँ ऊठि, बगलक किरायादारकेँ उठा, हुनकासँ असमयमे कष्ट देबाक हेतु क्षमा माङि, प्रकाश प्रमोदकेँ टेलीफोन कयलकैक । बड़ी काल 'रिंग' कयलाक बाद ओम्हरसँ ओंघायल-खौंझायल स्वर अयलैक– 'हलो' ।

–''हम प्रकाश बाजि रहल छी । जल्दी गाड़ी लऽकऽ आबि जो । उमाकेँ अस्पताल लऽ जयबाक अछि ।''

–''एम्बुलेन्सकेँ टेलीफोन कऽ बजा ले । मौसीवला गाड़ी सर्विसिंगमे गेल छैक । हम एम्हरेसँ अस्पताल आबि जयबौक ।'' प्रमोद ओम्हरसँ बजलैक ।

प्रमोदक स्वर सुनि ओ निश्चिन्त भऽ गेल छल । मुदा ओकर उत्तर सुनि चिन्तामे पड़ि गेल । किछु काल 'रिसीवर' राखि गुमसुम ठाढ़ रहल । फेर 'मेडिकल इमरजेन्सी'मे 'एम्बुलेंस'क हेतु टेलीफोन कऽ डेराक पता कहि देलकैक आ एम्बुलेंसक प्रतीक्षा करऽ लागल सड़कपर आबिकऽ । एम्बुलेंस जखन आबि गेलैक तँ प्रकाश दौड़िकऽ माय लग पहुँचल– ''तैयार भऽ जो माय ! एम्बुलेंस आबि गेल छौक ।''

''एम्बुलेंस ?'' माय चौंकलैक– ''प्रमोदसँ गप्प नहि भेलौक ?''

–''ओ ओम्हरेसँ अस्पताल पहुँचि जयतौक । ओकर मौसीवला मोटर खराब छैक । सर्विसिंगमे गेल छैक, तेँ एम्हर नहि आबि सकलौक ।'' प्रकाश सफाइ देलकैक ।

–''मुदा आर गाड़ी सभ की भेलैक ? ओकरा तँ तीन टा मोटर छैक ।'' मायकेँ जेना प्रकाशक बातपर अविश्वास भेलैक ।

–''होयतैक किछु गड़बड़ी । जाय दही । जल्दी चल, एम्बुलेंस ठाढ़ छौक ।''

मायक बात ओ टारि देलकैक, मुदा शंकाक साप एक बेर ओकरो मोनमे फनफना उठलैक । उमाकेँ स्ट्रेचरपर उठा एम्बुलेंसमे सुता देलकैक, मायो आवश्यक सामान लऽ बैसि गेलैक तँ प्रकाश सेहो आबिकऽ बैसि गेल आ एम्बुलेंस बिदा भऽ गेलैक ।

अस्पतालक लेबर-रूमक बाहरी कक्षमे एकदम सन्नाटा छलैक । ने डाक्टर-डाक्टरनी, ने कोनो नर्स । दरबान धरि नदारद । कोनो उपाय नहि देखि प्रकाश अपने धड़धड़ाइत लेबर-रूमक बाहरी कक्ष होइत भीतर घोसिया गेल । भितरका कोठलीमे दू टा नर्स सूतलि छलैक– एक टा टेबुलपर आ दोसर दू टा कुर्सी जोड़िकऽ । ओकर बगलवला कोठलीमे प्रायः कोनो आसन्नप्रसवा किकिया रहलि छलैक !

प्रकाश दुनू नर्सक लग पहुँचि जोरसँ पयर पटकलकैक । मुदा कोनो असरि नहि भेलैक । लग जा 'सिस्टर' कहि सोर पाड़लकैक । तैयो कोनो असरि नहि । अन्तमे कुर्सीपर सूतलि नर्सक कुर्सी पकड़ि हिला देलकैक । ओ एकदमसँ चेहाकऽ ऊठि गेलैक– ''क्या है ? कोन है तुम ?''

प्रकाश धुरिआयले पयरे बाहर दिस घुरैत कहलकैक– ''साथ आइये, मरीज है ।''

उमा 'एडमिट' भऽ गेलैक । मुदा कोनो डाक्टर-डाक्टरनीकेँ उपस्थित नहि देखि मायक मोन हताश भऽ गेलैक । उमाक पहिल बच्चा नष्ट भऽ गेल छलैक, तेँ ओ डेरायलि छलि, नहि तँ एहिसँ बेसी सुविधा तँ गाममे होइतैक । प्रकाशो प्रमोदक भरोसे लऽ अनने छलैक । मुदा एहि कुबेरमे ओहो अथाहमे पड़ल छल आ प्रमोद एखन धरि नहि आयल छलैक ।

प्रकाश भरि राति बाहर बरण्डामे टहलैत रहल । एक-दू बेर बाहर फुटपाथपरसँ चाहो पीबि आयल, जनाना अस्पतालक सामने फुटपाथपर भरि राति चाहक दोकान खुजल रहैत छैक । मुदा माय अपस्याँत भीतर-बाहर दौड़ैत रहलैक– एको मिनट चैनसँ नहि बैसलैक । आ भोरे छौ बजे उमा जखन एकटा बेटीकेँ जन्म देलकैक, ओकरा लगमे खाली माये टा उपस्थित रहैक, जेना अस्पतालमे नहि, अपन डेरेमे प्रसव भेल होइ ! ने डाक्टर, ने नर्स । खाली अस्पताली कोठली आ अस्पताली गंध । मुदा साढ़े आठ बजैत-बजैत प्रमोद पहुँचि गेलैक । अपन वार्ड जाइत काल

प्रकाशोसँ भेँट करैत गेलैक । उमाक ध्यान रखबा लेल डाक्टर आ नर्सकेँ कहि गेलैक । एकदम बी.आइ.पी. ट्रीटमेन्ट शुरू । मुदा मायक मोनसँ रातुक दृश्य नहि गेलैक आ एहि अतिरिक्त अनावश्यक सुविधासँ ओ प्रसन्न नहि भऽ सकलैक ।

प्रकाश नहि पुछलकैक, मुदा प्रमोद स्वयं कहऽ लगलैक– ''नहि जानि केहन निन्न जोर मारलक राति । तोरासँ गप्प कऽ सोचलहुँ जे तुरत विदा होयब, मुदा बैसले-बैसल फेर टगि गेलहुँ आ तेहन टगलहुँ जे भोर आठ बजे निन्न खुजल । कोनो असुविधा तँ नहि भेलौक ?''

प्रकाश मूड़ी डोला देलकैक आ ओ आश्वस्त होइत बाजल– ''रच्छ रहल ! भोरे उठिते पहिल ध्यान एम्हरे गेल जे नहि जानि राति कतेक असुविधा भेल होयतैक ? अपनापर क्रोध भेल जे घरमे डाक्टर अछैत एहन फेरीमे पड़ि गेलेँ तोँ । मुदा आब क्रोध कयलासँ लाभे की ?''

प्रमोदक आकृतिपर स्पष्ट पश्चात्तापक रेखा देखि प्रकाशक मोनक कोनो कोनमे कसमसाइत सन्देह एकदम थकुचा भऽ शान्त भऽ गेलैक ।

मुदा आइ फेर रिक्शापर जाइत काल ओ मुर्दा संदेह जीवित भऽ रहल छलैक– ओकर बाद फेर कहियो बच्चा-जच्चाक हाल पूछऽ नहि अयलैक प्रमोद । आब तँ उमा चलो गेलैक ।

इच्छा भेलैक जे रिक्शा घुरा लेअय । मुदा अपन एहि इच्छापर अपने क्रोध भेलैक आ मोनेमोन अपन भर्त्सना कयलक जे अपन एहन अभिन्न मित्रक प्रति एहि प्रकारेँ अविश्वासकेँ जन्म दऽ रहल छल । निश्चय कोनो व्यस्तताक कारण ओ नहि आबि सकल होयतैक ।

रिक्शा कालोनीमे प्रवेश कऽ रहल छलैक । चारू कात जगमग प्रकाश । पैघ-पैघ सजल-सजाओल मकान आ सुन्दर-सज्जित फुलबाड़ी । ओकरा अनायास ध्यान गेलैक जे पवनक डेरा लगसँ जा रहल छल । सामने ओकर बापक नेमप्लेट लागल छलैक । बंगलाक लानमे कुर्सीसभ राखल छलैक, मुदा सभ टा खाली । प्रकाशक इच्छा भेलैक जे उतरिकऽ देखय जे पवन छैक वा नहि । मुदा अपन इच्छा ओकरा अपने अर्थहीन लगलैक । एक्के शहरमे पछिला तीन बरखसँ रहियोकऽ जकर सम्बन्धमे ओकरा कोनो आनेक मुँहसँ कहियो किछु सुनबामे भेटि जाइत छलैक, तकरा मित्र मानि जिज्ञासा करबाक की अर्थ भऽ सकैत छैक ? रिक्शा जखन ओहि बंगलाक सामनेसँ आगू बढ़ि गेलैक तँ ओकरा मोन पड़लैक जे दस वर्ष पूर्व ई मोहल्ला साँझोकेँ डेराओन लगैत छलैक । सड़कपर दूर-दूर पर बिजलीक

रोशनी । दूर-दूर पर दू-चारि टा मकान बनल । किछु निर्माणक क्रममे । पवनक ई बंगला सेहो बनियेँ रहल छलैक । बाहरवला कोठली तैयार भऽ गेल रहैक । पवन प्रस्ताव कयलकैक– ''चल, ओहीमे चलिकऽ रहब । परीक्षाक तैयारी लेल नीक रहत । प्रकाशोकेँ प्रस्ताव पसिन्न पड़लैक । आइ.एस-सी.क परीक्षा निकट आबि गेल रहैक । दुनू ओहीमे रहऽ लागल । नोकर खेनाइ पुरना डेरासँ लऽ अनैक । एकाध बेर माँजी (पवनक माय) आबिकऽ हाल पूछि जाथिन । मधुर आ नीक-नीक अचार दऽ जाथिन ।

आ, परीक्षाक तैयारी लेल दुनू गोटे चौबीसो घंटा ओहि डेरामे रहय । पवन परीक्षाक तैयारीक तँ खाली बहाना कयने रहैक । असलमे ओकरा अपन अगनित प्रेमप्रसंगक एक टा श्रोता चाहैत छलैक । भोर-साँझ किस्सा तोता-मैना शुरू । ने आदि, ने अन्त । कोर्सक किताब हकन्न कनैत । आगाँमे दोसर किताब खूजल– कखनो कमलेश, कखनो प्रीति बनर्जी, कखनो शीला सिंह आ यदि सभ खतम तँ सोफिया लारेन, सुचित्रा सेन आ मधुबाला । पवनक प्रेमिकाक लिस्टमे देश-विदेशक पैघ-पैघ 'हस्ती' सम्मिलित छलैक । सोफिया लारेनसँ लऽकऽ दरबानक कनियाँ धरि, जे पछिलुका कोठलीमे अपन पतिक संग रहैत छलि आ जकरा देखबा लेल पवन अनेरो दरबानकेँ बाहर पठा देल करैत छलैक ।

मुदा आइ से सभ किछु नहि छैक । एक टा सुन्दर कालोनी जगमगा रहल छैक । नहि जानि कतेक ब्लैकमनीक जगमगाहटि छैक एकरामे । शहरक गण्यमान्य व्यक्तिक आवास, विशिष्टताक सूचक । आ एहि कालोनीमे आब रहैत छैक पवन कुमार मिश्र, सेल्स मैनेजर, अपन विजातीय पत्नीक संग । ओकरासँ भेंट कऽ हालचाल पुछबाक इच्छाकेँ अर्थहीन कहब अधिक उपयुक्त होयतैक वा मूर्खतापूर्ण, से प्रकाश नहि सोचि सकल ।

मुदा कालोनीक क्लब लग आबिकऽ अनायास पवनसँ भेँट भऽ गेलैक । गेटपर ठाढ़ छलैक । देखा-देखी भऽ गेलैक तँ उतरब आवश्यक भऽ गेलैक । उतरिकऽ हाथ मिलौलक दुनू ।

–की हाल-चाल ? सुनैत छी, बड़का अफसर भऽ गेल छेँ ।

पवन हाथ झकझोरैत कहलकैक ।

–''सुनबामे तँ हमरो आयल छल जे दूनू हाथेँ कमा रहल छेँ आ रखबामे जगहक अभाव छौक तेँ क्लबमे जुआ खेलाकऽ एहि चिन्तासँ निश्चिन्त भऽ जाइत छेँ ।'' पवन हँसैत छैक ।

—''कमाइत छेँ तँ नीक जकाँ रह । ई रिक्शा-फिक्शा छोड़ । एक टा
गाड़ी ले । क्लब एटेण्ड कर । आब बाधा कोन छौक ?''

—''बाधा तँ कोनो ने आ बड़का टा बाधा एतबे जे एखन धरि अपन
लोकक हाल अनकासँ सुनबाक अभ्यास नहि भेल अछि । एतबा अभ्यास लागि जाय
तँ फेर पैघ लोक बनबामे कतेक देरी ?''

पवन बात नहि बूझि ओकर मुँह ताकऽ लगैत छैक आ फेर मूर्ख जकाँ
ठठाकऽ हँसैत छैक– ''तोँ रहि गेलेँ फिलासफरक फिलासफरे । आबो धरतीपर
आ । आ, भीतर आ, दू हाथ फ्लश खेला ले ।''

—''नहि भाइ, हमरा माफ कर । काज अछि, एखन चलैत छी ।''
—प्रकाश अपन रिक्शा आगाँ बढ़बौलक ।

प्रमोदक दुमंजिला बंगलाक बड़का लानमे बहुत रास कुर्सी राखल छलैक
आ एकसरि हेमा भौजी ओतऽ बैसलि छलीह । प्रकाशकेँ अबैत देखि ठाढ़ि भऽ
गेलीह– ''धन्यभाग ! आइ सूर्य पश्चिममे कोना ?''

हुनकर उलहन प्रकाश हँसिकऽ स्वीकार कयलक आ पुछलकनि– ''प्रमोद
नहि अछि ?''

हेमा भौजी कृत्रिम रोषसँ बाजि उठलीह– ''अहाँक यैह पक्षपात तँ नहि
सोहाइत अछि हमरा । अबैत देरी आफन तोड़ऽ लगलहुँ– प्रमोद नहि अछि ! हम
छी, एतबे यथेष्ट नहि ?''

प्रकाश हुनकर ई आरोप स्वीकारैत बाजल– ''यथेष्ट अछि, पूर्णतया यथेष्ट
अछि । मात्र जिज्ञासा लेल पुछल जे गृहपति छथि वा नहि । गृहस्वामिनीक उपेक्षा करब
अभीष्ट नहि छल । ई तँ अहाँक मोनक पूर्वाग्रह अछि जे हम सभ बातमे प्रमोदक
पक्ष लैत छिऐक । अहाँ अपन पक्ष लेबाक अवसर दियऽ, ओहूमे एहने तत्परता रहत ।''

—''मौका देल नहि जाइत छैक, छीनल जाइत छैक । इच्छा रहलासँ ई
तत्परता अहाँ कखनो देखा सकैत छी । मुदा से अहाँ किएक करब ? आइ धरि नहि
कयलहुँ अछि, आगुओ नहि करब, हम जनैत छी ।''

—''ई तँ सरासरि अन्याय थिक अहाँक हमरापर ।''

—''नहि, सत्य थिक । अहाँ अपने निर्णय करू । हमर उपस्थिति अहाँ
लेल कहियो कोनो महत्त्व नहि रखलक अछि । एक्के कालेज युनिभरसिटीमे छौ
बरख संगे रहलहुँ । कतेको बेर आमने-सामने गुजरलहुँ, परिचयक सूक्ष्म रेखाधरि
नहि उभरल कहियो अहाँक आकृतिपर । जेना कतेक अपरिचित होइ हम ! यदि
परुकाँ सामाजिक मान्यताक संग साधिकार एहि घरमे नहि आयलि रहितहुँ तँ प्रायः
कहियो गप्पो करबाक सुयोग नहि भेटैत अहाँसँ । युनिभरसिटीक शिक्षा समाप्त
भेलाक बादो विवाहमे तीन बरख अनावश्यक विलम्ब भेल, तकरो अहाँ अपन तर्कसँ
उचित प्रमाणित कऽ दैत छी । एकरा हम पक्षपात नहि तँ आर की कहू ?'' हेमा
भौजी एक्के साँसमे बाजि गेलीह ।

—''नहि भौजी ! अहाँक कथन एकतरफा अछि । ई सत्य जे नौ वर्ष धरि
अहाँसँ परिचित रहियोकऽ परिचयक कोनो तेहन प्रमाण हम नहि दऽ सकलहुँ । मुदा
विश्वास करू जे अपरिचित अहाँ कहियो ने छलहुँ । जहिया पहिल बेर छौंड़ीसभक
झुण्डमे अहाँकेँ देखा प्रमोद कहलक– 'देखि ले अपन भौजीकेँ' तहियेसँ अहाँ
नितान्त अपन, नितान्त परिचित लगैत रहलहुँ अछि । ई सत्य जे हमर परिचय कहियो
मुखर नहि भेल, मुदा ओहिमे अनुभूतिक प्रमुखता सभ दिन छलैक । ईहो सत्य जे
अहाँकेँ 'मिस हेमा त्रिवेदी' कऽ कहियो नहि चीन्हि सकलहुँ अछि, शुरूहेसँ अहाँ
'मिसेज हेमा चतुर्वेदी' लगैत रहलहुँ अछि । अहाँकेँ देखिते एकटा परिचित आ
आत्मीय चेहरा अहाँक आकृतिक संग जुटि जाइत छल आ फेर सभ टा नितान्त
अपन, नितान्त आत्मीय लागऽ लगैत छल । आइयो लगैत अछि । प्रमोदक बातकेँ
उचित मानैत छिऐक तँ यैह बूझि जे अहूँक उचित ओहीमे सम्मिलित अछि ।
अहाँ-दुनूकेँ फराक-फराक एकाइ देखबाक हमरा कहियो अभ्यास नहि रहल
अछि । यदि ई हमर पक्षपात वा अपराध थिक तँ हम स्वीकार करैत छी ।''
—प्रकाशो पैघ सन भाषण दऽ गेल ।

ओकर सफाइपर हँसैत हेमा भौजी कहलथिन– ''पक्षपात तँ अछिए अहाँक ।
प्रेम करबाक ई अर्थ नहि जे हमर वैयक्तिकता एकदम नष्ट भऽ जाय । प्रेमिकाक
अतिरिक्त हमर कोनो अस्तित्वे नहि रहि जाय । आब पत्नीत्व प्राप्त भेल अछि तकर
ई अर्थ तँ नहि जे हमर एकाइ नष्ट भऽ गेल !''

प्रकाशकेँ एहि हँसीमे गम्भीरता बुझयलैक । टोहियबैत पुछलकनि– ''यैह
पत्नीत्व तँ अहाँक चिर-आकांक्षा छल, जे दस बरखक कठिन एकाग्रता आ परीक्षाक
बाद प्राप्त भेल अछि । तखन एहिसँ एतेक 'एलरजी' किएक ?''

—"नहि, एलरजी नहि । मात्र एक टा रिक्तता । काल्हि धरि लगैत छल जे भीतरमे बहुत-किछु अछि, भरल छी, मुदा आइ एकाएक एकदम खाली भऽ गेलि छी । मनचाहल घर-वर भेटि गेल अछि, पहिनेसँ बेसी मानितो छथि, सभ तरहक सुख-सुविधा प्राप्त अछि, तैयो जेना भीतर कोनो रिक्तता भरल जा रहल अछि, जेना कहबा-सुनबा लेल किछु रहिए नहि गेल हो । नोकरी आ घरक काजमे हरदम व्यस्त रहैत छी, मुदा जहाँ फुरसतिक कोनो क्षण भेटैत अछि, रिक्तताक अनुभूतिसँ भरि जाइत छी । नहि जानि किएक ? आइए अहाँक अयबाक पूर्व एक टा विचित्र खालीपन अनुभव भऽ रहल छल । अहाँ आबि गेलहुँ तँ जेना ओहि अनुभूतिसँ निष्कृति भेटल ।"

हेमा भौजी जेना सभटा उगलि देबऽ चाहैत छलीह ।

प्रकाश कोनो आश्वासन देबऽ चाहैत छलनि तावत प्रमोदक मोटर गेटमे पैसलैक । गाड़ी रोकिते उतरिकऽ प्रकाश दिस लपकल– "कखन अयलें ?"

—"बड़ी काल भेल ! बैसल-बैसल भौजीक उलहन सुनैत छलहुँ ।"

प्रमोद एक बेर पत्नी दिस ताकिकऽ बाजल– "उलहन तँ ठीके देलथुन अछि । एक मासपर ई बाट धयने छें । मुदा खाली उलहने टा देलथुन अछि की किछु चाहो-पानि...

हेमा भौजी चिहुँकि कऽ उठलीह– "जाह, से तँ ध्याने ने रहल । अहाँलोकनि बैसू, हम अबैत छी ।"

हेमा भौजी लपकल भीतर चल गेलीह । प्रमोद प्रकाशक बगलमे एक टा कुर्सीपर बैसि गेल– "आर की हाल छौक ? बाबूजीक मोन केहन छनि ? उमाक बच्चा कोना छैक ?"

ई चर्चा नहि जानि किएक प्रकाशकेँ मात्र औपचारिक लगलैक । तैयो ओ सहज ढंगसँ उत्तर देलकैक– "ओ लोकनि तँ चल जाइत गेलाह गाम ।"

प्रमोद एकदम अफसोच करऽ लगलैक– "की सोचने होयताह हमरा दऽ ? ओहि दिनुका बाद एको दिन हालो पूछऽ नहि जा सकलियनि । ततेक ने फँसल रही एहि बीच जे दम लेबाक फुरसति नहि छल । आ तोहर डेरो तेहन ने कुडोरिमे छौक जे बिनु नियारने जयबो कठिन । तोँ डेरा किएक ने बदलि लैत छैँ ?"

ओकर एहि अप्रत्याशित प्रस्तावपर प्रकाशकेँ आश्चर्य भेलैक । टारबाक मतलबसँ कहलैक– "एतेक जल्दी डेरा कतऽ भेटत ?"

—"डेरा तँ ताकिकऽ राखल छौक । हमरसभवला पुरना डेरा । बाबूजी उपरका 'पोरशन' ककरो देबऽ चाहैत छथिन । नीचाँ ड्राइंगरूम एखन ओहिना रहतैक । तोहूँ उपयोग करिहेँ आ कखनो-कखनो हमहूँ सभ आबि जायब । टेलीफोनो रहतौक । किराया लेल चिन्ता नहि कर, जे तोहर डेराक लगैत छौक, ततबे दऽ दिहुन बाबूजीकेँ । तोरासँ कियाक कोन गप्प !"

ई सुविधाजनक प्रस्ताव प्रकाशोकेँ पसिन्न पड़लैक । झट सहमति दऽ देलकैक– "बेस, तोँ कहैत छेँ तँ एहि मासक बाद आबि जायब ।"

तावत नोकर संग हेमा भौजी बाहर अयलीह । नोकर टेबुलपर 'ट्रे' राखि देलकैक आ हेमा भौजी अपनेसँ चाह बना एक-एक प्याला प्रकाश आ प्रमोदकेँ दऽ अपन कप हाथमे लऽ बैसि गेलीह । एक टा 'प्लेट'मे किछु नमकीन बिस्कुट छलैक ।

प्रकाश बड़ी राति धरि ओहिना बैसल गप्प करैत रहल । ततेक बेर धरि जे रिक्शा-बस भेटब कठिन भऽ गेलैक । गाड़ी तँ छलैक मुदा ड्राइवर नहि । प्रमोद स्वयं ई कष्ट करैक, से प्रस्ताव हेमा भौजी कयलथिन, मुदा प्रकाश ओकरा अस्वीकृत कऽ देलकनि आ गेटसँ बाहर निकलि पयरे डेरा दिस विदा भऽ गेल । एगारहसँ ऊपर भऽ गेल छलैक आ प्रकाशक आगाँमे कालोनीसँ अपन डेराक सात मीलक दूरी नाचि रहल छलैक ।

मीरा एखन धरि नहि घुरलि छैक । ओहि दिनुका बाद फेर प्रकाश आनऽ नहि गेलैक । सोचलक– क्रोध शान्त भेलापर अपने पाँच-सात दिनमे चल औतैक । मुदा आब मास पूरऽ जा रहल छैक । काजक दिन तँ कहुना कटि जाइत छैक । आफिसक बादो जतऽ-ततऽ बौआ अबैत अछि । राति बितलापर डेरा घुरैत अछि । नोकर खेनाइ झाँपि टेबुलपर राखि देने रहैत छैक । कहियो खाकऽ, कहियो बिनु खयने बिछौनपर पसरि जाइत अछि आ निन्नमे डेराक शान्त एकसरपन, कटाह शून्य ओकरा ततेक नहि तंग करैत छैक । मुदा जहिया चेष्टा कयलोपर निन्न नहि होइत छैक, मिनी-गुड्डूक अभावमे सौंसे डेरा डेराओन लागऽ लगैत छैक आ इच्छा होइत छैक जे कतहु भागि पड़ाय । कतेको बेर सोचलक जे एक बेर फेर जाय आ जोर दऽकऽ मना आनय मीराकेँ । मुदा जोर दऽकऽ अनबाक नहि जानि किएक इच्छा नहि होइत छैक । ओकरा मीरापर क्रोध नहि होइत छैक, खाली दया होइत छैक ।

एक टा निरर्थक जिद्दक हेतु कष्ट उठा रहलि अछि । एक टा जिद्द जे 'ओकर घर' ओकर नहि छैक । ओकरा 'अपन घर' चाहिऐक जाहिमे मिनी-गुड्डू आ ओकर अतिरिक्त दोसर नहि हो । आनक संग तँ ओ मात्र सामाजिकता निमाहैत अछि । ओकर स्वप्नमे एक टा छोटछीन बंगला, ड्राइंग रूम आ मोटर आ छोट सन परिवार छैक आ वास्तविकतामे छैक– विशाल परिवार, आठ भाइ-बहीन, वृद्ध माय-बाप जकरासभसँ पृथक होयबाक आ पृथक सुख भोगबाक प्रकाशकेँ कोनो आकांक्षा नहि छैक । एक बेर मीरा बूझि जाइक जे जेहन सुख एहि वास्तविकतामे छैक, ओकर स्वप्नमे नहि, तँ फेर ओकर सभ टा जिद्द टूटि जयतैक ।

मुदा एखन धरि, ओकर जिद्द टुटबाक प्रतीक्षामे प्रकाश स्वयं टूटल जा रहल अछि । माय-बाबूजी सभकेँ गेना पन्द्रह दिनसँ ऊपर भऽ गेलनि, एक्को टा पत्र धरि नहि आयल छैक । मीरा एक माससँ मिनी-गुड्डूकेँ लऽ नैहरक डेरापर बैसलि छैक । आ प्रकाश एक टा गुमसल, औनाइत एकसरपनीमे दिन काटि रहल अछि ।

आइयो छुट्टीक दिन छैक– रवि ! ई छुट्टीक दिन तँ जेना आर जनमारा भऽ जाइत छैक । पहाड़ सन दिन आ समुद्र सन राति जकर असीम विस्तारमे प्रकाश बौआइत-बौआइत थाकि जाइत अछि । भोरसँ मात्र दू घंटा बितलैक अछि मुदा लगैत छैक जेना कतेक समय बीति गेल हो ! भोरे अखबार उठौलक आ उनटा-पुनटा गेल । वैह सभदिना समाचार । एसेम्बलीमे थुक्कम-फज्झति, पार्लियामेन्टमे जूताबाजी । राजनीतिक उद्देश्य लेल पचीस-पचास निरपराध आ दस पाँच अनावश्यक खून । हड़ताल ओ घेराव । टीयर गैस आ फायरिंग । दल-बदल अबोध जनताक बलिदान । अन्तरराष्ट्रिय प्रतियोगितामे पराजय आ पराजयक चोट आ मंत्रिमंडलक पतन । राज्यमन्त्रिमण्डल सभक अस्थिरता आ केन्द्रक बिसरबा लेल दस तरहक 'दलील' । सत्ता लेल भाव-तोल । मोन औना जाइत छैक । अखबार पढ़बाक इच्छे नहि होइत छैक आइ-काल्हि । तैयो सभ टा पढ़ि जाइत अछि ।

कालेजिया विद्यार्थी रहय तँ अखबार हाथमे अयलापर अनायास सभसँ पहिने छठम पृष्ठ उलटि जाइ– स्पोर्ट्स कालम । युनिभरसिटी छोड़लक तँ सभसँ पहिने दोसर पृष्ठ उलटि जाइक– वान्टेड कालम । कम्पीटिशन सभमे बैसऽ लागल तँ पहिल पृष्ठसँ अन्तिम पृष्ठ धरि घोखऽ लागल । नहि जानि की पूछि बैसत । मुदा आब तँ अखबार हाथमे लऽ उलटा-पुलटाकऽ हेडलाइन्स देखबाक अतिरिक्त आर किछु पढ़बाक इच्छे नहि होइत छैक । कोनो-कोनो अखबारक सम्पादकीय नीक रहैत छैक, मोनसँ पढ़ैत अछि । नहि तँ ओहो नहि ।

मुदा आइ समय कटबा लेल पहिल पृष्ठसँ अन्तिम पृष्ठ धरि अनेक आवृति कऽ गेल आ तैयो समय देखलक तँ मात्र नौ बाजि रहल छलैक । नहि जानि, कोन पाथर बान्हल छलैक समयक गतिमे ।

समय कटबा लेल फेर एक कप चाह पीबाक इच्छा भेलैक । नोकरकेँ हाक देलकैक– “कृष्णा !” कृष्णा दौड़ल अयलैक । “एक कप चाह बना !” आर्डर भेटिते कृष्णा गायब भऽ गेलैक । प्रकाश कोठलीसँ बहार भऽ बरण्डामे आबि गेल । कुर्सी धयल छलैक, ओहिपर पयर पसारि बैसि गेल आ हाथक अखबारकेँ फेरसँ उनटाबऽ-पुनटाबऽ लागल ।

किछु आहटि पाबि दृष्टि उठौलक तँ सामने सीढ़ीपर सत्येन ठाढ़ छलैक । ओकर पाछूमे मधुकर आ निखिल । अखबार एक कात रखैत ओ स्वागत कयलकैक– “आउ-आउ !” आ कृष्णाकेँ हाक देलकैक– “तीन टा कुर्सी आर बहार कर कृष्णा !” कृष्णा झट कुर्सी राखि गेलैक आ सभ क्यो बैसैत गेलाह । प्रकाश कृष्णाकेँ पुनः आदेश देलकैक– “चाह चारि कप ला !” कृष्णा आदेशपालनक हेतु चल गेलैक, तखन प्रकाश आगन्तुकसभ दिस घूमल– “की खबरि ? बहुत दिनपर ऊपर होइत गेलहुँ अछि– त्रिमूर्त्ति । कोनो नव आयोजन ?” सत्येन जेना प्रश्नक प्रतीक्षेमे छलाह, झट सोत्साह बाजऽ लगलाह– “आयोजन नहि, एक टा अभियान कहू, एक टा आन्दोलन कहू जे बड़ आवश्यक भऽ गेल अछि । अपन मातृभाषाक रक्षाक हेतु, मैथिलीकेँ बचयबाक हेतु ई आन्दोलन बड़ आवश्यक भऽ गेल अछि ।”

प्रकाशक आकृतिपर कोनो तेहन उत्साह नहि देखि मधुकर बीचमे कुदलाह– “अहाँ किछु मास पहिने दिनमान नहि देखलिऐक ? ओहिमे मैथिलीक प्रति केहन विष-वमन कयल गेल ? की मैथिलीभाषीकेँ जुटिकऽ एकर विरोध नहि करबाक चाहिऐक ? की हमरालोकनि एहिना सूतल रहब ?”

प्रकाशकेँ तैयो उत्तेजित नहि होइत देखि निखिलेश छड़पलाह– “ओ हालेमे जे नवमन्त्रिमण्डलक राज्यमन्त्री मैथिलीकेँ बोली कहि ओकर अपमान कयलक, तकर विरोध की नहि होयबाक चाही ? कोना ओहि प्रहारकेँ मैथिलीभाषी बिसरि जयताह ? जकरा साहित्य अकादमी मान्यता देने छैक, जकरा संविधानक अष्टम सूचीमे मान्यता देअयबाक हेतु हम मैथिलीभाषी प्रयत्नशील छी, जकर बजनिहार एतेक लोक छथि, ओहि महान भाषाक प्रति टुटपुजिया नेतासभक ई अन्याय चुपचाप कोना सह्य करब हमरालोकनि ?”

प्रकाश तैयो ओहिना बैसल रहल, कोनो प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया नहि भेलैक ।

एहि लेल नहि जे हुनकालोकनिक कथ्य झूठ छलनि वा मैथिलीक प्रति ओकर मोनमे कोनो सम्मान नहि छलैक । ओकरा एक टा दबल आश्चर्य मात्र भेलैक । आश्चर्य एहि लेल जे सत्येन, मधुकर आ निखिलेशक मोनमे मैथिलीक प्रति एहन सम्मान, एतेक श्रद्धा कहियासँ उपजि गेलैक ? ओकरा तीन-चारि बरख पहिलुका एक टा घटना मोन पड़ि गेलैक । तीन-चारि टा उत्साही नवयुवकलोकनिक संग मिलिकऽ ओ एक टा पत्रिका प्रकाशित कयने रहय । ओकरे ग्राहक बनाबऽ जखन सत्येन लग पहुँचल रहय तँ जवाब भेटल रहैक– "देखू प्रकाश जी ! अहाँलोकनिक प्रयास सराहनीय अछि । मुदा मैथिलीक पत्रिका के खरीदत ? के पढ़त ? हम अपने 'माया' 'नीहारिका' लैत छी, फिल्मफेयर आ माधुरियो खरीदैत छी । मिथिला मिहिर सेहो खरीदैत छी मुदा पढ़बा लेल नहि, कनियाँकेँ आ धीयापूतासभकेँ नीक लगैत छैक, तेँ । अहाँ कहब तँ अहाँक पत्रिकाक ग्राहक बनि जायब, फोटो जिल्द-तिल्द नीक रहत तँ धीयापूता खेलायत । मैथिली पढ़त के ? अहाँ तँ केहन बढ़ियाँ हिन्दीमे लिखैत-छपैत छी, ई मैथिलीक फेरामे की पड़ि गेलहुँ ?"

प्रकाश चुपचाप ऊठिकऽ चल आयल । ने ओ उपदेश ग्राह्य भेलैक आ ने ओहन ग्राहके बनायब पसिन्न भेलैक ।

मधुकर ग्राहक बनबाक प्रस्तावपर आर बेसी स्पष्ट उत्तर देने छलैक– "ओना ग्राहक बनबामे कोनो हर्ज नहि । मात्र छौ टका सालमे अहाँ लेब । बूझब जे एक दिन होटलमे चाह-पान भऽ गेल । मुदा पत्रिका पढ़बा लेल मैथिली पत्रिकाक ग्राहक के बनत ? कोनो स्तर रहैत छैक ओहिमे ? एक दिस हिन्दीक 'नीहारिका'क स्तर देखियौक ।

स्तरक उदाहरण देखि प्रकाशकेँ हँसी लागि गेलैक । ओकरा हँसैत देखि मधुकर रुष्ट होइत बजलाह– "एहिमे हँसबाक कोन गप्प छैक ? हम तँ सत्य कथा कहि रहल छी । अहाँक उदाहरण लियऽ ने ! अहाँक हिन्दी कथासभमे जे स्तर रहैत अछि तकर दशांशो मैथिलीमे रहैत अछि ?"

प्रकाश जेना अपन प्रशंसासँ गदगद होइत कहलकनि– "सत्ते ! अहाँ हमर दुनू भाषाक कथा खूब ध्यानसँ पढ़ैत छी । ने तँ एतेक नीक तुलना कोना संभव होइत ?"

मधुकरकेँ प्रकाशक कथनमे किछु व्यंग्य बुझना गेलनि । कनेक तिलमिलाइत बजलाह– "की मतलब ?"

–"मतलब साफ !" एहि बेर प्रकाश एकदम रुच्छ होइत कहलकनि–

"अहाँकेँ ने हमर हिन्दी-कथा पढ़ल अछि, ने मैथिलीक । यदि पढ़ने रहितहुँ एक्को दू टा, तँ बुझा जाइत जे दुनू भाषामे हमर एके कथा छपैत अछि । प्रत्येक हिन्दी-कथा मैथिलीसँ अनूदित रहैत अछि । एहन लोककेँ हमरा अपन पत्रिकाक ग्राहक नहि बनयबाक अछि । नमस्कार !" प्रकाश ऊठिकऽ चल आयल छल ।

निखिलेशसँ आरो नीक उत्तर भेटल छलैक– "खरीदबा लेल तँ खरीद लेब अहाँक पत्रिका, मुदा राखब कतऽ ? घरमे ड्राइंग रूममे लाइफ, मिरर आ इलस्ट्रेटेड वीकलीक संग मिथिला मिहिर राखब तँ केहन लागत ? गाड़ीमे यात्रा-काल सारिका, कहानीक संग सोनामाटि, आखर हाथमे देखत तँ आन यात्री की सोचत हमर स्टैण्डर्डक विषयमे ? एहिसँ बरु ओहिना चन्दा लऽ लियऽ । मुदा पत्रिका नहि पठायब ।"

प्रकाशकेँ ओहन ग्राहक बनायब पसिन्न नहि भेलैक । ऊठिकऽ चल आयल । मुदा किछुए दिन बाद एहि त्रिमूर्तिसँ एक टा सार्वजनिक सभामे जमिकऽ झगड़ा भऽ गेलैक । ई त्रिमूर्ति एक टा राजनीतिक मैथिली-संस्थाक कर्त्ताधर्त्ता छलाह जकर सार्वजनिक सभामे मनोरंजन-कार्यक्रम सेहो छलैक तेँ शहर आ दूर-दूरसँ प्राय: सभ मैथिल आयल छलाह । ई अवसर नीक देखि प्रकाश आ ओकर संगीसभ ओहि सभामे अपन सद्य:प्रकाशित पत्रिकाकेँ बेचऽ लागल । लोक दिससँ उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया भेटि रहल छलैक । मुदा ई त्रिमूर्ति बीचमे छड़पि गेलाह– "ई की कऽ रहल छी अहाँलोकनि ? एहन सभामे ई मैथिली पत्रिका-तत्रिका की बेचि रहल छी ? एहन-एहन पैघ नेता आयल छथि । तकरो तँ किछु विचार करू । लाजक विषय थिक ।"

प्रकाशकेँ नहि रहि भेलैक– "लाजक विषय कोन थिक से तँ निर्णयक वस्तु थिक । मैथिली पत्रिका बेचब वा मैथिलीक मूर्धन्य साहित्यकारक जयन्तीक अवसरपर बजाओल गेल सभामे नौटंकीक नाच ? हमरालोकनि मैथिली पत्रिका बेचि रहल छी कि कोकशास्त्र जे लाज होयत ?"

प्रकाशक उत्तरपर तीनू छटपटा गेलाह मुदा कोनो उत्तर नहि फुरबाक कारणेँ पयर पटकैत दोसर दिस ससरि गेलाह ।

मुदा तकर वर्षो बीति गेलैक । प्रकाशक मोनमे ने आब ओ उत्साह छैक आ ने ओतेक समय । आब अपन पढ़ाइक रुपैयासँ पैसा बचाकऽ अपन कथा-संग्रह नहि छपबैत अछि आ ने सार्वजनिक सभामे घूमिकऽ मैथिलीक पत्रिकाकेँ बेचैत अछि । अपन लेखकक प्रति सेहो एक टा उदासीन भाव क्रमश: जागि रहल छैक । किछु साल पूर्व ओकर एक टा कथाकार-गुरु मैथिली साहित्यमे 'स्टेगनेशन'क

स्थितिक चर्चा कयने रहथिन तँ ओ जोरसँ छड़पल रहय आ पैघ सन लेख लिखने रहय विरोधमे । मुदा आइ ओकरा स्वयं अनुभव होइत छैक जेना 'स्टेगनेशन'क स्थिति आबि गेल होइक, एकदम गत्यवरोध । फेर लगैत छैक जेना ई ओकर अपन सामर्थ्यहीनताक द्योतक हो, वास्तविक गत्यवरोध नहि । स्वयं ओकर भीतरक 'लेखक' मरि गेल हो आ ओ अनकापर ओ सम्पूर्ण साहित्यपर गत्यवरोधक आरोप कऽ रहल हो । एहि प्रसंगमे ओकरा भीतरक मुइल लेखककेँ जीवित रखबाक प्रचलित नुस्खा मोन पड़ैत छैक । मैथिली लेखकक बीच एक टा फैशन (प्रायः आनो भाषामे) छैक जे अपन छोड़ि अनकर ककरो प्रकाशित रचना नहि पढ़ी । एक बेर ओकरा मैथिलीक एक टा तथाकथित पैघ लेखकसँ भेंट भेल रहैक तँ ओ कहने रहथिन– "आइ-काल्हि 'मिथिला-मिहिर' पढ़ैत छी कि नहि ? कतेक बिलोस्टैंण्डर्ड भेल जाइत अछि दिन-दिन ! पढ़बाक इच्छा नहि होइत अछि ।" प्रकाश सेहो हँ-मे-हँ मिला देलकनि हुनका प्रसन्न करबाक लेल ।

किछु मासक बाद फेर ओही साहित्यकारसँ भेंट भेलैक । देखिते कहऽ लगलथिन– "आइ-काल्हि 'मिथिला-मिहिर' पढ़ैत छी कि नहि ? अपूर्व स्तर भेल जाइत छैक ओकर ।" ओकरा एहि स्तरक प्रगतिक रहस्य तुरत बुझबामे आबि गेलैक । तीन माससँ ओहि लेखकक एक टा लेख-माला धारावाही प्रकाशित भऽ रहल छलनि ।

एहने स्तर-बोधक एक टा खिस्सा आकाशवाणीमे काज कयनिहार ओकर दोस्त कहने रहैक । एक बेर एक टा दिग्गज साहित्यकार, केन्द्रनिर्देशक लग पहुँचलाह आ शिकाइत कयलथिन जे कार्यक्रमक स्तर दिन-दिन निम्न भेल जाइत अछि । केन्द्रनिर्देशक विभागीय अधिकारीकेँ निर्देश कयलथिन आ विभाग-अधिकारी ओकर ओहि मित्रकेँ बजौलथिन जे कार्यक्रम चयन आ प्रस्तुत करैत छल । सभ टा आरोप सूनि ओकर मित्र जवाब देलकनि जे श्रीमन्, निश्चिन्त रहल जाओ, एहि तिमाहीमे कार्यक्रमक स्तर निश्चित रूपसँ प्रगति करत । ओही तिमाहीमे ओहि दिग्गज साहित्यकार, हुनकर भाइ आ भातिजक नाम एक-एक टा अनुबंध पठा देलकनि । तिमाहीक अन्तमे केन्द्रनिर्देशककेँ पत्र अयलनि– "कार्यक्रमक स्तरमे अभूतपूर्व प्रगति भेल अछि ।"

आइ एहि त्रिमूर्त्तिकेँ मैथिलीक रक्षाक हेतु आन्दोलनक एतेक उत्साहपूर्ण भाषण करैत देखि, ओकरा पछिला एतेक रास गप्प अनायासे मोन पड़ि गेलैक । मुदा ओकरा एना मौन आ उत्साहहीन देखि त्रिमूर्त्तिक उत्साहपर जेना पानि पड़ि गेलनि ।

तावत कृष्णा ट्रेमे चारि कप चाह लऽ अनलकैक आ भीतरसँ टेबुल बाहर कऽ चाह राखि देलकैक । चाहक चुस्कीपर जेना सेरायल उत्साह फेर फनफना उठलनि आ सत्येन बजलाह– "हँ, तँ आब असल बात भऽ जाय । हमरालोकनि निर्णय कयलहुँ अछि जे एहि धाँधलीक विरोधमे, नेता, मंत्री आ हिन्दीवला सभक एहि कुचक्रक विरोधमे...

प्रकाश बीचेमे टोकलकनि– "एहिमे हिन्दीवला कहाँसँ आबि गेल ? हिन्दी राष्ट्रभाषा थिक आ मैथिली मातृभाषा । मातृभाषा ओ राष्ट्रभाषामे कोन विरोध ?"

"विरोध छैक" –मधुकर बीचेमे गरजलाह– "अहाँ नहि बुझैत छिऐ ? विरोध नहि रहितैक तँ दिनमानवला एना जहर उगिलैत ?"

प्रकाश फेर विरोध कयलकनि– "ओ तँ व्यक्तिविशेषक विचार छलैक वा यदि रिपोर्टरक संग सम्पादकोकेँ सानि ली, तँ बेसीसँ बेसी पत्रिकाविशेषक विचार । एहि कारणेँ समस्त हिन्दीपर आरोप करब अनुचित ।"

आब निखिलेश चुप नहि रहि सकलाह । क्रोध पीबैत कहुना बजलाह– "अहाँ तँ मैथिलीद्रोही जकाँ गप्प करैत छी । एना तँ अहाँसँ गप्पे करब निरर्थक ।"

प्रकाशकेँ इच्छा भेलैक जे ओ पत्रिका-सम्बन्धी घटना मोन पाड़ि देअय आ पूछनि जे मैथिलीद्रोही के अछि ? ईहो पूछनि जे अहाँक जे मैथिली संस्था अछि तकर उत्सवमे कैक टा लेखककेँ निमंत्रण जाइत अछि आ कैक टा नेता-मंत्री आ पछुलगुआकेँ ? मुदा एहि इच्छाकेँ दबाकऽ ओ बाजल– 'अच्छा रहऽ दियऽ एहि गप्पकेँ । असल योजना की अछि, से कहू ।"

एहि बेर सत्येन उत्साहित होइत बजलाह– "असल योजना ई अछि जे एहि प्रपंचक विरोधमे एक टा मोर्चा बनाबी । असलमे ओ मोर्चा बनियो चुकल– हम सभापति छी, मधुकर मंत्री आ निखिलेश कोषाध्यक्ष । कार्यक्रम ई अछि जे हमरालोकनि सम्पूर्ण मैथिली क्षेत्रक भ्रमण करी, हुनकालोकनिकेँ जगाबी । मुदा खाली भाषण के सुनत ? तेँ एक टा मण्डली संग चाही जे ठाम-ठाम सांस्कृतिक कार्यक्रम करत । कवि राकेशकेँ तँ अहाँ चिन्हिते छियनि । केहन सुन्दर स्वर छनि । हुनकर संगियो खूब गबैत छथिन । ओहो दुनू हमरालोकनिक संग जयताह । एतेक पैघ कार्यक्रमक हेतु फण्ड चाही, तेँ हमरालोकनि घूमि-घूमिकऽ पहिने फण्ड जमा कऽ रहल छी ।"

मोनक भाव दबाकऽ प्रकाश कहलकनि– "उत्तम योजना । मैथिलीक रक्षाक एहिसँ नीक योजना की भऽ सकैत अछि ? पत्रिका निकालला आ ग्राहक

बनौलासँ की होयत ? कविकेँ मंचपर नचाउ । भाषाक स्वतः विकास होयत । जनता नाच देखऽ दौड़त आ मैथिलीक रक्षा लेल कटिबद्ध होयत । वाह-वाह ! खूब योजना बनौलहुँ अछि ! हमर अवश्य सहयोग रहत । हमर योग्य सेवा सूचित कयल जाय ।''

कोषाध्यक्ष निखिलेश झट पाकिटसँ रसीद-बुक निकालि लेलनि आ एक टा दस टाकाक रसीद काटि प्रकाशक हाथमे दऽ देलथिन । प्रकाश दस टका दऽ पिण्ड छोड़ौलक । तीनू धन्यवाद दैत विदा भेलाह ।

प्रकाश फेर एकसर रहि गेल । रौद नीक जकाँ पसरि गेल छलैक आ बरण्डामे बैसब आब कष्टकर लागि रहल छलैक । ओ ऊठिकऽ भीतर आबि गेल आ बिछौनपर पड़ि रहल । कोठलीमे अबिते एक टा सुन्न ओकरा फेर घेरि लेलकैक । कटाह स्तब्धता आ औना देबऽवला एकसरपनी । आइए जाकऽ मीराकेँ लऽ आनी- ओ सोचलक । भरिसक मीरा नहि मानय– ओकरा शंका भेलैक । गामोसँ चिट्ठी नहि आयल छैक । चिट्ठीक ध्यान अबिते अकस्मात एक टा कार्यक्रम मोनमे अयलैक । किएक ने ओ एक सप्ताहक छुट्टी लऽकऽ एक सप्ताह गामसँ भऽ आबय ! से कार्यक्रम ओकरा पसिन्न पड़लैक आ ओ निर्णय कऽ लेलक ।

'वन क्लब'

'वन डाइस'

'वन स्पेड्स'

'टू हार्ट्स'

''टू स्पेड्स''

''नो बिड''

''फोर स्पेड्स''

प्रकाशक 'बिड' रहि गेलैक । ओकर पार्टनर छलथिन जित्तू काका । ओ 'डमी' बनलाह । अपन पत्ती पसारि झट प्रकाशक हाथसँ ताश छीनि लेलथिन- ''ला तँ बिरबा ! देखियौक, की छौ ।'' आ ताश देखि प्रसन्न होइत कहलथिन- ''बनि गेलौक गेम पार्टनर !''

रघू बाबूक मुँह लटकि गेलनि । ओ लगातार हारि रहल छलाह । ताश चौकीपर पटकैत कहलथिन– ''चाह-ताहक इन्तजाम कर प्रकाश आब । मोन नहि लागि रहल अछि ओना ।''

प्रकाश अपन छोट भाइकेँ हाक दऽ चाहक फरमाइस कऽ देलकैक ।

दोसर चौकीपर बीरेन बाबू बैसल छलाह । प्रसन्न आ निश्चिन्त । प्रकाश गाम आयल छलनि आ दरबज्जापर भीड़ लागल छलनि । आइ तीन दिनसँ नित्य लागि रहल छलनि । खेलाड़ी चारि– टिप्पा आ दर्शक चालीस । भोरसँ राति धरि चौखड़ी जुटैत छलैक । चाहपर चाह आ बाजीपर बाजी ।

बीरेन बाबूकेँ अपन रोग बिसरि गेल छलनि । घरक सभ टा चिन्ता आ जंजाल बिसरि गेल छलनि । बेटा घर आयल छलनि आ सौंसे गाम दरबज्जापर उमड़ल रहैत छलनि ।

आन कथू दिस ध्यान देबाक फुरसतिए नहि छलनि जेना !

मुदा अनायास किछु मोन पड़लनि आ मोन उदास भऽ गेलनि । मोन उदास भऽ गेलनि आ सभ टा असह्य लागऽ लगलनि । चुपचाप ऊठिकऽ आङन चल अयलाह । आङनमे हड़बड़ी मचल छलनि । छौंड़ासभ दौड़ि-दौड़िकऽ चाह दरबज्जापर पहुँचा रहल छल– बड़का हण्डा चढ़ल छलैक । चालीससँ कम लोक नहि छलैक आ ई भोरसँ चारिम खेप छलैक ।

आङनसँ ओसारापर आबिकऽ चौकीपर पड़ि रहलाह । आइसँ चारि बरख पहिलुका एक टा घटना मोन पड़लनि । विद्यालयमे बीस बरखसँ प्रधानाध्यापक छलाह मुदा ओहि दिन ओहि पदसँ सस्पेण्ड भऽ गेल छलाह । मेनेजिंग कमिटीक पाँच टा सदस्य मिलि हुनका पदसँ हँटयबाक प्रस्ताव पारित कऽ देने छलथिन । हुनकर समर्थक तीनू सदस्य अनुपस्थित छलथिन । आ प्रस्ताव पारित करऽवला पाँच मतमे चारि टा मत अपन पितियौतक छलनि आ एक टा सचिवक । ओ स्वयं मीटिंगमे उपस्थित नहि छलाह, मुदा निर्णयक सूचना हुनका भेटि गेल रहनि । निर्णय अप्रत्याशित नहि छलनि, मुदा तैयो सूनिकऽ स्तब्ध रहि गेल छलाह । जीविकाक प्रश्न आ पैघ परिवार ! प्रकाश ओही साल एम.ए. पास कयने रहनि, बाँकी चारू नेना नाबालिग । दू टा कन्या छोट-छोट ।

मुदा ओहि दिन क्यो दू टा सान्त्वनाक बोल कहऽ नहि आयल छलनि । लगलनि जेना अपन गाममे नहि, कोनो अपरिचित शहरमे होथि जतऽ ककरो हुनकर

सुख-दु:खसँ कोनो ताल्लुक नहि होइनि । मुदा सत्य ई छलैक जे ओ अपन गाममे छलाह जतऽ हुनकर दु:खक साझीदार तँ क्यो नहि छलनि, मुदा सुखक दुश्मन अनेक । अपन लोकक बीच छलाह, एहन होयब स्वाभाविके छलनि, खासकऽ एहन स्थितिमे जे सम्पूर्ण गाम एके परिवारक छलनि आ सम्पूर्ण गाम अपन सम्बन्धी छलनि, मात्र समाज वा पड़ोसी नहि । दुश्मन किएक तँ एक टा साधारण मास्टर भऽ मैनेजिंग कमिटीक सदस्यक आगाँ तरबा नहि रगड़ैत छलाह । दुश्मन किएक तँ गाममे कोनो पार्टी वा दलमे नहि छलाह । तेँ भऽ गेलाह एकदम एकढ़बा । अपन चारि टा भाइ मिलि नोकरीसँ हँटयबाक फैसला कऽ अपनत्वक परिचय दऽ देलकनि आ सौंसे गाम तेना तटस्थ छलनि जेना किछु भेले नहि होइनि ।

मुदा ओ कोना तटस्थ रहि सकैत छलाह ? ई मात्र नोकरीक नहि, सम्मान आ धीया-पूताक जीवनक प्रश्न छलनि । अड़ि गेलाह । सौंसे गाम एक दिस आ एक दिस ओ एकसरे ।

मुदा इज्जति बाँचि गेलनि । कोर्टसँ निषेधाज्ञा भऽ गेलैक आ ओ अपन पदसँ एको दिन नहि हँटलाह । सचिव एवं अन्य सदस्यकेँ हस्तक्षेप करबासँ निषेध कऽ देल गेलनि ।

जहिया कोर्टक निर्णय भेलैक ताहि दिन ओ दरभंगे छलाह । सचिव महोदय गाममे हुनकर दरबज्जाक सामने खूब फनकलाह । बदला लेबाक धमकी आ भरि इच्छा अवाच्य कथा बजलाह । छोट-छोट धीया-पूता सूनिकऽ रहि गेलनि आ दरबज्जाक भीतर सुनैत स्त्री कानि-कानि कऽ अपने अधमरू भऽ गेलथिन ।

मुदा गौआँ लेखे धन-सन । ओहू दिन तहिना निर्विकार रहल जेना ओहि दिन रहल छल जहिया सस्पेन्शनक आज्ञा भेटल छलनि ।

आ ताही गामक लोक आइ दरबज्जापर उमड़ल छलनि आ फरमाइशपर फरमाइश कऽ रहल छलनि जेना सभक अपने घर होइनि । हुनका ओ दिन-राति सभ मोन पड़लनि जहिया एकसर कोर्ट-कचहरीसँ थाकल-ठेहिआयल घुरैत छलाह, पसरल अन्हारमे एकसर अपन दरबज्जापर पड़ल रहैत छलाह आ लगैत छलनि जेना गाम नहि, कोनो सुन्न भयावह जंगलमे सूतल होथि आ चारू कात भयानक जीव-जन्तु मुँह फाड़ने गिड़बा लेल बौआ रहल होइनि ।

हुनका एना चौकीपर पड़ल देखि स्त्री लग अयलथिन– "की भेल ? मोन ठीक अछि ने ?"

पत्नीक आशंकित स्वर सुनि ओ ऊठि बैसलाह– "ठीक अछि मोन । ओहिना पड़ल छलहुँ ।"

–"ठीक अछि मोन तँ बाहर जाकऽ बैसू । एतेक लोक आयल अछि दरबज्जापर आ अहाँ एकसर अङनामे पड़ल छी ।"

–"लोक आयल अछि, से तँ देखि आयल छी । मुदा ओतऽ जाकऽ की होयत ? काल्हि ने तँ परसूसँ फेर क्यो एम्हर हुलकियो नहि देत आ एहिना एकसर पड़ल रहऽ पड़त । तखन दू-चारि दिन लेल अभ्यास बिगाड़लासँ लाभ ?"

पतिक उदास स्वर सूनि रमा चौँकलीह । सभ टा बुझबामे आबि गेलनि । लग बैसैत कहलथिन– "की करबै ले' ? हमसभ तँ आइयो ककरो बजाबऽ नहिएँ गेलिऐक अछि । अपन इच्छासँ आयल अछि, अपन इच्छासँ नहि आओत । हमरालोकनिकेँ तकर चिन्ता कोन ?"

बीरेन बाबू एक बेर पत्नी दिस ताकिकऽ चुप रहि गेलाह । रमाकेँ देखैत सोचऽ लगलाह जे एतेक पैघ संघर्षमे कहिया ने टूटि गेल रहितथि यदि रमाक संग नहि रहितनि । कतेक साहसपूर्वक सभ टा विपत्तिमे संग देने छलथिन ! आइ यदि हुनकर अस्तित्व बाँचल छनि तँ रमाक बलेँ । बीरेन बाबू कृतज्ञतापूर्वक रमाकेँ देखैत रहलाह ।

स्वामीक आँखिक भीजल कृतज्ञभाव रमा चीन्हैत छथि आ हाथ पकड़ि उठबैत कहैत छथि– "एना कमजोर नहि होउ । जाउ, बाहर जा बैसू ।"

बीरेन बाबू अनिच्छापूर्वक उठैत छथि आ बाहर डेग उठबैत छथि, मुदा किछु धम्मसँ खसबाक स्वर सुनिते घुमैत छथि । रमा चौकीपर पेटकान देने पड़लि छटपटा रहलि छथि । बीरेन बाबू दौड़िकऽ लग अबैत छथि आ रमाकेँ हाथसँ सम्हारैत छथि । दर्दसँ सौंसे आकृति स्याह भऽ गेल छनि आ पेट पकड़ने छटपटा रहलि छथि रमा । रमाकेँ ओहिना छोड़ि भीतर कोठलीमे दौड़ैत छथि आ एक टा गोली आनि पानिक संग खुआ दैत छथिन । कनियेँ कालमे रमाक आकृति सहज भऽ जाइत छनि आ ओ सम्हरिकऽ बैसऽ लगैत छथि ।

बीरेन बाबू निषेध करैत छथिन– "पड़ले रहू, एखन उठू नहि । डाक्टरकेँ खबरि दैत छिऐक । ई सभदिना दर्द ! एक दिन जान चल जायत एहिना । प्रकाशकेँ बजबैत छिऐक ।

रमा कहुना उठैत बजलीह– "छोड़ि दियौक, खेलाय दियौक । छुट्टी नहि

भेटैत छैक काजसँ, चारि दिन गाम आयल अछि तँ ओकरो अहाँ ओहिना कष्टकर बना देबैक । खेलाय दियौक, हमरा किछु नहि भेल अछि ।''

रमा ऊठिकऽ भनसाघर दिस चल जाइत छथि । बीरेन बाबूकेँ रोकि नहि होइत छनि । फेर चुपचाप ओही चौकीपर बैसि जाइत छथि आ बैसल-बैसल आङनमे प्रवेश करैत साँझकेँ देखैत छथि– गर्मीक उदास आ गुमसल साँझ हुनकर जीवनमे पैसि गेल छनि जकर बाद खाली अन्हारे-अन्हार छैक आ भोर बहुत दूर । ई भोर कतेक लग बुझाइत छलनि हुनका किछु दिन पूर्व धरि ! लगैत छलनि जेना बस...आब बस्स । आब कोनो कष्ट नहि, कोनो चिन्ता नहि । कान्हपरसँ जूआ उतारबाक बेर भऽ गेल । मुदा आइ लगैत छनि जेना कान्हपर राखल जूआ आर भरिगर भऽ गेल होइनि आ कान्हमे धसले जाइत होइनि ।

खाली चौकीकेँ भिजाकऽ ओहिपर खाली देह चित्त पड़ल छल आङनमे । ऊपर उघरल आकाश छलैक– तरेगनसँ भरल । मुदा एक टा पातो नहि हिलि रहल छलैक । घामे-पसेने तर भेल छल प्रकाश । आइ भोरेसँ ओहिना छलैक– पात-पात शान्त, एक टा सिहकी पर्यन्त नहि । एही द्वारे आइ ताशक चौखड़ी साँझे उखड़ि गेलैक । अपस्याँत लोक बसातक लेल एम्हर-ओम्हर पड़ायल । प्रकाशो नदीक कछेर धरिसँ भऽ आयल । हवा ओहिना स्तब्ध छलैक, मुदा कछेरमे बैसलापर नीक लागि रहल छलैक ।

आ कछेरमे बैसल-बैसल बहुत-किछु मोन पड़ि गेलैक । मोन पड़ि गेलैक स्कूलसँ भागिकऽ बुढ़बा बड़क गाछक दोकन्हापर सूति रहब वा बैसिकऽ मुरही फाँकब । मोन पड़लैक एही बुढ़बा बड़क गाछपर संगीसभक संग डोल-पत्ती खेलायब । आ मोन पड़लैक एहि कछेरमे बैसिकऽ बालुक घर बनायब– कोठा, महल, अटारी– मुन्नीक संग, गीताक संग, कलाक संग ! कनियाँ-वर बनब, सासु-ससुर बनब ओ आरो कतेक अज्ञात सम्बन्धक अभिनय कयनिहार सभ वास्तविक जीवनक भूमिकामे नहि जानि, कतऽ-कतऽ छिड़िया गेल छैक । कतेको वर्षसँ ककरो सम्बन्धमे किछु ज्ञात नहि छैक । मुदा आइ नदीक कछेरमे बैसल कतेको परिचित स्वर गुंगिआय लगैत छैक ओकर कानमे । बड़ी काल धरि ओहि गुंगिआइत आत्मीय सम्बोधन सभक बीच बैसल रहैत अछि ।

फेर ऊठिकऽ ऊपर अबैत अछि । बड़क गाछ लग आबिकऽ इच्छा होइत छैक जे एक बेर गाछपर जा दोकन्हापर सूति रहय । मुदा अपन ई इच्छा दबा लैत अछि । लोक देखतैक तँ की कहतैक ? मन्दिरक सामनेवला मैदान एकदम जंगलाह भऽ गेल छैक– चकौरी आ चोरकाँटीसँ भरल । मैदानक एहन स्थिति देखि ओकरा दु:ख होइत छैक । ई मैदान कतेक सुन्दर घाससँ भरल रहैत छलैक आ एहिमे फुटबाल, क्रिकेट आ कबड्डीक केहन खेल होइत छलैक ! प्रकाशकेँ स्पष्ट देखबामे अबैत छैक जे हाफपैंट पहिरने एक टा छौंड़ा एक्के साँसमे पढ़ि रहल अछि कित... कित... कित...कित... । ओकरा आश्चर्य होइत छैक जे मैदानक एहन हालत किएक भऽ गेलैक ? छौंड़ासभ आब कतऽ खेलाइत होयत ? ओकरासभकेँ खेलमे आब रुचिए नहि रहलै की ?

मुदा तखने ध्यान सामने स्कूल दिस गेलैक जकर माटिक भीतसँ ओठङिकऽ ओ आँखि मूनिकऽ पहाड़ा पढ़ैत छल । मुदा माँटिक ओ भीत आइ निपत्ता छलैक । ने एको टा कोठली, ने एको टा बेंच । स्कूल कोनो आन ठाम चल गेलैक की ? कतऽ गेल होयतैक– एही गुनधुनमे पड़ल ओ मन्दिर दिस विदा होइत अछि । नहि जानि कतेक दिन भऽ गेल होयतैक मन्दिर गेला । जहियासँ गाम छोड़लक, प्राय: कहियो नहि गेल होयत । ओ नास्तिक नहि अछि, मुदा मन्दिर जयबाक प्रयोजन ओकरा कहियो अनुभव नहि होइत रहलैक अछि । मुदा जा धरि गामक स्कूलमे पढ़ैत छल, नित्य गामक मन्दिर जाइते छल । आइ फेर वैह अभ्यास ओकरा मन्दिर दिस खीचि लैत छैक । ओकरा आश्चर्य होइत छैक जे आइ तीन दिनसँ गाममे रहियोकऽ एम्हर किएक ने आयल छल एको बेर ?

मन्दिरक बुढ़बा पुजेगरी ओकरा देखिते प्रणाम करैत छैक । ओ भगवानकेँ प्रणाम कऽ चरणोदक लैत अछि । मुदा मन्दिरक हालति देखि ओकरा दु:ख होइत छैक । राधा-कृष्णक मन्दिरमे चारू कात झड़िकऽ खसल प्लास्टरक ढेर । सौँसे मन्दिर ढहि जयबाक क्रममे । ओकरा मोन पड़लैक जे ई मन्दिर कोना चमचम करैत रहैत छलैक आ एहि मन्दिरक भंडारसँ नित्य दस-पाँचकेँ मुफ्त भोजन भेटैत छलैक । आइ वृद्ध कृशकाय पुजेगरीकेँ देखि मन्दिर आ हुनकर हालतिमे साम्य बुझाइत छैक । ओ प्रश्न करैत छनि– ''मन्दिरक हालति एना किएक पुजेगरी ?''

''की कहू बाउ ! अहाँलोकनिक नोन खाकऽ देह पोसायल अछि । किछु बाजू तँ कोना बाजू ? ई गाम आब ओ पुरना गाम कहाँ रहल जाहिमे मासमे एक बेर मन्दिरमे पैघ जलसा आ नाच होइत छलैक । आब तँ मन्दिरोमे पटीदारी भऽ गेल । ई भगवान हमर आ ई तोहर । राधा-कृष्ण हमर आ महादेव तोहर । ई पुजेगरी

हमर आ ई तोहर । मन्दिरक उद्धार करबा दिस ध्यान आब ककरो छैक ? आब तँ ध्यान छैक जे मन्दिरक पुजेगरी फुलबाड़ीक सभ टा आम-लीची आ बेल अपने खा जाइत अछि । कहुना ओकरो फाँट लागि जाइत । आब तँ यैह मोन होइत अछि जे सभ टा छोड़ि-छाड़िकऽ कोम्हरो निकलि जाइ । मुदा ध्यान अबैत अछि जे राधा-कृष्णकेँ भोग देनिहार आ आरतियो कयनिहार क्यो ने रहतनि । हमर देवता भूखल अन्हारमे पड़ल रहताह– सैह मोन बान्हिकऽ रखने अछि एतऽ ।''

पुजेगरी बजैत-बजैत विह्वल भऽ जाइत छथि । प्रकाश कोनो बोल-भरोस वा आश्वासन नहि दैत छनि । एहि गाममे कोनो टूटल चीजक मरम्मति संभव नहि छैक । कारण सम्बन्ध टूटि गेल छैक । सभसँ पहिने ओकर मरम्मति चाहिऐक जे प्राय: संभव नहि छैक आब । ककरो ध्यानो नहि छैक ओम्हर ।

मन्दिरसँ जहिना बाहर होबऽ लगैत अछि, स्कूलक पुरना गुरुजीकेँ अबैत देखि ठाढ़ भऽ जाइत अछि । ओकरो भट्ठा धरौने छथिन, पाँच वर्ष पढ़ौने छथिन। पयर छूबि प्रणाम करैत छनि ।

–''के ? प्रकाश ! जीबऽ-जीबऽ । नीके रहऽ । कहिया अयलह ?''

–''तीन-चारि दिन भेल गुरुजी !''

–''सभ टा समाचार बढ़ियाँ ने ?''

–''सभ टा अहाँ लोकनिक आशीर्वाद ।''

–''रहबऽ किछु दिन ?''

–''नहि गुरुजी ! दू-तीन दिनमे चल जायब । छुट्टी नहि अछि ।''

–''हँ-हँ, काजकेँ प्राथमिकता देबाक चाही । एखन तँ छह ने दू दिन। फेर भेँट होयत । बड़ प्रसन्नता होइत अछि तोरालोकनिकेँ देखलासँ ।''

गुरुजी भगवानकेँ प्रणाम करऽ भीतर चल गेलथिन । मुदा प्रकाश तैयो ओहिना ठाढ़ छल जेना कोनो सोचमे पड़ि गेल हो । गुरुजी प्रणाम कऽ घुरलाह तँ प्रकाशकेँ ठाढ़ देखि टोकलथिन– ''की बात छैक ? एना कथीक सोचमे पड़ल छऽ ?''

–''सोचमे नहि गुरुजी ! हमरासभक स्कूल की भेल ? ओतऽ तँ किछु नहि देखैत छिऐक ?

–''देखबह ओ स्कूल ? आबह ।''

प्रकाश गुरुजीक पाछाँ लागि जाइत अछि । गुरुजी मन्दिरसँ बहार भऽ स्कूलक डीहक पछबारी कात एक टा बड़का बेलक गाछ तर आबि कहैत छथिन– ''दैखि लैह, यैह छह गामक नवका स्कूल । पुरना मकान ढहि गेलैक । आब एतहि पढ़ाइ होइत छैक ।''

प्रकाशकेँ बड़ दु:ख आ ग्लानि होइत छैक । जाहि गाममे एतेक पढ़ल-लिखल लोक, जाहि स्कूलसँ पढ़ि-पढ़िकऽ विद्यार्थीसभ आइ सभ क्षेत्रमे धाख जमा रहल अछि, तकर नेनाक पढ़ाइ बेल तरमे ?

–''पुरना ढहि गेलैक तँ की भेलैक ?'' प्रकाश गुरुजीसँ प्रश्न करैत छनि– ''नव बनि सकैत अछि । गाममे चन्दा करू, सरकारसँ अनुदान लियऽ । एहन पुरान स्कूलक ई हालति ?''

–''से तँ अहाँ ठीक कहैत छी बाबू ! जहिया अहाँ पढ़ैत रही, हम एकसर मास्टर रही आ आइ तीन-तीन टा मास्टर संग छथि । विद्यार्थीक संख्या सेहो बेसी अछि, आनो गामक विद्यार्थी अबैत अछि । ओहि दिनमे तीसरा धरि रहय तँ तीन टा कोठली रहय आ आइ पचमा धरि पढ़बैत छिऐक तँ विद्यार्थी-संग बेल तर बैसैत छी । बरिसातमे पड़ाकऽ मन्दिरमे चल जाइत छी । गर्मीमे गाछक छाँहसँ नहि काज चलैत अछि तँ रौद धिपबासँ पहिने छुट्टी दऽ दैत छिऐक । मुदा, एना कतेक दिन ?''

–''मुदा, हमर गप्पक जवाब नहि देलहुँ गुरुजी ! सरकारी अनुदान लेल किएक ने प्रयास करैत छी ? गाममे चन्दा किएक ने करैत छी ?'' प्रकाश फेर टोकैत छनि ।

–''आब की जवाब दियऽ हम ? एतबे बुझू जे सभ कऽ चुकल छी, एको टा रस्ता नहि बाँचल अछि । सभ तरहेँ निरुपाय भऽ एना बेल तर बैसल रहैत छी धीया-पूताक संग । अनुदान भेटल छलैक, कच्चा नहि, पक्का मकानक लेल । मुदा से रहि गेलैक जग्गू बाबू लग । दस बरखसँ हुनके लग छैक । न्योँ सेहो नहि पड़लैक दस बरखमे । गाममे ककरो साहस नहि छैक जे पंचैती करत आ हुनकासँ टाका ओसूलत । कोनो उपाय नहि देखि चन्दा कयल जे भीतकेँ मरम्मति करा देबैक जे बरिसातमे ढहैक नहि । सभ चन्दा देलक । पाँच सय टाका भेल । मुदा ओहिसँ कल्लू बाबूक बुतात चललनि, स्कूलक देबाल मरम्मति नहि भऽ सकलैक । बरिसातमे सभ टा खसि पड़लैक । कल्लू बाबूसँ लोक टाका माङऽ गेलनि तँ उनटे कथा कहऽ लगलथिन । हारिकऽ फेर चन्दा करैत गेलहुँ जे फूसेक दू टा कोठली ठाढ़ कऽ देबैक । एहू बेर पाँच सय टाका जुटल । मुदा स्कूलक घर नहि बनि

सकलैक । ओहिसँ बनलनि मणि बाबूक बंगला । आब ने क्यो चन्दा देबऽ लेल तैयार अछि ने मददति करबा लेल । सरकार कहैत अछि जे पहिने पहिलुका अनुदानक हिसाब देखाउ, तखन दोसरक गप्प होयत । गौँआँ कहैत छथि जे पहिने पुरना रुपैयासभ ओसूल करू, तखन नव चन्दा देब । मुदा स्वयं ओ बकियौता ओसूल करबा लेल क्यो आगाँ नहि बढ़ैत छथि । एहि बूढ़ गरीब गुरुजीक के सुनत ? चुपचाप एहि बेल तर बैसल रहैत छी । अहाँक पिता तँ अपने भुक्तभोगी छथि, हाइ स्कूलक हालत जनिते छिऐक । एहि गाममे आब इमानदारी आ सत्यक गप्प करबे निरर्थक । चलू, अन्हार भऽ गेल । घर जाउ !''

गुरुजी अपन घर दिस चल गेलाह आ प्रकाशकेँ भरि बाट मोन पड़ैत रहलैक बाबूजी द्वारा कयल गेल दस वर्षक संघर्ष, गामक गोलैसी आ एकसर बाबूजीपर कयल गेल निराधार दोषारोपण, अपमान, लांछना आ पद-निष्कासन, मुदा तैयो बाबूजी एकसर संघर्ष करैत ओकरा सभकेँ सभ टा सुख-सुविधा देलथिन अछि, एक टा मास्टरक बेटाक सुख-सुविधा नहि, एक टा जमींदारक बेटाक सुख-सुविधा । विशेषकऽ प्रकाशकेँ तँ कहियो अनुभवे नहि भेलैक जे बाबूजी एहन पैघ मानसिक आ आर्थिक संघर्षसँ गुजरि रहल छलथिन । मुदा आब ई सभ टा अनुभव भऽ रहल छलैक । गामक अपर प्राइमरीक दुर्दशा देखि हाइ स्कूलक सभटा घटना मोन पड़ऽ लगलैक जतऽ पढ़ाइ कम, राजनीति बेसी होइत रहलैक अछि पछिला दस वर्षसँ ।

आङनमे आबि चौकीपर पड़ि रहल प्रकाश । तीन घण्टासँ पड़ल अछि । बसातक सिहकी धरि नहि छैक आ कछमछ करैत पसेनासँ लथपथ भेल अछि ।

मुदा ओहू गर्मीमे माय भनसाघरमे बैसलि छैक । पहिने सभक जलखै, फेर भोजनक व्यवस्था आ तखन बाबूजीक परहेजी भोजनक व्यवस्था । चौकीपर पड़ल-पड़ल प्रकाश ई सभ टा देखि रहल अछि आ ओकरा मोन पड़ैत छैक एक टा बिसरल घटना । बारह वर्षक एक टा किशोर भनसाघरमे अपस्याँत मायक माथक पसेना ओकरे आँचरसँ पोछैत आश्वासन दऽ रहल छैक– ''तोँ चिन्ता नहि कर माय ! हमरा पैघ होबऽ दे । फेर तोरा लेल एक टा ऊँच मचान बना देबौक जाहिप बैसलि-बैसलि तोँ खाली हुकुम करिहेँ । बैसल-बैसल जखन तोहर देह दुखाय लगतौ तँ तोरा नीचाँ उतारि पुतोहु सौंसे देह मालिश करतौक आ फेर ओहिना उँचक मचानपर बैसा देतौक ।'' सूनिकऽ माय हँसऽ लगैत छैक मुदा ओ झट टोकैत छैक– ''हँस नहि, हम सत्ते कहै छियौक । खाली हमरा पैघ भऽकऽ कमाय-खटाय दे

मुदा ओ पैघ भऽ कमा रहल अछि तैयो माय ओहिना खटि रहलि छैक । आइ पचीस बरखसँ खटि रहलि छैक । भोर पाँच बजेसँ 12 बजे राति धरि अनवरत । नित्य दू बजे दिनमे मुँहमे दतमनि लेने स्नान करबाक हेतु धार दिस जाइत छैक आ रातिकेँ बारह बजे सभकेँ खुआ-पिया, चौका-बर्त्तन साफ कऽ रोगीकेँ पथ्य-दवाइ खुआ बिछौनपर जाइत छैक– जेना एक टा मशीन होइ, हाड़-मांसक मनुक्ख नहि ।

प्रकाशकेँ इच्छा होइत छैक जे मायकेँ कहैक जे छोड़ ई जंजाल, चल किछु दिन आराम करऽ हमरासभक संग । फेर तुरत मोन पड़ैत छैक जे एखने तँ ओकर डेरासँ आराम कऽ घुरलि छैक । मोन एक टा अपराध-भावसँ त्रस्त भऽ जाइत छैक आ ओकरा भनसा दिस तकबाक साहस नहि होइत छैक जतऽ कचाह जारनिक धुआँ आ डिबियाक टिमटिमाइत इजोतमे मायक आकृति झलफल कऽ रहल छैक ।

धीयापूता सभ खा लैत छैक तखन माय ओकरा हाक दैत छैक– अयबह एम्हर कि ओतहि खयनाइ लेने अबियौ ।' फेर अपने उत्तरो दैत कहैत छैक– ''एम्हर कथी लेल अयबह ? एम्हर बड़ गर्म छैक । ओतहि लेने अबैत छियह ।''

ओकर इच्छा भेलैक जे चिचियाकऽ कहैक 'ओही भट्ठीमे तँ तोँ भोरसँ झोँकल छेँ ।' मुदा कंठ फँसि गेलैक आ किछु बाजि नहि भेलैक । माय थारी आगूमे राखि गेलैक तँ बैसिकऽ खाय लागल । मुदा पहिल कौर मुँहमे रखिते नहि जानि किएक ओकर स्वाद नोराइन लगलैक ।

प्रकाशक माथमे बड़ दर्द छलैक । लगैत छलैक जेना माथ फाटि जयतैक । आँखि एकदम कुटकुटाइत आ सौंसे देहमे तोड़-मरोड़ । राति नीक जकाँ निन्न नहि भेलैक । अनदिनो बिना बारहसँ ऊपर भेने निन्न नहि होइत छलैक गर्मीक द्वारे । मुदा राति बितलापर जखन हवा सिहकैत छलैक तँ झट निन्न भऽ जाइत छलैक ।

मुदा राति ने हवा सिहकलैक आ ने निन्न भेलैक । भरि राति कछमछ करोट फेरैत रहल । जखने लगैक जे आब आँखि लगतैक, बुझाइक जेना आङनमे क्यो कुहरि रहल छैक । शुरूमे भेलैक जे ओकर कानक भ्रम छैक । के कुहरतैक एतेक रातिकेँ ? मुदा जखन बेर-बेर एहिना भेलैक तँ ऊठिकऽ बैसि रहल । कोठलीक दरबज्जा खोलि आङनमे आयल तँ लगलैक जेना ककरो कुहरब सहस्रमुखी भऽ आङनक कोन-कोनसँ गोंङिया रहल छैक । आङनमे एक टा चौकीपर माय

निश्चेष्ट पड़लि छलैक आ कुहरि रहलि छलैक, नहि जानि कखनसँ ? ओकरा इच्छा भेलैक जे लग जाकऽ मायकेँ उठा दैक आ पुछैक जे की होइत छैक । मुदा तखने दोसर चौकीपरसँ बाबूजी बाजि उठलथिन– "सुनैत छी, एना कुहरि किएक रहलि छी ?"

कोनो उत्तर नहि पाबि बाबूजी आर विह्वल होइत बजैत छथिन– "बजै किएक ने छी ? जवाब दियऽ ? एना कुहरि किएक रहलि छी ?" तैयो कोनो उत्तर नहि । अनवरत कुहरबाक स्वर आङनक कोन-कोनसँ प्रतिध्वनित होइत ।

बाबूजी अपन बिछौनपर पड़ल-पड़ल जेना प्रलाप करऽ लगैत छथि– "मरब एक दिन एहिना । खटैत-खटैत प्राण जायत तखन बूझब । लाख मना करैत छी, अपन जानक दुश्मन नहि बनू । आखिर देहे अछि, मुदा के सुनैत अछि ?... मुदा सुनियोकऽ की होयत ? दोसर के अछि करऽवला ? अहाँकेँ तँ मरिकऽ सभ जंजालसँ फुरसति भेटि जायत । मुदा तखन के देखत हमरालोकनिकेँ ?"

बाबूजीक एहि आत्मसम्भाषणक भनकी जेना निश्चेष्टावस्थोमे मायक कानमे पड़ि जाइत छैक आ कुहरब बन्द भऽ जाइत छैक । उठैत पुछैत छनि– "किछु लेब ? की कहैत छलहुँ ?"

बाबूजी जेना लोहछिकऽ बड़बड़ा उठैत छथि– "हाय रे कपार ! एखनो पुछैत छथि जे किछु चाही ! दू घण्टासँ कुहरि रहल छी अपने, तकरो कोनो होश अछि ? एना जानक दुश्मन नहि बनू ।"

माय अपन बिछौनपर पड़ि रहैत अछि । कोनो जवाब नहि दैत छनि । दुनू गोटे जेना स्थितिसँ पराजित, हताश, रातिक गुमसल अन्हारमे चुप्प, मुदा अशान्त जागल रहैत छथि ।

प्रकाश कोठलीमे घुरि अबैत अछि । कुहरब आब बन्द छैक आङनमे । मुदा लगैत छैक जेना ओकर भीतर किछु कुहरि रहल हो– अनवरत आ कोनो भीषण यंत्रणासँ छपटाइत राति बीति जाइत छैक ।

मुदा भोरे माथ भारी लगैत छैक, जेना भरि राति क्यो हथौड़ासँ पिटने हो ! स्नान आ मालिशक बादो माथ ओहिना टनकैत रहैत छैक । आँखि मूनि पड़ल रहब असम्भव बुझाइत छैक । माय-बाबूजीकेँ किछु नहि कहैत छनि जे अनेरो चिन्तामे पड़ि जयताह । आइ ताश-मण्डलीक प्रतीक्षा सेहो नहि करैत अछि । चुपचाप टहलऽ लगैत अछि गाममे, निरुद्देश्य ।

कतेको वर्ष बीति जयबाक अतिरिक्त आर कोनो परिवर्तन नहि भेल छैक गामक नक्शामे । वैह चीन्हल-जानल घर, वैह धाङल रस्ता । कुम्भी पोखरि आ बूढ़ भालसरीक गाछ । पुबारि ड्यौढ़ी, पछबारि ड्यौढ़ी । भगिनमान टोल आ दछिनबारि टोल । सौंसे चक्कर लगा अबैत अछि, मुदा ककरो दर्शन नहि होइत छैक, जेना सभ गाम छोड़ि चल गेल हो ! पहिने जकाँ आइ धड़धड़ाकऽ आङन पैसि नहि देखि होइत छैक । कतेक वर्ष बीति गेलैक ! नहि जानि कोन आङनमे कोन नव लोक आबि गेल हो ! ओहिना बाटपर बौआइत रहल ।

घूरिकऽ फेर पोखरिक उतरबारि भीड़पर अबैत अछि तँ आङनसँ निकलि गीताक माय ओकरा सोर पाड़ैत छथिन– "एना चुपचाप नुकाकऽ किएक पड़ायल जाइत छी ? आउ, अङना आउ, अहींक घर अछि । गरीबक गूड़ा-खुद्दी खा लियऽ । पहिने तँ एही आङनमे घण्टो खेलाइत छलहुँ । आब कथी लेल हुलकी देब !"

आङनमे पयर दैत देरी प्रकाशक दृष्टि अड़रनेबाक गाछपर चल जाइत छैक आ हँसी लागि जाइत छैक । ओकरा हँसैत देखिकऽ गीताक माय हँसैत पुछैत छथिन– "मोन पड़ि गेल ?"

आब प्रकाश भभाकऽ हँसैत अछि । ओ घटना मोन पड़ि जाइत छैक जहिया मामूली गप्पपर बिगड़िकऽ अङनाक सभ टा लत्ती-फत्ती उजाड़ि देने रहैक आ सभ टा अड़रनेबा झाँटि देने रहैक । तैयो क्रोध शान्त नहि भेलैक तँ टाट-फड़क उजाड़ऽ लागल रहैक । समधिनक सम्बन्धसँ गीताक माय प्रकाशक नानीकेँ हँसीमे किछु गारि देने छलथिन आ प्रकाश बिगड़िकऽ सौंसे आङनकेँ तहस-नहस कऽ देने रहनि ।

एक टा पाकल अड़रनेबा काटिकऽ रिकबीमे प्रकाशक आगू राखि जाइत छथिन– "खा लियऽ । गरीबक ओतऽ आर की जुड़त ?"

प्रकाश अड़रनेबा मुँहमे दैत बात बदलैत कहैत छनि– "गीता कोना अछि बाबी ? धीयो-पूता भेल होयतैक ?"

गीता ओकर बालसंगी छलैक । गामक दूरक सम्बन्धे पीसी । मुदा समवयस्क छलैक । संगे खेलाइत छलैक । नदीक कातमे बालुक महल बनबैत छलैक आ वर-कनियाँ खेलाइत काल ओकर कनियाँ बनैत छलैक ।

–"हँ बाउ, खूब सुखी अछि । चारि टा सन्तानो छैक । दू टा बेटा आ दू टा बेटी । आब एहि बूढ़ीकेँ कोन चिन्ता ? एक टा बेटी छलि, सासुरमे राज करैत अछि । आब तँ भगवान बजा लेथि, ताहीमे नीक ।"

एखन तँ आर कतेक जीयब ?

—"नहि बाबी ! एना जुनि बाजू ? एखन तँ आर कतेक जीयब ? नाति-नतिनीक बियाह देखब ।"

गीताक माय प्रसन्न भऽ जाइत छथिन । प्रकाश ऊठिकऽ विदा भऽ जाइत अछि । ओ आग्रह करैत छथिन– "फेर आयब बाउ !'

बाहर अयलापर आब प्रकाशकेँ माथ हल्लुक बुझाइत छैक । प्रसन्न मन दछिनबारि टोल दिस विदा भऽ जाइत अछि। मुदा बाटेमे देखैत अछि जे एक टा स्त्री एक टा बच्चाकेँ कोरामे लेने एम्हरे आबि रहलि छैक । मुँह किछु चीन्हल बुझाइत छैक । लग चल अबैत छैक तैयो नीक जकाँ मोन नहि पड़ैत छैक । कतहु देखने छैक ।

—"एना अकचकायल किएक छेँ ? हमरा नहि चीन्हैत छेँ ?" ओ कनेक आहत होइत टोकैत छैक ।

—"अरे तोँ छेँ पद्मा ! चिन्हबौक किएक ने !"

ओकर स्वर चीन्हि प्रकाश स्थिति सम्हारैत अछि । मुदा ओकरा बड़ आश्चर्य होइत छैक । पद्मा ओकरे संगतुरिया छैक मुदा देखलासँ लगैत छैक जेना कोनो प्रौढ़ा हो ! एकदम स्थूल आ सेरायल । ओकरा ओ पद्मा मोन पड़ैत छैक जकरामे खाली चिनगी छलैक– लहलह करैत । एतेक जल्दी मिझा कोना गेलैक ?

—"की सोचि रहल छेँ ?"

—"किछु नहि । तोरे बच्चाकेँ देखैत छलियौक । बड़ सुन्दर छौक ।" प्रकाश बच्चाक गालकेँ छुबैत कहैत छैक ।

—"छठम छैक– सभसँ छोट ।"

पद्मा एकदम सहज भावेँ कहैत छैक मुदा ओकरा अविश्वास होइत छैक। छठम ? फेर लगैत छैक जेना अविश्वासक कोनो कारण नहि छलैक । पद्मा झूठ किएक कहतैक ? दस-बारह बरखमे छौ टा सन्तान होयब असम्भव त' नहि छैक ?

—"एखन रहबेँ ?" ओ प्रश्न करैत छैक ।

पद्मा स्वीकृतिमे मूड़ी डोला दैत छैक ।

—"बेस तँ फेर भेँट होयत ।" प्रकाश बिनु उत्तरक प्रतीक्षा कयने आगू बढ़ि जाइत अछि । ओकरा एहि पद्मा लग बेसी काल ठहरल नहि जाइत छैक । ओकरा ओ पद्मा मोन पड़ैत छैक जकर बुट्टी-बुट्टी सदिखन नचैत रहैत छलैक

जकरासँ सभ संगतुरिया डेराइत छलैक । प्रकाशोकेँ डर होइत छलैक । आ डर आरो बढ़ि गेलैक जखन पद्माक विवाह भेलैक । प्रकाश नवममे पढ़ैत छल । मुदा पद्मा जेना आर किछु पढ़बऽ चाहैत छलैक । नहि जानि की धधकैत देखैत छलैक ओकर आँखिमे जे प्रकाश डेरा जाइत छल । मुदा पद्मा जेना ओकरा तंग करबाक सप्पत खा लेने रहैक । शनि-रविकेँ छुट्टी भेलापर दरभंगासँ गाम आबय तँ ताश-पचीसी खूब चलैक पद्माक अङनामे । ओहि दिन भोरेसँ टिप-टिप करैत रहैक तैयो प्रकाश गेल जे खेलाड़ीसभ जुटले होयतैक । मुदा क्यो ने रहैक अङनामे । एकसरि पद्मा बैसलि रहैक– केश छिड़ियौने पीठपर । देहपर एक टा साड़ी मात्र । ऊपर कोनो वस्त्र नहि । प्रकाश घूरऽ लागल ।

पद्मा टोकलकैक– "हम खा जयबौक ? एना पड़ायल किएक जाइत छेँ ? बैस ।"

प्रकाश बैसि गेल ।

—"ताश खेलयबेँ ?" पद्मा ताश फेंटैत कहलकैक ।

आ बिन उत्तर सुनने ताश बाँटऽ लगलैक । बँटिते चल गेलैक आ हारैत चल गेलैक । अन्तमे एक बेर ओकर हाथसँ ताश छीनैत कहलकैक– "हम तोरासँ नहि जीति सकैत छियौ । तोँ बैमानी कऽ रहल छेँ ।"

प्रकाश ताश छिनबाक चेष्टा करैत कहलकैक– "दे, ताश दे हमर । हारै छेँ तँ झूठ-मूठ बैमानीक दोष दैत छेँ ।"

पद्मा अपन ताशवला हाथ दुनू ठेहुन आ छातीक बीचमे कऽ हँसऽ लगलैक– "ले, छीनि ले' ।"

प्रकाश लपकल । ताशवला हाथ झिकबाक चेष्टा कयलक । मुदा ओ तँ जेना सटि गेल रहैक । टस्ससँ मस्स नहि भेलैक । हारिकऽ ओहो हाथ घुसिया देलकैक ठेहुन-छातीक बीच । पद्मा ओकरो दुनू हाथ ठेहुनसँ नीक जकाँ दबा देलकैक । प्रकाशक हाथकेँ तप्त मासुक स्पर्श झुनझुनाबऽ लगलैक । देह सिहरऽ लगलैक आ नस-नसमे सनसनाहटि पसरि गेलैक ।

डेराकऽ हाथ खीचऽ लागल तँ हाथक संग पद्मा स्वयं कण्ठ धरि आबि गेलि । ठोर लग ठोर, साँससँ साँस मिलल, देहसँ देह सटल । प्रकाशक लेल सर्वथा नव अनुभव छलैक, एकदम उत्तेजक आ असह्य । ओ जोरसँ पद्माकेँ अपन छातीसँ साटि लेलकैक । पद्मा आरो बेगसँ चिपकि गेलैक ।

प्रकाश उत्तेजनासँ हाँफऽ लागल । पद्मा देहसँ सटलि छलैक आ नस-नस झनझना रहल छलैक । मुदा ओ आगाँ किछु सोचिए ने पाबि रहल छल । खाली एक टा प्रश्न ओकर मोनमे गनगना रहल छलैक– आब... ? आब...?

पद्माक बंधन क्रमशः ढील भऽ गेलैक । ओ चुपचाप मूड़ी खसौने चौकीपर बैसि गेलैक । मुक्त होइते प्रकाश पड़ायल । लगलैक जेना कोनो अग्निकुण्डसँ ऊठिकऽ पड़ायल जाइत हो !

ओहि पद्माकेँ आइ एतेक सेरायल आ ढहल देखि ओकरा लगलैक जेना समय सत्ते बड़ बीति गेल छैक ! खाली ओकरा अनुभव नहि भेल छैक जे एतेक बीति गेलैक । ओकरा इच्छा होबऽ लगलैक जे दौड़िकऽ अङना पहुँचय आ अयनामे देखय जे कतेक समय ओकर आकृतिपरसँ बीति गेल छैक । ओकरा भय होइत छैक जे कतहु ओकरो आकृति पद्मे सन सेरायल आ पस्त ने होइ !

एहि परिचित शहरक बिसरल गली-मोहल्लामे बौआइत प्रकाशकेँ बहुत रास बिसरलहा मोन पड़ैत छैक । प्रायः बिसरल किछुओ नहि छलैक, मात्र ओहिपर समयक परत चढ़ि गेल छलैक । आइ जेना समयक एक-एक टा परत उघरल जा रहल छलैक– अनायास, आ प्रकाश छोट भेल जाइत छलैक– छोट....पन्द्रह बरखक... किशोर । एक टा उज्जर हाफपेण्ट आ उज्जर शर्ट पहिरने स्कूल दिस दौड़ल जाइत। अकस्मात कानमे एक टा स्वर अबैत छैक– ''गुड मार्निङ्ग मिस्टर जिट''

प्रकाशकेँ लगैत छैक जेना ओकरे सम्बोधित कयल गेल होइक । आइ एक सप्ताहसँ सूनि रहल छल ई सम्बोधन । नित्य सूनि रहल छल । मुदा सभ दिन जकाँ अपन मकानक खिड़की लग ओ तेरह वर्षक किशोरी ओहिना ठढ़ि छलैक जेना किछु भेले नहि हो । प्रकाशकेँ तामस भेलैक । इच्छा भेलैक जे कहैक– ''उपनाम देबा लेल धन्यबाद कुमारी... कुमारी फैशन !' प्रकाश यद्यपि प्रकट किछु नहि कहलकैक मुदा ओहि अगत्ती छौंड़ी लेल एक टा उपनाम ताकि लेबाक कारणेँ मोने-मोन प्रसन्न भऽ गेल । ओ स्कूल दिस दौड़ल मुदा ओकरा बुझयलैक जेना खिड़कीपर ठाढ़ि छौंड़ी दुष्टतापूर्वक मुसकिया रहलि होइ !

शोभा सेहो मुसकिया रहलि छलैक– लगातार । प्रकाशक ध्यान पढ़ाइ नहि जा रहल छलैक । बेर-बेर शोभाकेँ एना मुसकियाइत देखि ओ भीतरसँ अस्थि

भेल जा रहल छल । की बात छैक ? एना किएक मुसकिया रहलि छैक ? ओकर दृष्टि अनायास डेस्कक नीचाँ अपन जांघ धरि खीचल हाफपेन्टपर चल जाइत छैक । लगैत छैक जेना शोभा लगातार ओम्हरे देखि रहलि हो । लगैत छैक जेना नाङट भऽ गेल हो सभक सामने । पेण्टक निचला कोर पकड़िकऽ आर नीचाँ खिचबाक असफल प्रयास करैत अछि । ओकर एहि प्रयासकेँ शोभा देखैत छैक । ओकर मुसकी आर स्पष्ट भऽ जाइत छैक । एहि बेर ओकर मुँह देखैत देरी अनायास प्रकाशो मुसकिया उठैत अछि । प्रकाश मुसकिया उठैत अछि आ शोभा लजा जाइत छैक । प्रकाश आर मुसकियाइत अछि । शोभा आरो लजायलि जाइत छैक । प्रकाश सोचैत अछि जे काल्हिसँ हाफपैन्ट नहि पहिरत ।

मुदा ई लेन-देन सभदिना भऽ जाइत छैक । मुसकिया उठब आ लजा जायब । लजा जायब आ मुसकिया उठब । सभ टा ततेक स्पष्ट भऽ जाइत छैक जे ककरो दृष्टिसँ नुकायल नहि रहैत छैक । हिन्दीक अध्यापक सुरेश बाबू तँ खुल्लम-खुल्ला एक दिन क्लासमे टोकि दैत छथिन– ''क्या बात है प्रकाश ! आजकल बहुत मुस्कुराने लगे हो ?''

प्रकाश एहि अप्रत्याशित प्रश्नपर अकचका गेल छल– ''कोई बात नहीं है सर ! कोई बात नहीं है ।''

सुरेश बाबू एक टा कुत्सित हँसी हँसैत कहलथिन– ''बात तो जरूर कुछ है । मैं कई दिनो से ये खेल देख रहा हूँ ।''

प्रकाश ओ हँसी आ बजबाक ओहि अश्लील चेष्टासँ बिगड़ि जाइत अछि । कनेक उद्दण्ड जकाँ उत्तर दैत छनि– ''ये तो आज मालूम हुआ सर ! क्या आप पढ़ानेमे कम और खेल-वेल देखने में ज्यादा ध्यान देते हैं ?''

सुरेश बाबू बिगड़ि गेलथिन । प्रधानाध्यापक लग शिकायति गेलैक । प्रधानाध्यापक ओकरा बड़ मानैत छलथिन । बजाकऽ बुझबैत कहलथिन– तोँ होनहार विद्यार्थी छह । बड़ आशा अछि हमरालोकनिकेँ तोरासँ । तोहर खानदानो कतेक पैघ छह, इलाकामे प्रसिद्ध । हमर कहबाक ई तात्पर्य नहि जे तोँ स्कूलक प्रतिष्ठा वा खानदानक प्रतिष्ठाक प्रतिकूल कोनो काज कऽ रहल छह । हमर संकेत मात्र संभावना दिस अछि । एहन कोनो संभावनाकेँ जन्म देब ठीक नहि जकर फल प्रतिकूल भऽ सकैत हो ।

प्रकाश हुनक स्नेहसँ गद्गद् होइत कहलकनि– ''अहाँ विश्वास राखू सर,

कहियो अहाँकेँ शिकायतिक अवसर नहि देब । कहियो एहन काज नहि करब जाहिसँ विद्यालयक प्रतिष्ठापर धब्बा लागय।''

हेडमास्टर साहेब प्रसन्न होइत कहलथिन– ''जाह, क्लासमे जाह । गुरुजनक बातकेँ अन्यथा नहि ली, ओ सतत शुभकामनासँ प्रेरित रहैत छैक।''

आ, तकर बाद जेना ओही दिनसँ सभ टा स्वीकृत भऽ गेलैक । मुसकीक अदल-बदल, गप्प-सप्प, कापी लेब-देब, बिना किछु कहने, बिना निवेदन कयने जेना सभ ठाम, स्कूल आ स्कूलक बाहर एक टा तथ्य, स्वीकृत भऽ गेलैक– प्रकाश आ शोभामे प्रेम छैक ।

आ एहि बिनकहल प्रेमक स्वीकृतिसँ जेना सभ किछु बदलि गेलैक । वैह स्कूल, वैह शिक्षक । वैह छोटछीन रहबाक कोठली– ओकिल काकाक बाहरवला घर, वैह छोटछीन मोहल्ला आ वैह छोटछीन शहर । मुदा प्रकाशकेँ लगलैक जेना सभ-किछु आरो छोट भऽ गेल छैक– स्कूल, मोहल्ला आ शहर । सौंसे स्कूलमे, सौंसे मोहल्लामे, सौंसे शहरमे मात्र दू प्राणी छैक– शोभा आ प्रकाश । स्कूलक छौ घण्टा जेना छौ पलमे बीति जाइक आ बाँकी समय ओ एक टा उन्मादक स्वप्नमे बौआयल रहय– दिन-राति । अनायास मुसकिया उठय, कोनो गीत गुनगुना उठय, अयनामे अपने आकृति बेर-बेर देखय आ रस्ता-बाजारमे आन कोनो छौंड़ीकेँ अपना दिस तकैत देखि उपेक्षापूर्वक हँसय– 'नो वेकेन्सी ।' दिन-राति सैकड़ो नव सम्बोधन ताकय आ काल्पनिक पत्र लिखि जाय शोभाक नाम... ।

मात्र शोभाक नाम ।

एही सभ स्वप्नमे उधिआइत एक दिन स्कूल दिस जल्दी-जल्दी दौड़ल जाइत रहय कि कानमे फेर एक टा परिचित स्वर अयलैक– ''क्या बात है मिस्टर जिट ? बहुत खुश नजर आते हैं आजकल ?''

प्रकाशकेँ इच्छा भेलैक जे पुछैक– ''अहाँकेँ कोनो आपत्ति अछि ?'' मुदा प्रकाश ततेक प्रसन्न रहैत छल एहि बीच जे कोनो कटाह उत्तर नहि दऽ भेलैक । खिड़कीपर ठाढ़ि अरुणाकेँ देखलकैक आ जोरसँ हँसैत स्कूल दिस चल गेल ।

अरुणा । हँ, अरुणे नाम छलैक ओकर । प्रकाशकेँ ओकर नाम बूझल भऽ गेल छलैक आ ईहो बूझल भऽ गेल छलैक जे ओकरे क्लासमे ओहो पढ़ैत छैक। गर्ल स्कूलमे । ओकरा आश्चर्य खाली एहि बातपर होइत छलैक जे सभ दिन स्कूल जयबा काल तँ ओ खिड़कीपर ठाढ़ि रहैत छैक, स्कूल कखन जाइत छैक ? फेर

ध्यान गेलैक जे शोभाकेँ देखबाक जल्दीमे वैह सभ दिन एक घण्टा पहिने स्कूल दौड़ि जाइत छल ।

ओहि दिन अरुणा फेर टोकलकैक– ओ अन्तर्विद्यालय प्रतियोगितामे एक टा नाटकमे मुख्य अभिनय कयने छल । किसानक भूमिका छलैक । खूब प्रशंसा भेल छलैक आ इनामो भेटल रहैक । जहिना घूरिकऽ डेरा लग आयल, खिड़कीपर ठाढ़ि अरुणा बाजि उठलैक– 'बेचारा जिट' बहुत गरीब हो गया है । खेती-वेती करने लगा है । बड़ी तकलीफ होती होगी ।''

प्रकाशकेँ फेर हँसी लागि गेलैक । एहि बेर एकदम प्रत्यक्ष सम्बोधन करैत कहलकैक– ''देख अरुणा, हमर नाम 'जिट' नहि, प्रकाश अछि । अपन आदति छोड़ खिड़कीपर ठाढ़ रहबाक । पढ़-लिख, खाली अनकर बातमे टाङ नहि अड़ा ।''

अरुणा ओहिना ठाढ़ि हँसैत रहलैक, तमसयलैक नहि । अनायास प्रश्न कऽ बैसलैक– ''अच्छा 'जिट' ! ई शोभा कोन छौंड़ीक नाम छैक ?''

प्रकाशकेँ आश्चर्य भेलैक । ई शोभाक नाम कोना जनैत छैक ? तामसो भेलैक । क्यो छैक शोभा, एकरा मतलब ? मुदा अपनाकेँ सम्हारैत पुछलकैक– ''तोँ कोना चीन्हैत छही ?''

–''ई लियऽ । चिन्हबैक किएक ने ? बगलेक स्कूलमे तँ पढ़ैत छी हमहूँ । तोहर स्कूलक सभ छौंड़ीकेँ चीन्हैत छिऐक । मुदा ई शोभा...

–''की शोभा ?'' प्रकाश बीचेमे बाजि उठलैक– ''की भेलैक अछि शोभाकेँ ?''

अरुणा एहि बेर बेस बुझनुक जकाँ बजलैक– ''शोभाकेँ की होयतैक ? होयतौक तोरा । ई शोभा नीक छौंड़ी नहि छैक.... पहिनो कैक टा छौंड़ा...

प्रकाश एकदम गरजि उठल– ''चुप रह । तोरा ई कहबाक साहस कोना भेलौक ? कथीक डाह छौक शोभासँ तोरा ? तोँ अपने खराब हेबेँ... तेँ ओकरा खराब कहैत छहीक ।''

प्रकाश अपन बातक प्रतिक्रिया बिनदेखने ओतऽसँ हँटि गेल । तामसे देह थरथर करैत रहलैक । एहि छौंड़ीक ई मजाल ? हमर शोभाकेँ अपशब्द कहत ?

प्रकाश ओ रस्ते छोड़ि देलक । ओहि बाटे स्कूल जायब बन्द कऽ देलक । घूरिकऽ जाय लागल । अरुणा एखनो ठीक साढ़े नौ बजे खिड़कीपर आबि जाइत

छलैक मुदा प्रकाश ओ बाट छोड़ि देने छल । दूरसँ अरुणाकेँ अपन कोठली दिस तकैत देखैत छलैक । मुदा ओकर उपेक्षा कऽ ओ दोसर दिस ताकऽ लगैत छल ।

मुदा स्कूलमे ओ शोभा दिस तकिते रहि जाइत छल । तकिते रहि गेल । दसमा पास कयलक । मैट्रिकमे सेन्टअप भेल । परीक्षा नजदीक आबि गेलैक । स्कूल जायब बन्द भऽ गेलैक । प्रकाश छटपटाय लागल । शोभासँ कोना भेंट होयत ? मुदा रस्ता स्वयं शोभा निकालि देलकैक । प्रकाश नीक विद्यार्थी छल, तकर सिफारिश कऽ अपन मदति लेल प्रकाशकेँ अपन डेरेपर बजाबऽ लगलैक । प्रकाश प्रसन्न भऽ गेल । आरो अधिक सामीप्य । आरो एकान्त आ एकान्तमे शोभा । आ शोभाक आँखिमे लहरैत स्वप्न ।

मुदा स्वप्न टूटि जाइत छैक, खण्डी-खण्डी भऽ जाइत छैक । एक राति प्रकाश शोभाकेँ पढ़ाकऽ घुरल अबैत छल कि तीन-चारि गोटे घेरि लेलकैक ओकरा । प्रकाश दू टाकेँ चीन्हैत छलैक– शहरक प्रसिद्ध गुण्डा । पहिने ओकरे स्कूलमे छलैक, प्रकाशसँ दू-तीन वर्ष आगाँ । मुदा हेडमास्टर साहेब स्कूलसँ निकालि देने छलथिन ।

ओहि गुण्डासभकेँ एना बाट छेकैत देखि प्रकाश डेरा गेल– "की बात छैक ?"

चारूक सरदार आगू बढ़ि बजलैक– "हमर संग आ । तोरासँ काज अछि ।"

डरक लेल प्रकाश पाछाँ लागि गेल । ओ सभ ओकरा एक टा बदनाम होटलमे लऽ गेलैक आ एक टा टेबुलपर बैसैत ओकरो बैसबाक आदेश देलकैक । प्रकाश डरेँ थरथराइत बैसि गेल ।

–"कतऽ गेल छलेँ ? शोभा ओतऽ ?" सरदार प्रश्न कयलकैक ।

प्रकाश स्वीकृतिमे मूड़ी हिला देलकैक ।

–"के होयतौक ओ तोहर- प्रेमिका ?" दोसर अट्टहास कयलकैक ।

–"प्रेमिका नहि, दोस्त ।" प्रकाश डेराइत बाजल ।

–"छौँड़ी दोस्तकेँ प्रेमिके कहल जाइत छैक ।" तेसर आगू अबैत कहलकैक ।

–"तोँ ओकर पिण्ड छोड़ि दहिक, नहि तँ ठीक नहि होयतौक । ई चक्कू देखि ले' ।" सरदार एक टा चक्कू टेबुलपर रखैत कहलकैक ।

प्रकाश डरेँ चुप रहल । किछु बाजि नहि भेलैक ।

–"काल्हिसँ एम्हर नहि टपिहेँ । टपबेँ तँ टाङ-हाथ तोड़िकऽ राखि देबौक ।" दोसर बजलैक ।

–"मुदा अहाँ लोकनिकेँ एहिसँ कोन मतलब अछि ?"

–"कोन मतलब ?" सरदार गरजल– "ओ हमरसभक प्रेमिका अछि । तोँ बीचमे टाङ अड़ायब छोड़ि दे । ओकरा अपने कहैत डर होइत छलैक तेँ हमरासभकेँ पठौलक अछि ।"

–"शोभा पठौलकौक अछि तोरा सभकेँ ?" –प्रकाश आश्चर्यसँ चिचिआइत कहलकैक । सरदार खाली एक टा कुटिल हँसी हँसैत रहलैक । जवाब नहि देलकैक । प्रकाश ऊठिकऽ विदा भेल– "हम जाइत छी ।"

–"मुदा मोन रखिहेँ । एहि बाटपर फेर कहियो टाङ नहि दिहेँ ।" सरदार चक्कूक धार छुबैत कहलकैक ।

प्रकाश बाहर निकलि जल्दी-जल्दी डेरा दिस पड़ायल । देह पसेनासँ भीजल छलैक । कोँढ़ धड़धड़ कऽ रहल छलैक । बेर-बेर पाछू घूरिकऽ तकैत रहल जे क्यो खेहारने ने अबैत हो !

अपन कोठलीमे अयलापर डर किछु कम भेलैक । खिड़की, दरबज्जा नीक जकाँ बन्द कऽ लेलक । आ बिछौनपर पड़ि रहल । लगले निन्न भऽ गेलैक, मुदा निन्नोमे बेर-बेर डेराकऽ चेहाइत रहल ।

पाँच दिन धरि शोभाक घर दिस नहि गेल ।

अपनापर ग्लानि भेलैक– कायर ! चारि टा गुण्डाक डरेँ बाट छोड़ि देत ? शोभाकेँ छोड़ि देत ? मुदा गुण्डासभ तँ कहलकैक जे शोभा पठौने छैक, ओ स्वयं ओकरा बाटसँ हँटाबऽ चाहैत छैक ? प्रकाशक मोनमे एकटा प्रश्न उठलैक । मुदा ई प्रश्न अपने अर्थहीन बुझयलैक । शोभा ओकरा पाछू गुण्डा किएक लगौतैक ? ओकरा मना करबाक रहितैक तँ अपने कहि दितैक । प्रकाश जबर्दस्ती तँ नहि करितैक । अबस्से गुण्डासभ अपन मतलब लेल गप्प गढ़ने होयतैक । गुण्डासभ शोभाक प्रेमी कोना होयतैक ?

साहस कऽ छठम दिन प्रकाश विदा भेल शोभाक घर दिस । चौराहा लग अबिते फेर चारूकेँ ठाढ़ देखलकैक । डरेँ भागि पड़ायल । ओम्हर जयबाक साहस

नहि भेलैक । भय आ उदासीमे आइ ईहो ध्यान नहि रहलैक जे अरुणाक खिड़की
लग दऽ जा रहल छल जाहि बाटे गेना ओकरा दू वर्ष भऽ गेल छलैक ।

–"आइ एहि बाटे कोना जिट ?" अरुणाक स्वर बदलल रहलोपर ओ
चीन्हि गेलैक ।

प्रकाश कोनो उत्तर नहि देलकैक । अरुणाक स्वर ओकरा थरथरायल
बुझयलैक । ऊपर तकलक तँ अरुणाक आँखिमे थरथराइत किछु देखि चौंकि गेलि ।

–"बड़ उदास छी आइ ?" अरुणा फेर टोकलकैक ।

प्रकाशकेँ तैयो किछु बाजि नहि भेलैक । आश्चर्य भेलैक जे ओकर उदासी
कोना चीन्हि गेलैक अरुणा ? बिनु उत्तर देने आगू बढ़बा लेल डेग उठौलक तँ पाछूसँ
अरुणाक स्वर अयलैक– "हम कहने रही ने, शोभा नीक छौंड़ी नहि अछि ।"

प्रकाश चौंकिकऽ घुरल । अरुणा खिड़कीपर नहि छलैक । आइ नहि जानि
किएक ओकरा अरुणाक बातपर तामस नहि भेलैक । इच्छा भेलैक जे अरुणा
खिड़कीपर रहितैक तँ ओ किछु आर गप्प करैत । नहि तँ कमसँ कम ओकरे गप्प
सुनैत । मुदा खिड़की खाली छलैक आ अरुणा अदृश्य भऽ गेलि छलैक ।

अपन कोठलीमे घूरिकऽ प्रकाश निश्चय कऽ लैत अछि जे ई शहर छोड़ि
देत । इम्तहानक सेन्टर बदलबा लेत आ फेर घूरिकऽ एहि शहरमे पयर नहि देत ।
ओ झट अपन सामान बान्हि लैत अछि । आ बान्हल सामानपर चित्त पड़ल-पड़ल
बड़ी कालधरि कनैत रहैत अछि ।

आ आइ दस वर्षक बाद एहि परिचित शहरक परिचित आ धाङल बाटमे
बौआइत बहुत रास बिसरलाहा मोन पड़ैत छैक । निरुद्देश्य बौआइत अपन मोहल्लामे
आबि जाइत अछि । ओकिल काकावला मकान ढहिकऽ जमीनपर खसल छैक आ
अरुणाक खिड़की बन्द छैक । नहि जानि कतऽ होयतैक अरुणा ? ओ बड़ी
कालधरि ओहि बन्द खिड़कीकेँ देखैत ठाढ़ रहैत अछि एहि आशामे जे एखने
खिड़की खुजतैक आ अरुणा बाजि उठतैक– "कब आये जिट ?"

मुदा खिड़की बन्दे रहलैक । अरुणा नहि अयलैक । प्रकाश भारी डेग
मोहल्लासँ विदा भेल । शोभा मोन पड़लैक । एक बेर ओकरो डेरा दिस जयबाक
इच्छा भेलैक । आब तँ कोनो गुण्डा चौबट्टीपर ओकर बाट छेकने नहि बैसल
होयतैक ? बैसलो होयतैक तँ ओकरा चिन्हबो नहि करतैक । फेर अपने ध्यान गेलैक
जे कोन मुँह लऽकऽ शोभासँ भेँट करतैक । कहतैक जे गुण्डाक डरेँ दस वर्षसँ

नुकायल छलहुँ, अयबाक साहस नहि छल । फेर शोभा बैसले होयतैक ओकरा
लेल ? ओकरो अपन 'घर' भेल होयतैक, धीया-पूता होयतैक । दस वर्ष कनेक
समय होइत छैक ?

प्रकाश जल्दी-जल्दी क्लिनिक दिस घुरैत अछि जतऽ मायकेँ बैसा गेल
छलैक । डाक्टरसँ देखाबऽ अनने छलैक आ देखौलाक बाद मायकेँ क्लिनिकमे
बैसाकऽ अनेरो बोआइ ले' निकलि गेल छल । ट्रेन भेटऽमे देरी छलैक । मुदा आब
समय भऽ गेल छलैक । प्रकाशकेँ देखिते माय चिन्तित होइत बजलैक– "कतऽ
चल गेल छलह ? गाड़ियो छुटि जयतह ।"

प्रकाश झट रिक्शा लऽ अनैत अछि । गाड़ी भेटि जाइत छैक । गाड़ी विदा
होइत छैक ।

प्रकाशकेँ गुमसुम देखि माय टोकैत छैक– "बड़ गुमसुम छह । डाक्टर
कोनो तेहन बात तँ नहि कहलकऽ ?"

–"नहि, नहि ।" प्रकाश चौंकैत कहैत छैक– "तोरा तँ अपनो बुझले
छौक । पेटमे एलसर छौक । परहेज राखऽ पड़तौक । जाड़मे आपरेशन करा देबौक ।"

–"तखन एना चिन्तित किएक छह ? की भेलह अछि ?" माय चिन्तित
होइत कहैत छैक ।

–"किछु नहि, होयत की ?" प्रकाशकेँ अपने स्वर अविश्वसनीय लगैत
छैक । ओ फेरसँ सोचऽ लगैत अछि एक टा छूटल शहरक विषयमे जकर बिसरल
लोक आइ फेर मोन पड़ि गेल छलैक आ ओकर संग जा रहल छलैक । भरिसक
ओकरा भ्रम भेल छलैक । ओ तँ हरदम ओकर संगे छलैक, मात्र समयक परतक
नीचाँ दबि गेल छलैक । आइ सभ टा परत एक-एक कऽ खुजि गेल छलैक आ
समय दस वर्ष पाछू चल गेल छलैक ।

पन्द्रह दिन बाद गामसँ विदा होइत काल माय कहलकैक– 'अपन
बाबूजीपर ध्यान दैह । एहन असाध्य रोगसभ ! कोना बचथुन ?" बाबूजी सेहो किछु
तेहने गप्प कहने छलथिन– "अपन मायपर ध्यान दैह । ई जनमारा दर्द आ
दिन-रातिक खटनी । आर कतेक दिन खेपथुन !"

मुदा प्रकाशकेँ किछु नहि कहि भेलैक । चुपचाप पयर छूबि विदा भऽ गेल । छोट भाय-बहिनसभ संग-संग अरियातऽ अयलैक । कुम्भी पोखरिक दछिनबरिया भीड़पर दऽ होइत, मन्दिर लग दऽ नदी कात धरि अयलैक सभ आ ओतऽसँ पयर छूबि सभ घूरि गेलैक । मोटरी-बक्सा लऽ मखना पहिने स्टेशन चल गेल छलैक । नदी पार करबा लेल नावक मांगीपर पयर दैत काल प्रकाशकेँ लगलैक जेना पटना नहि जा रहल हो, कतहु दूर– बहुत दूर चलल जा रहल हो आ गाम छूटल जाइत हो । मांगीपर ठाढ़ भेल गाम दिस एकटक तकैत रहल अन्हारमे मुदा अन्हारोमे सभ टा सुझैत रहलैक– आङनक कोनटा लग कनैत माय, दरबज्जापर हताश, भीजल आँखि लेने बैसल बाबूजी आ सहमल उदास धीया-पूतासभ ।

मुदा मलहा टोकि दैत छैक– "घाट आबि गेल मालिक !"

प्रकाश उतरैत अछि आ पाकिटसँ चौअन्नी बहार कऽ मलहाकेँ दैत छैक । ओ प्रसन्न होइत पुछैत छैक– "फेर कहिया आयब मालिक ?"

ओकर प्रश्नक उत्तर नहि दऽ ओ आगू बढ़ैत अछि । उत्तर देब आवश्यक नहि बुझाइत छैक । मुदा जेना-जेना आगाँ बढ़ैत अछि, मलहाक प्रश्न बेर-बेर मोनमे गूंजि उठैत छैक– 'फेर कहिया आयब ? फेर कहिया आयब ?' आब स्पष्ट बुझाइत छैक जे सभक मोनमे यैह प्रश्न छलैक । कोनटा लग कनैत ठाढ़ि मायक आँखिमे, दरबज्जापर उदास बैसल बाबूजीक मोनमे आ नदी कात धरि अरियातैत भाइ-बहीनक मोनमे । प्रकाश जेना सभकेँ उत्तर दैत बाजि उठैत अछि– "आयब, जल्दीए आयब ।"

फेर अपने हँसी लागि जाइत छैक । एना एकसरे बाटपर जाइत ओ ककर प्रश्नक उत्तर दऽ रहल छैक ! क्यो सुनतैक आ देखतैक तँ बताह कहतैक । ओ डेग जल्दी-जल्दी बढ़बैत अछि ।

ट्रेनमे नीक बर्थ भेटि जाइत छैक । राति भरि आरामसँ सुतैत अछि आ भोरे स्टीमरक जलहवा खाइत यात्राक स्वाभाविक थकनीकेँ झाड़बाक चेष्टा करैत अछि । जहाजक उपरका तल्लामे, रेलिंग लग ठाढ़ जलहवाक शीतल स्पर्श अपन चेहरापर अनुभव करैत अछि । बड़ी काल धरि एही अनुभवक सुख प्राप्त करैत ठाढ़ रहैत अछि । चाह पीबाक इच्छा होइत छैक । टी-स्टाल दिस जयबा लेल घुरैत अछि । ओहि सामनेसँ आबि रहल स्त्रीकेँ देखि चौंकैत अछि । एक टा परिचित आकृति । सामने छल अवाक् ठाढ़ि छैक । दस वर्षक अन्तरालक बाद दुनू अप्रत्याशित रूपेँ सामने छल ।

–"तोँ...अहाँ...शोभा..." प्रकाश एकाएक दस वर्षक बाद उचित सम्बोधन निश्चित नहि कऽ पबैत अछि ।

–"हँ, हमही छी । आब चिन्हबो ने करैत छैँ ?" शोभाक समक्ष प्रायः एहन कोनो दिक्कति नहि छलैक ।

–"चिन्हबौक ने किएक ? खाली आश्चर्य भऽ रहल एहि संयोगपर । दस वर्षक पश्चात्, एना अकस्मात् । विश्वासे नहि भऽ रहल अछि हमरा जे तोँही छैँ !" शोभाक स्वाभाविक स्वर सुनि प्रकाशो सहज होइत बाजल ।

फेर दुनू चुप्प, जेना आगू बजबा लेल किछु बचले नहि हो ! एक बेर प्रकाश नीक जकाँ शोभाकेँ देखैत छैक– भरल सीथ, भरल देह आ दुनू हाथक दू टा आङुर पकड़ने दू टा बच्चा । प्रकाशकेँ हँसी सुझैत छैक । बच्चासभ दिस संकेत करैत पुछैत छैक– "आरो छौक ?"

शोभा सेहो हँसऽ लगैत छैक– "नहि । यैह दुनू अछि ।"

–"बस !" प्रकाश जेना हतोत्साह होयबाक भंगिमा बनबैत कहैत छैक आ दुनू भभाकऽ हँसैत अछि । हँसैत-हँसैत एहि बेर शोभा टोकैत छैक– "तोरा कै टा छौक ?"

–"दू टा हमरो । पछुआयल हमहूँ नहि छी ।" प्रकाशक उत्तरसँ दुनूकेँ फेर हँसी लागि जाइत छैक । फेर चुप्प, जेना आगू गप्प करबा लेल किछु नहि बाँचल हो, एमदम खाली भऽ गेल होअय दुनू ।

–"पटनेमे छैँ ?" प्रकाश फेर प्रश्न करैत छैक ।

–"हँ, एतै नोकरी छनि हुनकर ।" शोभाक उत्तर पूर्ववत् स्वाभाविक छैक ।

प्रकाश फेर चुप्प भऽ जाइत अछि । शोभा सेहो चुप्प छैक । खाली जहाजक गति आ भारसँ गंगामे दूर-दूर धरि हिलकोर ऊठि रहल छैक । सामने महेन्द्रू घाट देखाइ देबऽ लगैत छैक ।

–"एक टा बात कहियौ ? अधलाह तँ नहि लगतौक ?" एहि बेर शोभाक स्वर बदलल छैक ।

–"एक टा किएक, दस टा कहऽ । अधलाह किएक लागत ?" प्रकाशकेँ एक टा सुखद अनुभव होबऽ लगैत छैक संभाव्य प्रश्नक सम्बन्धमे ।

—"बड़का लेखक भऽ गेल छेँ तोँ, हमरा बूझल अछि । एना खिस्सा लिखिकऽ हमर सुखी जीवनमे संशयक जहर घोरलासँ की भेटैत छौक तोरा ? एक टा विवाहित स्त्री छी हम । दू सन्तानक माय छी । किछु दायित्व अछि हमर । खाली खिस्सा लिखि-लिखिकऽ बहादुरी देखौने की होयतौक : एतेक बहादुर छलेँ तँ गुण्डासभक डरेँ भागि किएक पड़यलेँ ? ओही दिन बहादुरी देखबितेँ ? आब अपन कायरताकेँ खिस्सा-पिहानीक आदर्शवादी भावुकतासँ झँपबाक चेष्टा नहि कर। अपन छोट-छीन दुनियाँमे सुखसँ रहऽ दे हमरा ।"

प्रकाशकेँ कोनो उत्तर नहि फुरैत छैक । शोभा उत्तरक प्रतीक्षो नहि करैत छैक । दुनू बच्चाक आङुर पकड़ने घुरैत छैक आ जहाजक दोसर दिस चल जाइत छैक । विदाक कोनो औपचारिकता नहि । दस वर्ष पूर्वक विदा जेहन नाटकीय आ अकस्मात् भेल छलैक, आजुक भेँटक अन्त सेहो तेहने नाटकीय होइत छैक । प्रायः ई अन्तिम विदा । एकर बाद भेँट भेलोपर कहबा-सुनबा लेल की रहि गेल छैक ? अपन-अपन सीमामे घुरि गेल अछि दुनू आ भविष्यमे भेँट भेलोपर प्रायः आजुक सन स्वाभाविक गप्प नहि भऽ सकतैक, जेना दस वर्षक अन्तराल आइधरि नहि पुरल छलैक, मुदा आइ एक्के क्षणमे दस वर्ष बीति गेल छलैक । आजुक बाद भेँट भेलापर प्रायः दुनू अपरिचित जकाँ आगू बढ़ि जायत ।

जहाज घाटपर लागि रहल छैक । अपन सामान कुलीकेँ दऽ सीढ़ीसँ नीचाँ उतरैत काल प्रकाशकेँ इच्छा होइत छैक जे शोभाकेँ ताकिकऽ कहैक जे तोहर जिनगीमे शंकाक जहर घोरब हमर कथाक उद्देश्य कहियो नहि छल । पछिला हप्ता प्रकाशित जाहि कथाक तोँ संकेत कयने छेँ, ओ तँ मात्र अभिव्यक्ति छल बहुत रास ओहि बिन-कहल बातक जे कहियो तोरा नहि कहि सकलियौक । ओ तँ मात्र स्वीकृति छल एक टा अपराधक जे तोहर समक्ष भेल छल, आइसँ दस वर्ष पूर्व जहिया गुण्डासभक कथनकेँ सत्य मानिकऽ ओकर डरेँ हम भागि पड़ायल रही । तोरापर लांछना लगायब, तोहर सुखमे बाधक होयब कहियो अभीष्ट नहि छल । आइयो नहि अछि । प्रतिज्ञा करैत छियौक जे आइसँ कोनो कथामे प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपेँ, कहियो तोहर चर्चा नहि करबौक । आइसँ अपन जीवन-कथाक ओ अंश फाड़ि रहल छी जाहिसँ तोँ सम्बद्ध छेँ । ओ कथा आब हमर नहि रहल जाहिमे तोहर चर्चा छौक ।

मुदा प्रकाशक ई गप्प सुनबा लेल शोभा कतहु नजरि नहि अबैत छैक । भीड़मे कतहु अदृश्य भऽ गेलि छैक । प्रकाशक कुली आगाँ भागि गेल छैक । सामान हेड़ा जयबाक आशंकासँ ओहो जल्दी-जल्दी रिक्सा-पड़ाव दिस बढ़ैत अछि ।

प्रकाश अपन डेरा दिस नहि जाकऽ सासुरक डेरा दिस बढ़ैत अछि । सोचैत अछि जे मीराकेँ लऽ कऽ अपन डेरा जायत । बहुत दिन भऽ गेलैक मिनी-गुड्डूकेँ देखना । आ मीराकेँ मानऽ पड़तैक, आइ कोनो बहाना नहि सुनतैक ।

डेरा पहुँचिते हल्ला मचि जाइत छैक । मिनी दौड़िकऽ कोरामे चढ़ि जाइत छैक । अंजू उलहन दैत छैक– "आब तँ बड़का लोक भऽ गेल छी अहाँ ! दर्शनो दुर्लभ !"

छोटकी प्रभा सेहो बुढ़िया जकाँ बाजि उठैत छैक– "हमरासभसँ अहाँकेँ मतलबे की ?"

प्रकाश प्रभाक गाल थपथपा दैत छैक आ अंजूकेँ हँसबैत कहैत छैक– "एतेक तामस नहि मेम साहेब, सभ टा तामस हमरेपर झाड़ि देब तँ 'हुनका ले' की बाँचत ? किछु बचाकऽ राखू, बेर-कुबेर काज देत ।'

अंजू लजाकऽ कहैत छैक– "जाउ, हम अहाँसँ नहि बजैत छी !"

पुष्पा गुमसुम ठाढ़ि मुसकियाइत छैक । प्रकाश ओकरो टोकैत छैक– "की बात छैक ? पुष्पा रानी बड़ प्रसन्न छथि... ।"

पुष्पासँ पहिने अंजू टपकि पड़ैत छैक– "बाते तेहने छैक । खुशी तँ होयबे करतैक ।'

पुष्पा अंजूकेँ डँटैत छैक– "मारबौ । चुप रह ।"

मुदा अंजू चुप्प नहि रहैत छैक– "बस, एक मास ! तकर बाद बरियाती आ रशनचौकी ! बुझलिऐक ?"

प्रकाशकेँ प्रसन्नता होइत छैक । पुष्पाकेँ खौँझबैत कहैत छैक– "तेँ एतेक हँसी छिड़िया रहलि छथि पहिनेसँ ! मुदा हमरा तँ भारी मोश्किल भेल । आब हमर फरमाइशपर 'पिया तोँ से नैना लागे रे' के सुनाओत ? आब तँ 'पियाजी' सँ फुरसति कहाँ ?

—"जाउ, अहाँ तँ बड़ खराब छी !" पुष्पा लजाकऽ पड़ा जाइत छैक ।

प्रकाश भीतर आबि सासु-ससुरकेँ प्रणाम करैत अछि । ससुर अस्पष्ट किछु आशीर्वाद दैत छथिन मुदा सासु स्पष्ट उलहन दऽ बैसैत छथिन– "बुझनुक भऽकऽ एहनो क्यो काज करैत अछि ? बिना कोनो खबरिकेँ गाम चल गेलाह । हमरालोकनि कतेक चिंतामे रही !"

प्रकाश एहि उलहनकेँ स्वीकार करैत भीतर ओहि कोठलीमे अबैत अछि जाहिमे ओकर कोबर बनल छलैक । मीरा पलंग लग ठाढ़ि छैक । प्रकाश चुपचाप ओतऽ बैसि जूताक फीता खोलऽ लगैत अछि ।

–'हुनकालोकनिक जयबाक काल हमरा खबरि कऽ बजा नहि सकैत छलहुँ ?'' मीराक प्रश्नमे स्पष्ट आक्रोश छैक ।

–''कोन फायदा ? प्रकाशक मुँहसँ मीरेक मुँहसँ एक दिन सुनल उत्तर बहार भऽ जाइत छैक अनायास । मीरा छटपटा उठैत छैक आ एक बेर आहत दृष्टिएँ ओकरा दिस ताकि कोठलीसँ बाहर चल जाइत छैक ।

प्रकाश झगड़ा करऽ नहि आयल छल मुदा तीर छूटि गेल छलैक, जे मीराक अन्तरकेँ बेधि गेल छलैक । एहि 'शीत-युद्ध'क अन्त आब आइ नहि भऽ सकलैक । एखन ई आर चलतैक– एहिना । प्रकाश बूझि गेल छल । थाकल आ पस्त भेल बिछौनपर पड़ि रहल ।

मीरा एक कप चाह लेने फेर कोठलीमे अयलैक । ऊठिकऽ चाह लऽ एक घोँट पीबैत प्रकाश पुछलकैक– ''चलब ?''

मीरा कोनो उत्तर नहि देलकैक । मुदा ओकर मुद्रासँ स्पष्ट छलैक जे ओकरा कोनो विरोध नहि छलैक ।

मीरा बदहवास भऽ गेल छलैक मिनी आ गुड्डूकेँ सम्हारैत-सम्हारैत । दुनू एक्के सुरे कानि रहल छलैक– लगातार । पहिने मनौलकैक-पुचकारलकैक, कोरामे घण्टो टङने रहलैक आ फेर लोहछिकऽ दुनूकेँ छरपिटा देलकैक तड़ातड़ । कानब आर तेज भऽ गेलैक आ एखनधरि ओहिना चलि रहल छैक । मीराकेँ प्रकाशपर क्रोध होइत छैक, एना कतहु डेरा बदलल गेलैक अछि, सेहो साँझकेँ ? ने कोनो व्यवस्था, नें सुविधा । सामानक संग झट आगू पठा देलकैक दू घंटा पहिने आ अपने नहि जानि कतऽ लटकल छैक एखनधरि ! अबोध धीया-पूताक कोन कसूर ? गर्मियेँ जनमारा छैक । मीराक अपन माथ सेहो चनकि रहल छैक । मुदा तकरा बिसरि दुनू बेटीकेँ सम्हारबामे अपस्याँत भेलि अछि आ ओही चेष्टामे अपनो पसेनासँ तर-बतर भेलि अछि । मिनी-गुड्डू पसेनासँ भीजल छैक । सभ टा कपड़ा खोलिकऽ फेकि देने छैक । तैयो पसेनाक तराड़ा चलि रहल छैक । सामान सभ ओहिना जकथक पड़ल छैक । कोनो वस्तु सरिअयबाक कोन कथा, खोलिकऽ पर्यन्त नहि रखने छैक । फुरसतिए नहि भेलैक अछि । दुनू तखनसँ प्राणघात कऽ रहलि छैक आ मीरा ओहिमे व्यस्त अछि ।

एहिसँ तँ पहिले डेरा नीक छलैक । सभ टा व्यवस्था छलैक । दोस्तीक झोँकमे झट फैसला कऽ लेलनि । ने आगू देखलनि, ने पाछू । एक टा पंखा किरायापर छलनि तकरो घुरा देलथिन जे एहि कोठलीमे पंखा लगले छैक । तेहन निश्चिन्त भऽ गेलाह जेना अपने कीनिकऽ लगा गेल होथि ! कहैत-कहैत हारि गेलियनि जे कमसँ कम एक टा पंखा कीनि लियऽ, मुदा के सुनैत अछि ! 'किरायापर काज चलिए जाइत अछि !' वाह रे काज चलौनिहार ! सभ चीज उधार, सभ चीज किरायापर । मीरा मोनेमोन प्रकाशपर लोहछैत रहलि ।

मुदा एकरो सभकेँ अगुताइ देखियौक । एक दिन ठहरि जैतैक तँ कोन एहन अन्हेर भऽ जैतैक ! पंखा लैए जयबाक छलैक तँ लऽ जाइत भोरे । हमरालोकनि जबर्दस्ती थोड़े रोकि लितिऐक ? मीरा तँ खोलहि कालमे रोकने छलैक मिस्त्रीकेँ जे ''एखन नहि खोल, हुनका आबऽ दहुन ।'' मुदा के सुनैत छैक ?

–''मालिकक हुक्म छनि ।'' मिस्त्री कहलकैक ।

–''कोन मालिक ? प्रमोद बाबू ?'' मीरा प्रश्न कयलकैक ।

–''नहि, हुनकर बाबू जी !'' मिस्त्री पूर्ववत् अपन काज करैत कहलकैक ।

मीराकेँ अपमान जकाँ लगलैक । एक टा मामूली पंखा अनुरोध कयलोपर खोलिकऽ लऽ गेलैक । जखन एहि डेरामे आयल रहय, प्रमोदकेँ देखने रहैक नीचाँमे । मुदा तकर बाद ओ निपत्ता भऽ गेलैक । भेटितैक तँ ओकरे पुछितैक जे ई तँ नीक स्वागत कऽ रहल छी !

मुदा प्रमोद कतहु चल गेल छलैक ? भऽ सकैत छैक, जानि-बूझिकऽ टरि गेल हो । ओकर माँ-बाबू जी सेहो जा चुकल छथिन अपन नवका डेरा । आब ओ एहि नव डेरामे एकसरि रहि गेलि अछि आ दुनू बेटी गर्मीसँ छटपटा कऽ जान दऽ रहलि छैक । आठ बाजऽ जा रहल छैक आ एखनधरि प्रकाशक पता नहि छैक । सामान ओहिना जकथक पड़ल छैक आ चूल्हि धरि नहि पजरल छैक ।

नीचाँ किछु आहट बुझाइत छैक । चारि टा रिक्शापर बाँकी सभ सामान लेने प्रकाश आ कृष्णा आबि गेल छैक । कृष्णा सभ टा सामान ऊपर आनिकऽ रखैत छैक आ अन्तमे प्रकाशो ऊपर अबैत छैक ।

—"एहिना लोक डेरा बदलैत अछि ?" प्रकाशकेँ देखिते मीरा बमकि उठैत छैक, ईहो बिसरिकऽ जे दुनूकेँ नीक जकाँ मुँहाबज्जी नहि छैक ।

—"की भेल ?" अकचकाइत प्रकाश पुछैत छैक ।

—"होयत की ? तीन घण्टासँ उसनल जा रहल छी बाल-बच्चा समेत । अपने निश्चिन्तसँ आबि रहल छी आ हमरा तीन घण्टा पहिने जबर्दस्ती आगू ठेलि देलहुँ । कमसँ कम देखि तँ लितिऐक जे घर रहबा जोगर छैक वा नहि !" मीरा ओहिना बमकैत रहलैक ।

—"घरकेँ की भेलैक अछि ? हम तँ सभ टा देखि-सुनि, ठीक-ठाक कऽ गेल रही भोरे ।"

—"खूब ठीक कऽ गेल रही ! एक टा पंखा घरमे छल, तकरो घुरा देलिऐक जे नाहक किराया लागत । ओहि कोठलीमे पंखा लगले छैक । खूब लागल अछि पंखा ! धीया-पूता एकदम उसना गेल तखनसँ !"

—"पंखा नहि छैक ? प्रमोद तँ कहने छल जे पंखा लगले रहत । लगयबाक नहि काज ।" प्रकाश अकचकाइत पुछलकैक ।

—"लागल तँ ठीके छलैक । मुदा हमर अयलापर खोलि कऽ लऽ गेल ।"

—"के ? प्रमोद ?"

—"प्रमोद नहि, मिस्त्री । कहलक जे प्रमोदक बाबूजीक आज्ञा छनि ।" मीरा सभ टा सूचना दैत कहलकैक ।

—"प्रमोदो छल ?" प्रकाश एक टा कष्टकर आश्चर्यमे पड़ि प्रश्न करैत छैक ।

—"देखने तँ छलिऐक । मुदा एम्हर नहि आयल ।"

प्रकाशक मोनमे एक टा मूइल साँप फेर फनफना उठलैक । ई व्यवहा अप्रत्याशित छलैक । पंखा नहि देबाक छलैक, तँ स्पष्ट कहितैक । ओ अपन पंख नहि घुरबितैक । बड़ आवश्यक छलैक तँ भोरे खोलिकऽ लऽ जैतैक । मुदा ए ओकर अनुपस्थितिमे पंखा खोलिकऽ लऽ जायब ओकरा एकदम अपमानजनक लगलैक । इच्छा भेलैक जे फेर एखने एहि डेरासँ पुरना डेरामे घूरि जाय । मुदा कयलासँ स्थिति आर हास्यास्पद भऽ जयतैक, तेँ मोनक बातकेँ दबा गेल कृष्णाकेँ सामान सरिअयबाक तथा किछु खयबा-पीबाक व्यवस्था करबाक आदे

दऽ ओ मिनी-गुड्डूकेँ कोरामे उठबैत कहलकैक— "आउ, हमर संग नीचाँ आउ ! 'ड्राइङ्ग रूम'मे पंखा छैक । ओतहि बैसिकऽ ठण्ढा लियऽ ।"

मीरा संगे-संग नीचाँ अयलैक । मिनी-गुड्डूकेँ नीचाँ उतारि, दरबज्जा ठेलऽ लागल 'ड्राइङ्ग रूम'क तँ किछु अवरोध बुझयलैक । नीचाँ आङनमे अन्हार छलैक । हाथसँ टोहियाकऽ देखलकैक तँ दरबज्जाक जिंजीरमे एक टा ताला लटकल बुझयलैक ।

प्रकाश एक बेर क्रोधसँ ऊपरसँ नीचाँ धरि थरथरा भेल । एकदम असह्य व्यवहार । एक प्रकारक धोखा । एही ड्राइंग रूमक संयुक्त उपयोगक आश्वासन छलैक बेर-कुबेर । ऊपर मात्र एके टा कोठली आ भनसाघर छलैक । उपयोगक बात तँ दूर जाय, कमसँ कम आइ राति तँ एहि गर्मीसँ रक्षा होइतैक ? अन्हारमे मीराक आकृति प्रकाश नहि देखि पबैत छैक । नहि जानि, की सोचि रहलि छैक ? मुदा मिनी-गुड्डू अन्हारमे नीचाँ ठाढ़ि भेल-भेल अगुता कऽ फेर कानऽ लगैत छैक, जकरा चुप्प करबा लेल प्रकाश फेरसँ कोरामे उठा लैत छैक ।

प्रकाश आब सभ तरहेँ निरुपाय पबैत अछि अपनाकेँ । अन्हारमे मीराकेँ सम्बोधित करैत कहैत छैक— "जाइ छी पुरने 'डीलर' लग । भरिसक वैह पंखा फेर किरायापर भेटि जायत ।"

—"ओ भेटियो जायत तँ एतेक रातिकेँ पंखा 'फिट' के करत ? राति भरि लेल एक टा टेबुल-फैन लऽ आनू ओकरेसँ ।" मीरा सुझाव दैत छैक ।

—"बेस, जाइ छी लऽ आबऽ । ताबत अहाँ मिनी-गुड्डूकेँ छतपर लऽ जैयौक । कनियो हवा तँ लगतैक, चिचियाकऽ प्राण दऽ रहलि अछि दुनू ।"

प्रकाश चलबाक उपक्रम करैत अछि । मुदा मीरा टोकि दैत छैक— "बुझाइत अछि जेना टेलीफोन बाहरे राखल अछि, ओही कोनमे 'स्टैण्ड' पर । एक टा उपकार करैत गेल छथि । पहिने टेलीफोनसँ पूछि तँ लियौक जे दोकान फूजल छैक वा नहि आ यदि खूजल छैक तँ पंखा भेटत कि नहि !"

प्रकाश गौर कऽ देखैत अछि तँ कोनमे 'स्टैण्ड' पर राखल टेलीफोन देखाइ पड़ि जाइत छैक । एहि अप्रत्याशित कृपापर गदगद होइत झट आगू बढ़ैत अछि । अन्हारेमे 'रिसीवर' उठा अन्दाजसँ डायल करऽ लगैत अछि । मुदा हाथमे किछु ठेकैत छैक । छूबिकऽ देखैत अछि तँ छोटछीन ताला बुझाइत छैक । अर्थात् एतऽ मात्र आबऽवला टेलीफोन रिसीव कऽ सकैत छैक, एतऽ सँ टेलीफोन नहि कयल जा

सकैत छैक । प्रकाश चुपचाप रिसीवर राखि दैत छैक । आब कोनो वस्तुपर आश्चर्य नहि होइत छैक । ओ चुपचाप बाहर जाय लगैत अछि ।

–''की भेल ?'' मीरा टोकैत छैक ।

–''ताला !'' प्रकाश संक्षिप्त उत्तर दैत छैक ।

मीरा बूझि जाइत छैक । फेर कोनो प्रश्न नहि करैत छैक । कनैत गुड्डूकें कोरामे लऽ मिनीक हाथ पकड़ने ऊपर चल जाइत छैक । प्रकाश शीघ्रतासँ बाहर लपकैत अछि ।

भाग्यवश दोकान खूजल भेटैत छैक । एक टा पेडस्टल फैन किरायापर भेटि जाइत छैक जकरा रिक्शापर लादिकऽ प्रकाश शीघ्रतापूर्वक डेरा घुरैत अछि । नीचेसँ कृष्णाकें हाक दैत छैक । कृष्णा आबिकऽ पंखा ऊपर लऽ जाइत छैक । प्रकाश सेहो पाछू-पाछू भीतर अबैत अछि । दरबज्जा नीक जकाँ बन्द कऽ जहिना सीढ़ी दिस बढ़ैत अछि, अन्हारमे पयरसँ किछु ठेकि जाइत छैक । प्रकाश चेहाकऽ पाछू हँटि जाइत अछि । गौरसँ देखलापर पता चलैत छैक जे क्यो आङनक फर्शपर पटिया बिछाकऽ सूतल छैक । प्रकाश झुकिकऽ चेहरा देखैत छैक तँ चीन्हि जाइत छैक । शिवेन्द्र छैक– प्रमोदक पितियौत । प्रमोदक पित्ती गाममे खेती-बाड़ी करैत छैक । शिवेन्द्रकें कोनो आफिसमे छोटछीन नोकरी भेटि गेल छैक, सैह ज्वाइन करऽ आयल छैक । भोरे प्रमोद अपने कहने छलैक प्रकाशकें । ओकरा एना फर्शपर सूतल देखि प्रकाशक सभ टा आक्रोश जेना बिला जाइत छैक आ अन्हारमे ओकर ठोरपर एक टा विचित्र मुसकी पसरि जाइत छैक ।

पुष्पाकें सभ टा बीध करबैत काल मीरा एक-एक क्षणकें फेरसँ जीबैत रहलि । आइसँ छौ वर्ष पूर्व यैह मकान छलैक, एही ठाम मण्डप छलैक आ मण्डपमे कनियाँ बनलि पुष्पा नहि, मीरा स्वयं छलैक आ सभ टा बीध आ मंत्र पढ़बामे गामवाली काकी ओकर मदति कऽ रहलि छलैक । आइ, मीरा अनुभवी जकाँ स्वयं पुष्पाकें सभ टा बीध करा रहलि छैक आ तकर संग-संग छौ बरख पहिलुक प्रत्येक क्षणकें फेरसँ जीबि रहलि अछि । एहि बीतल क्षणक जीबाक प्रक्रियामे ओकर आकृतिपर पाँच-छौ माससँ ठहरल तनावक रेखा एक-एक कऽ बिलायल जा रहल छैक आ ओकर आकृति सहज भेल चल जाइत छैक । जेना वयसक छौ वर्ष फेरसँ

घटि गेल होइ आ ओ पुनः नवकनियाँ भऽ गेलि हो ! नहि, छौवे वर्ष नहि, आरो बेसी । किएक तँ एहि छौ वर्षमे मीरा जेना बारह वर्षक यंत्रणा भोगि चुकल अछि, मुदा आइ ओ सभ टा वर्ष एक-एक कऽ घूरि गेल छलैक आ एक टा नवकनियाँ मण्डपमे बैसलि छलैक– स्वप्नक हिलकोरमे उधिआइत आ भविष्यक सुखद कल्पनासँ आह्लादित । आइ फेर पुष्पाक हाथ वरक हाथमे दैत काल, गठबन्धन कऽ अग्निक फेरा लगबैत काल, वैह सिहरन, वैह आह्लाद मीराकें छूबि रहल छैक आ ओकर आँखि बेर-बेर भीड़मे प्रकाशकें ताकऽ लगैत छैक । मुदा प्रकाश नहि जानि कोम्हर व्यस्त छैक । ओठंगर कुटबा काल प्रकाश आयल छलैक तँ वेदी तर पुष्पाक बगलमे बैसलि मीराक सहज आकृतिपर एक टा लजायल भाव पसरि गेल छलैक । मुदा प्रकाश भरिसक किछु नहि देखलकैक । मीरा दिस तकबे नहि कयलकैक । बीध समाप्त कऽ चुपचाप बाहर चल गेलैक आ मीराक सहज आकृतिपर फेर तनावक रेखा जनमऽ लगलैक । घुटन, तनाव आ आक्रोश सभ अपन-अपन स्थानपर घुरऽ लगलैक । मुदा आइ, आइ भरि मीरा आन किछुओ मोन नहि राखऽ चाहैत छलि । चाहैत छलि एकदम सहज, स्वप्नयुक्त किछु क्षण जीयब । एतबा अधिकार ओकरासँ क्यो नहि छीनि सकैत छैक । प्रकाशो नहि । भविष्यक ओ स्वप्न सत्य नहि भऽ सकलैक, प्रायः होयबो नहि करतैक । मुदा ओ स्वप्न जे आइ जरिकऽ, सड़िकऽ मात्र एक टा दुर्गन्ध पसारैत छैक ओकर जीवनमे, ताहि स्वप्नकें पुनः ओकर जीवित आ सुगन्धित क्षणमे जीबाक जे अवसर भेटैत छैक आइ, तकरा कोना छोड़ि दैतैक मीरा– मीरा, प्रकाशक पत्नी मीरा नहि, मिनी-गुड्डूक माय मीरा नहि, कुमारि मीरा मण्डपमे घोघ काढ़ने बैसलि अछि, गामबाली काकी ओकर अंग-अंगकें नीक जकाँ झाँपि देने छथिन मुदा तैयो जेना ओकर रोम-रोम सभ टा सुनि रहल छैक ।

–''वर सुन्नर छैक !''

–''पढ़ऽमे बड़ तेज छैक । एम.ए. मे छैक !''

–''खानदानो पैघ छैक । बड़ भागवाली अछि मीरा ।''

आ बड़का भागवली मीरा ई सभ टा गप्प अपन रोम-रोमसँ पीबैत रहलि, सुख-स्वप्नक झूला झुलैत रहलि । आइ फेर सभ टा बिसरि मीरा ओहि झूलामे झूलि रहलि अछि । आइ आर किछुओ मोन नहि राखऽ चाहैत अछि ।

मुदा तखने माय दौड़लि अबैत छैक आ मीराक कानमे कहि जाइत छैक– ''सभटा बीध-बाध जल्दी खतम कर । मंजूक बाबूजीक हालति बड़ खराब छैक, कहुना राति खेपि जाथि । पड़ोसवला गप्प छैक ।

आ मीरा फेर वर्तमानमे घुरि अबैत अछि । जल्दी-जल्दी सभ टा बीध समाप्त करबैत अछि । वर-कनियाँकेँ घर कऽ पाहुन-परककेँ खुआ-पिया निश्चिन्त होइत अछि । बरियाती पहिने खा चुकल छैक । चहल-पहलसँ भरल आङन जखन थाकल-ठेहिआयल सूति रहैत छैक, तँ मीराक आँखि थकनीसँ चूर बन्द होबऽ लगैत छैक । मुदा तकरा जबर्दस्ती खूजल रखैत अछि मीरा आ बगलवला 'क्वार्टर'मे अबैत अछि । माय-बाबूजीक संग प्रकाशो पहिनेसँ ओतऽ उपस्थित छैक । मंजू, मंजू दीदीक पिता, बनर्जी साहेब, राखाल बनर्जी जीवनक अन्तिम साँस गनि रहल छथि आ हुनकर तीन संतान कनैत, आशंकासँ त्रस्त बिछौन लग ठाढ़ छनि । सभसँ पैघ नीना– सतरह-अठारह बरख, अविवाहित, तकरासँ छोट सपन– मैट्रिकक विद्यार्थी आ सभसँ छोट खोकन– मात्र बाहर वर्षक । सभसँ जेठ मंजू सासुर छनि ।

मीराकेँ बनर्जी मौसाक जीवनक एक टा सुनल घटना फेर मोन पड़ऽ लगैत छैक । मंजू दीदीक माय, ओकर मायकेँ दीदी कहैत छलैक, तेँ मीरा सभ बहीन, मौसी-मौसाक सम्बन्ध रखने छलैक बच्चेसँ । मुदा मौसी एक दिन सभ टा सम्बन्ध तोड़ि चल गेल छलैक– नहि जानि कोन बातपर । सभ कहैत छलैक– जूआ । हँ, बनर्जी मौसा जुआ खेलाइत छलैक । सभ टा दरमाहा जूआमे हारि अबैत छलैक । मौसी सहैत गेलैक, मुदा एक दिन सहबाक सभ सीमा समाप्त भऽ गेलैक । अपन सन्तानकेँ भूखल छटपटाइत नहि देखि भेलैक आ सभसँ छोट बेटा खोकनक हाथ पकड़ि ओ घरसँ चल गेलैक सदाक लेल ।

मौसा-मौसीक प्रेम-विवाह छलैक । सौंसे मोहल्लासँ सूनिकऽ मीरा सेहो ई गप्प जनैत छलैक । बनर्जी मौसा एहि प्रेम-विवाह लेल अपन प्रतिष्ठित परिवार, धन-सम्पत्ति छोड़ि देने छलैक– ईहो सुनने छलैक मीरा । मुदा मौसी घर छोड़िकऽ चल गेलैक आ बनर्जी मौसा ओकरा नहि रोकि सकलैक । जूआ नहि छोड़ि सकलैक, मौसीक देल धीया-पूताक सप्पत सेहो तोड़ि देलकैक ।

मौसी फेर घूरिकऽ नहि अयलैक । दोसर शहरमे छोटछीन नोकरी कऽ लेलकैक । खोकन संग रहलैक । बनर्जी मौसा सेहो भरिसक मनाकऽ आनऽ नहि गेलैक । मान कऽ बैसलैक । जकरा लेल अपन परिवार घर-द्वार सभ छोड़ि देने छलैक तकर एतेक निर्मम उपेक्षा ओ सह्य नहि कऽ सकलैक । मौन साधि लेलकैक । जूआ छूटि गेलैक, दोस्त-महिम छूटि गेलैक । मुदा मौसी घुरिकऽ नहि अयलैक । मंजू दीदीक विवाहोमे नहि अयलैक । मंजू दीदी वरक संग ओतहि जा आशीर्वाद लऽ अयलैक ।

मौसीकेँ घूरऽ पड़लैक । मुदा मौसा ओकरा मना नहि सकलैक । खोकन स्कूल गेल छलैक । घूरिकऽ अयलैक तँ मायकेँ बिछौनपर शान्त पड़लि देखलकैक । देह हिला-डोलाकऽ थाकि गेलैक, मुदा माय किछु नहि बजलैक । डेरायल खोकन जोर-जोरसँ कानऽ लगलैक । अगल-बगलक लोक दौड़लैक । सेरायल, मुर्दा देहकेँ खाटसँ उतारि बीच आङनमे राखि देलकैक । मात्र छौ मास पहिनेक घटना छैक ।

आ, मौसी घूरि अयलैक । चारि टा पड़ोसी एक टा टैक्सीसँ लाश एतऽ पहुँचा देलकैक । खोकन बापक कोरामे आर्त्तनाद करऽ लगलैक । मुदा बनर्जी मौसाक आँखिसँ एको बुन्द नोर नहि खसलैक जेना सभ टा जमिकऽ पाथर भऽ गेल होइ ! सौँसे देह पाथर भऽ गेल होइ ! सभ टा संस्कार कयलकैक अपने हाथे आ चुपचाप बैसि रहलैक । कहबा लेल जेना किछु बाँचले नहि होइ । जेना वाक् छिनने चल गेल होइ ।

आ छौ मासक बाद मौसा स्वयं जयबाक तैयारी कऽ रहल छैक । साँस जोर-जोरसँ चलि रहल छैक । सहमल, कनैत धीया-पूताक नोर सेहो नहि देखि रहल छैक । आइ क्यो रोकि नहि सकतैक जेना ! आइ जेना ओ मौसीकेँ मना लेतैक, ओकर संग भऽ जयतैक । मीरा सोचैत अछि आ भीतरसँ कानि उठैत अछि । नीनाकेँ अपन लग खीचि पीठपर हाथ फेरऽ लगैत छैक । नीना ओकर छातीमे मूड़ी गोँति कानऽ लगैत छैक ।

बाबूजी बेर-बेर नाड़ी देखि रहल छथिन । चेहरापर स्पष्ट चिन्ताक रेखा जागल छनि मुदा तैयो जबर्दस्ती चेहरापर आशापूर्ण भाव देखयबाक चेष्टा कऽ रहल छथि । सपन आ खोकन भयभीत ठाढ़ छैक । माय सिरहना लग बैसलि एकटक बनर्जी मौसाक मुँह देखि रहलि छनि आ आँखिसँ अनवरत नोर खसि रहल छैक ।

अकस्मात् बनर्जी मौसा आँखि खोलि दैत छैक आ चारू कात तकैत छैक जेना ककरो ताकि रहल होइ । माय हुनकर चेहरापर झुकि पुछैत छनि– "ककरा तकैत छिऐ ?"

–"नीना कोथाय ? नीना कोथाय ?" मौसाक आँखि ओहिना चारू कात ककरो तकैत रहैत छैक ।

नीना लग आबि जाइत छैक– 'आमि आची, ऐइ खाने आची बाबा !'

–"चोललाम माँ ! तोमार माँ डाक चे । देखबी, तुइ सबके देखबी ।"

बनर्जी मौसाक गरदनि एक दिस टगि जाइत छनि आ आँखि उनटि जाइत छनि । नीना चीत्कार कऽ छातीपर खसि पड़ैत छनि । बाबूजी नाड़ी छोड़ि ऊठिकऽ ठाढ़ भऽ जाइत छथिन आ धोतीक खूटसँ आँखि पोछऽ लगैत छथिन । सपन दुनू पयर पकड़ि जोर-जोरसँ चिचिआय लगैत छैक । माय अपनो कनैत नीनाकेँ बापक देहपरसँ उठयबाक चेष्टा करैत छैक । मीराकेँ अपन आँखिसँ दहो-बहो नोर बहि रहल छैक । मुदा ओकरा ई देखि आश्चर्य होइत छैक जे बारह वर्षक खोकन, सभसँ छोट खोकन, एकदम नहि कानि रहल छैक । खाटपर मुर्दा पड़ल बापक दिस ताकियो नहि रहल छैक । ओ तँ विचित्र दृष्टिएँ ताखपर राखल भगवानक मूर्त्तिकेँ ताकि रहल छैक । नहि जानि केहन विचित्र भाव छैक ओकर आँखिमे जे मीराकेँ डर होबऽ लगैत छैक । लगैत छैक जेना खोकनक आँखिमे कोनो आगिक लहास ऊठि रहल हो ! अकस्मात् ओ दौड़िकऽ तक्खा दिस जाइत छैक आ ओहिपर राखल शीशाक मूर्त्तिकेँ उतारि जोरसँ जमीनपर पटकि दैत छैक आ चारू कात छिड़िआयल शीशाक कुन्नीक बीच पड़ल ओहि कागतक फोटोकेँ आग्नेय दृष्टिएँ तकैत रहैत छैक । एतबोसँ सन्तोष नहि होइत छैक । दौड़िकऽ ओहि कुन्नीक बीच पड़ल भगवानक छविकेँ लात लऽकऽ रगड़ऽ लगैत छैक । सौंसे पयर कुन्नी गड़ि जाइत छैक । शोणिते-शोणिताम भऽ जाइत छैक, मुदा तैयो ओ फोटोकेँ ओहिना पयरसँ रगड़ैत रहैत अछि । बाबूजी दौड़िकऽ ओकरा पकड़ि लैत छथिन आ पकड़िकऽ अपना दिस झीकि लैत छथिन । एतेक काल बाद जेना खोकनकेँ होश होइत छैक आ दौड़िकऽ बापक देहपर खसि हिचुकि-हिचुकिकऽ कानऽ लगैत अछि ।

आफिससँ लंच-रूममे सभ प्रकाशकेँ घेरने छलैक । आइए परिणाम निकलल छलैक आ प्रकाश उत्तीर्ण भऽ गेल छल । इंगलैण्डक एकटा इन्स्टीच्यूट द्वारा आयोजित परीक्षाक प्रथम भाग समाप्त कयने छल । दुनू भाग कऽ लेलापर एक टा अतिरिक्त योग्यता भऽ जयतैक जे संभवतः प्रमोशन आदिमे विचार कयल जाइत छैक ।

प्रकाश प्रसन्न छल । मुदा सभ पार्टीक तगादा कऽ रहल छलैक । बनर्जी सभक अगुआ छल– ''तुम तो छिपे रुस्तम निकले यार ! किसी को खबर भी नहीं और इतनी बड़ी बाजी मार दी । हो जाय एक ग्रैण्ड पार्टी ।'

–''पार्टी तँ अहाँ जहिया कही, भऽ जायत बनर्जी साहेब !'' प्रकाश

कहलकनि– ''मुदा एहि परीक्षामे उत्तीर्ण होयब कोनो तेहन उपलब्धि नहि छैक । की होयत एहिसँ ! प्रमोशन लेल सभसँ बेसी की जरूरी छैक, अहाँ सभ जनिते छिऐक ।''

–''पोलसन ।'' शर्मा जोरसँ छड़पिकऽ बाजल ।

सभकेँ हँसी लागि गेलैक मुदा फेर तुरत सभ उदास भऽ गेलैक । शर्माक वाक्यक यथार्थकेँ हँसिकऽ नहि उड़ाओल जा सकैत छलैक ।

–''ये साली 'सुटेबिलिटी क्लौज' अपनी समझमे नहीं आती ।'' वर्मा बाजल– ''बौस खुश तो सुटेबुल, नहीं खुश तो निकम्मा ! ये तो साली एसेसमेण्ट ही पूरी सबजेक्टिव है, आबजेक्टिव हो ही नहीं सकती । फिर हम क्या करें ?''

–''हरदम डिब्बा रखो मक्खन का पाकिटमे ।'' पान चिबबैत शुक्ला कहलकैक आ एक बेर फेर सभकेँ भभाकऽ हँसी लागि गेलैक ।

प्रकाशकेँ अपन कालेजक एक टा प्रोफेसर मोन पड़ि गेलैक, जकरा सभ सनकी कहैत छलैक– मुदा छलैक ओ बड़ तेज । एक दिन भरल क्लासमे कहऽ लगलैक– 'ओ. एण्ड एम. मेथड' का अर्थ जानते हो ? नहीं जानते होगे । इसका अर्थ है– 'वाइल एण्ड मसाज मेथड' । तरक्की का अक्सीर नुस्खा । अमल करोगे तो तरक्की करोगे ।' मुदा ओ प्रोफेसर स्वयं ओहि नुस्खाक इस्तेमाल नहि करैत छलैक । आइ.ए.एस. कम्पीट कऽ छोड़ि देने छलैक जे आत्माक विरुद्ध काज करऽ पड़त । खाली पढ़ैत आ पढ़बैत छलैक । डिपार्टमेंटक अन्य प्रोफेसर ओकरासँ बड़ खिसिआयल रहैत छलैक, हेड ऑफ डिपार्टमेंड सेहो । मुदा ओ ककरो परवाहि नहि करैत छलैक । एक दिन एक टा विभागीय सभामे कहऽ लगलैक– ''पच्चीस साल की उम्र तक आदमी 'आइडियलिस्ट' रहता है– पूरा आदर्शवादी । अपना नुकसान उठाकर भी दूसरों का भला करता है । पचीस से पचास तक आदमी 'हेडोनिस्ट' हो जाता है– पूरा उपयोगितावादी । सिवा अपने भले के और कुछ नहीं सोचता । मगर पचास के बाद आदमी 'सैडिस्ट' हो जाता है । अपना नुकसान उठाकर भी दूसरों का बुरा करना चाहता है ।''

विद्यार्थीसभकेँ बड़ आनन्द भऽ रहल छलैक, मुदा सीनियर प्रोफेसर लोकनिक चेहरा स्याह भऽ गेल छलनि । एकरा लक्ष्य कयलापर अपन बात सम्हारैत ओ बाजल छलैक– ''आपलोग मेरा मतलब नहीं समझ रहे हैं । यानी जो आदर्शवादी हैं, अपना नुकसान उठाकर भी दूसरों का भला करते हैं, वे हमेशा जवान

रहते हैं, पचीस से अधिक उनकी उम्र होती ही नहीं, चाहे उनकी सही उम्र पचास क्यों न हो । इसी प्रकार जो उपयोगितावादी हैं, सिर्फ अपनी भलाई में विश्वास रखते हैं, वे हमेशा प्रौढ़ हैं– पचीस से पचास की उम्रवाले, चाहे उनकी उम्र बीस ही बरस क्यों न हो । सैडिस्ट लोग हमेशा पचास से ऊपरवाले होते हैं । बूढ़े और जिन्दगी से हारे हुए, चाहे उनकी उम्र पच्चीस ही क्यों न हो ।''

आइ 'मक्खनबाजी' आ 'पोलसन'क गप्पपर प्रकाशकेँ अनायास ओहि प्रोफेसरक 'ओ. एण्ड एम. मेथड' तथा आरो गप्पसभ मोन पड़ि गेल छलैक जे अतिशयोक्ति होइतो यथार्थक निकट छलैक ।

लंच-टाइम खतम भऽ जाइत छैक । सभ मिलि जल्दी-जल्दी प्रकाशक लेल पार्टीक दिन निश्चित कऽ दैत छैक– अगिला शनि दिन । 'मेनू' बादमे निर्णय कयल जयतैक से फैसला कऽ सभ अपन-अपन विभाग दिस विदा होइत अछि ।

विभागक स्थिति आइ-काल्हि तनावपूर्ण छैक । सभ विभागक एक्के हालति छैक । कर्मचारी यूनियनमे फूट भऽ गेल छैक आ ताहिसँ मैनेजमेंट फायदा उठा रहल छैक । विभागसभ ऊपरसँ शान्त छैक मुदा भीतरे-भीतर आगि सुनगि रहल छैक । कहियो विस्फोट भऽ सकैत छैक । काज पूर्ववत् उपेक्षित छैक । खाली हल्ला-हंगामा शान्त छैक । कर्मचारी अपन टेबुलपर बैसल रहैत छैक आ काज नहि करैत छैक ।

प्रकाशकेँ लगैत छैक जे आइ देशक प्रधान समस्या यैह छैक । अपन काजक प्रति क्यो प्रतिबद्ध नहि छैक । अपन काज छोड़ि आन सभ काज ओकरा सहज लगैत छैक । टाइपिस्टकेँ किरानीक काज आसान लगैत छैक आ किरानीकेँ टाइपिस्टक । ई समस्या खाली वर्गविशेषक नहि छैक । आफिसर हो वा मंत्री, किरानी हो वा इंजीनियर, चपरासी हो वा कुली-मजदूर । मंत्रीकेँ दोसर मंत्रीक विभाग नीक आ लाभदायक बुझाइत छैक आ आफिसरकेँ दोसर विभागक कुर्सीमे चानीक खजाना सुझैत छैक । इंजीनियरकेँ आफिसमे मोन नहि लगैत छैक, फील्ड चाहिऐक, फील्ड माने बाहरी आमदनी । डाक्टरकेँ सरकारी नोकरीक संग प्राइवेट प्रैक्टिसक आज्ञा चाहिऐक, जाहिसँ दुनूकेँ मिज्झर कऽ सकय । नन-प्रैक्टिसिंगक माने उपास पड़ब । से के लेत बिना विवशताक ? मजदूर काज कम करत आ भाषण अधिक । किरानीकेँ अपन अतिरिक्त आर सभ प्राणी सुखी आ आनन्दित बुझाइ पड़ैत छैक । कारण ? अपन काजक प्रति प्रतिबद्धता नहि, कमिटमेन्ट नहि । दोष नोकरीमे नहि, नोकरीक श्रेणीमे नहि, वर्गविशेषमे नहि; दोष मनुक्खमे, मनुक्ख

मात्रमे जे कोनो अतिरिक्त सुविधा लेल तँ प्रस्तुत अछि मुदा कर्त्तव्यपालन हेतु नहि । सिद्धान्त बनाबऽ लेल सभ प्रस्तुत अछि, मुदा पालन लेल क्यो प्रस्तुत नहि । अधिकार चाही, कर्त्तव्य नहि । सुविधा चाही, काज नहि । काज किएक करब, जतबा भेटैत अछि, ओतबामे जे करैत छी सैह बहुत अछि । प्रकाशकेँ लगैत छैक जेना विशाल भारतीय जनतंत्रक आधारशिले कमजोर पड़ि गेल हो । स्वतंत्रता-प्राप्तिक बाद जनतांत्रिक बनि जयबाक घोषणा । जेना जनतांत्रिक बनबा लेल घोषणा मात्र पर्याप्त हो । जनतंत्र तँ क्रमिक विकाससँ अबितैक, इवोल्युशनसँ अबितैक, एना लदलासँ तँ जनतंत्र नहि आबि सकैत छैक । पार्लियामेंट आ विधानसभामे दिनमे दू बेर 'फ्लोर क्रासिंग'सँ जनतंत्र नहि औतैक । मंत्रिपद लेल सौदाबाजीक संयुक्त मोर्चा बनौलासँ जनतंत्र नहि औतैक । जनतंत्रक लेल तँ चाहिऐक जागरण । अपन अधिकार आ कर्त्तव्यक ज्ञान । मास कन्शसनेस । जकर कोनो लक्षण नहि देखना जा रहल छैक ।

फेर प्रकाशकेँ लगैत छैक जेना बेसी निराशावादी भेल जाइत अछि । वर्तमान उथल-पुथल, राजनीतिक अस्थिरता प्रगतिक चरण सेहो भऽ सकैत छैक । एहि अस्थिरताक बाद एक टा स्थिर आ प्रिय स्थिति आबि सकैत छैक– वास्तविक जनतंत्र । जनतंत्रक वास्तविक मूल्यक प्रति सचेत जनता । वर्गभेद आ सामाजिक विषमताक अन्त करऽवला जागरण ।

मुदा फेर लगैत छैक जेना ओ स्वप्नद्रष्टा भऽ रहल अछि । वास्तविक स्थिति एकदम प्रतिकूल दिशामे जा रहल छैक । एहि स्थितिसँ जनतांत्रिक मूल्यक प्रति आस्था आ विश्वासक जन्म होयब असंभव । ई तँ घोर अराजकताक स्थिति छैक, सम्पूर्ण सिद्धान्त, सभ टा मूल्यकेँ अस्वीकारबाक स्थिति छैक, निराशा आ पराजयबोधसँ उपजल आक्रोशक स्थिति छैक । एहिमे सभ टा समाप्त भऽ जयतैक । समाप्ते भऽ जायब नीक होयतैक । कमसँ कम ओहि समाप्तिक भग्नावशेषपर एक टा नव निर्माणक क्षीण आशा तँ रहतैक ।

अपन कुर्सीपर बैसल-बैसल प्रकाश बहुत-किछु सोचि जाइत अछि । बहुत समय बीति जाइत छैक । फेर लगैत छैक जे ओ स्वयं अपन कथनपर अमल कऽ रहल अछि । तखनसँ काज नहि होयबापर एतेक सोचि गेल, मुदा काजमे हाथ नहि लगौलक । असल समस्या यैह छैक । काज नहि होयबापर सोचल आ बाजल बेसी जाइत छैक, कयल बहुत कम जाइत छैक । प्रकाश एक टा फाइल उठा ओहिमे ध्यानस्थ भऽ जाइत अछि ।

प्रकाश जखन आफिस छोड़ि डेरा दिस विदा भेल तँ फेर ओकरा मोनमे एक टा तर्क-वितर्क चलि रहल छलैक । ओकरा अपन चिन्तनपर अपने आश्चर्य भऽ रहल छलैक । ओ एना अनार्किस्ट जकाँ किएक सोचऽ लागल छल आइ-काल्हि ? ओ तँ छात्र-जीवनसँ शान्ति, अनुशासन आ व्यवस्थाक पक्षपाती रहल अछि । व्यवस्थाहीन स्थितिक कल्पना ओकर मोनमे कतऽसँ आबि गेलैक ? हिंसक क्रांतिक कल्पनोसँ दूर रहल अछि । रक्तहीन 'ग्लोरियस क्रान्ति' ओकरा सभ दिन बेसी आकर्षित करैत रहलैक अछि ।

फेर लगैत छैक जेना ई विचार अराजकतावादी सिद्धान्तमे विश्वासक कारणेँ नहि, चारू कात पसरल अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार आ हिंसासँ त्राण पयबाक इच्छासँ उपजल छैक । एहि असह्य स्थितिसँ छुटकारा पयबा लेल सम्पूर्ण विनाशक कल्पनो ओकरा आतंकित नहि करैत छैक, किएक तँ ओहि विनाशमे ओकरा नवनिर्माणक आशा आ संभावना देखाइ दैत छैक ।

एही गुनधुनमे डेरा पहुँचि जाइत अछि । डेरा पहुँचिते एकदम प्रसन्न भऽ जाइत अछि– गामसँ बाबूजी आयल छथिन । पयर छूबि प्रश्न करैत छनि– "कखन अयलहुँ ?"

–"तोहर आफिस गेलाक कनियेँ कालक बाद । हमरो किछु काजसभ छल बोर्ड आफिसमे । सभ टा समाप्त कऽ एखने घूरल छी । आठ बजेक जहाजसँ जयबाक विचार अछि ।"

–"से कोना होयत ? आइ जायबाक एतेक जल्दी किएक ? आइए अयलहुँ, आ आइए जायब । जयबेक होयत तँ काल्हि जायब । आइ आराम करू।"

–"बेस, काल्हिए जायब । तेहन कोनो जल्दी नहि अछि । किछु थाकनियो बुझाइत अछि ।"

बाबूजी बिछौनपर पड़ि रहैत छथिन । प्रकाश कृष्णाकेँ बजा देह-हाथ जतबाक आदेश दैत छैक । कृष्णा देह जाँतऽ लगैत छनि । प्रकाश कपड़ा बदलि फेर लगमे बैसि जाइत छनि । आइ बड़ हल्लुक मोन लागि रहल छैक । पछिला बो माय-बाबूजी सभकेँ डेरासँ गाम चल गेलाक बादेसँ छातीपर एक टा बोझ बुझाइत छलैक । एक टा अपराध-बोधसँ ग्रस्त रहैत छल हरदम । गामसँ पन्द्रह दिन भऽ आयल तैयो ई अपराध-बोध कम नहि भेलैक । मुदा आइ बाबूजीक आबि गेलासँ जेना छातीपरक ओ बोझ उतरि जाइत छैक आ खूब प्रसन्न आ हल्लुक अनुभव करैत अछि ।

–"आफिसक की हाल-चाल छह ?" अकस्मात् बाबूजी प्रश्न करैत छथिन ।

–"ठीके छैक । सभ टा पूर्ववत् ।" प्रकाश उत्तर दैत छनि । मुदा तत्काल आइ परीक्षोत्तीर्ण होयबाक बात स्मरण अबैत छैक । उत्साहित होइत कहैत छनि– "आइ एक टा परीक्षाफल आयल अछि । इंगलैण्डक इन्स्टीच्यूटसँ आयोजित परीक्षा छैक । दू पार्ट छैक । पहिल पार्ट हम पास कऽ गेलहुँ । दूनू पार्ट पास कयलासँ संभवतः प्रमोशन आदिमे किछु सहायता हो ।"

बाबूजी प्रसन्न होइत कहैत छथिन– "तँ दोसरो पार्ट खतम कऽ लैह । कहिया परीक्षा छैक ?"

प्रकाश किछु चिन्तित होइत कहैत छनि– "परीक्षा तँ नवम्बरमे छैक, मुदा फीस एही मासमे जमा करबाक छैक । 500 रुपैया लागत । एखन सभक पछिला बकाया-उधार नहि सधल छैक । सोचैत छी, अगिला साल देब परीक्षा । कोनो खास फर्क नहि पड़त ताहिसँ ।"

बाबूजी सेहो जेना कोनो चिन्तामे डूबि जाइत छथिन । प्रकाशकेँ ई नीक नहि लगैत छैक । विषय बदलबा लेब पूछि दैत छनि– "गामपर की हालचाल ? माय कोना अछि आब ?"

बाबूजी विस्तारपूर्वक सभक विषयमे सुनाबऽ लगैत छथिन आ प्रकाश सुनैत रहैत अछि– बड़ी रातिधरि ।

आफिससँ निकलिकऽ प्रकाश अनायास आकाशवाणी दिस विदा भऽ जाइत अछि । कोनो पूर्व योजना नहि छलैक । मुदा पाँच बजे आफिससँ बहराइत काल इच्छा भेलैक जे कोम्हरो टहलि-घुरि आबी । पयरे टहलैत-टहलैत आकाशवाणी दिस आबि गेल । आकाशवाणीक बोर्ड देखलकैक तँ अनायास विकाससँ भेँट करबाक इच्छा भऽ अयलैक । बहुत दिन भऽ गेल छलैक एम्हर अयना । हातामे पैसिते विकासपर दृष्टि गेलैक, बाहर घासपर बैसल दू टा सहयोगी कर्मचारीक संग चाह पीबि रहल छलैक । हाथक इशारासँ प्रकाशकेँ ओम्हरे बजौलकैक । प्रकाश लग जाकऽ ओकर दुनू संगीकेँ नमस्कार कयलकैक । दुनू परिचित छलैक– श्रीमती

अंजलि सिन्हा आ प्रफुल्ल शर्मा । प्रत्युत्तरमे नमस्कारकें स्वीकार करैत प्रकाश लगमे बैसि गेल ।

—"चाह मङबियौक ?" विकास पुछलकैक आ बिना उत्तरक प्रतीक्षा कयने सामनेक फुटपाथी होटलक वेराकें हाक देलकैक— "रे गुलटेनमा, एक कप आर ला ।" फेर प्रकाश दिस घुरैत कहलकैक— "बहुत दिन बाद ?"

—"हँ, किछु ओझरा गेल रही । बीचमे गामो गेल रही । अवसर नहि भेटल ।" प्रकाश सफाइ देलकैक ।

—"किछु नव बात आ कि वैह पुरना शीतयुद्ध ?"

विकासकें सभ टा बूझल छैक ।

प्रकाश हँसिकऽ रहि जाइत अछि । 'शीत-युद्ध गर्मयुद्धसँ उत्पन्न परिणाम नहि छैक ।' ओ सोचैत अछि— ई तँ ओकर सब्स्टीच्यूट छैक— गर्मयुद्धसँ बेसी भयावह आ कष्टदायक ।

—"की सोचऽ लगलें ?" विकास टोकैत छैक ।

—"किछु नहि । सोचैत छलहुँ जे 'शीतयुद्ध'क उचित परिभाषा की होयबाक चाही ?" प्रकाशक बातपर उपस्थित तीनू गोटे हँसऽ लगैत छैक ।

—"किछु लिखबो कयलें एम्हर ?" विकास प्रश्न करैत छैक ।

अंजलि सिन्हा बीचेमे बाजि उठैत छैक— "हँ, एम्हर अहाँक कोनो कथा प्रसारित नहि भेल ? पत्रिकोसभमे नहि देखलहुँ ?"

—"देखब कोना ? किछु लिखब तखन ने छपत ! एहि बीच घोर अनास्था उपजल अपनापर । होइत छल जेना किछुओ लिखब संभव नहि अछि । चारू कातसँ लिखल-छापल जा रहल अछि, से पढ़ैत रहलहुँ अछि । हिन्दी वा अन्य भारतीय भाषा टामे नहि, अन्य विदेशी भाषामे सेहो । एहि संक्रमण कालमे प्रचलित मान्यताक संग समझौता करब असंभव जकाँ भेल जा रहल अछि । नीक कथा कहब वा लिखब जेना भूतक गप्प भऽ गेल हो । एक टा पैघ महत्त्वपूर्ण वक्तव्यक संग एक टा फिसड्डी रचना । वक्तव्य सर्वत्र भेटि रहल अछि, रचना कतहु नहि । जेना वक्तव्य वा नाराबाजी साहित्य बनि गेल हो !"

—"अहाँ एकतरफा गप्प कऽ रहल छी ।" अंजलि सिन्हा आपत्ति करैत छथिन । ओ नव पीढ़ीक लेखिका छथि— "संक्रमण-कालमे निश्चित मूल्य नहि रहैत छैक, निश्चत होयबाक प्रक्रियामे रहैत छैक । मुदा तेँ ओकर सम्पूर्ण साहित्यकें एना नकारि नहि सकैत छिऐक अहाँ । यदि दिशाहीनता मूल्यहीनता आ कनफ्यूजन छैक, तँ ओ कहाँसँ अयलैक ? ई कुत्सित यथार्थ, ई कुण्ठा, ई पराजय-बोध, ई धुरीहीनता एहि अभिशप्त युगक देन छैक, एकरा हेतु रचनाकारकें कोना दोषी ठहरा सकैत छिऐक अहाँ ?"

—"हम बहसक लेल नहि, मात्र अपन आस्थाहीनताक गप्प कऽ रहल छलहुँ श्रीमती सिन्हा !" प्रकाश बात टारैत कहलकनि— "हम स्वयं अनिर्णयक स्थितिमे छी । जे लिखल जा रहल छैक से पूर्णत: ग्राह्य नहि भऽ रहल अछि । जे लिखि रहल छी तकरो प्रति पूर्ण आस्थावान नहि छी जे यैह वास्तविक प्रतिनिधित्व कऽ सकत युगीन समस्याक । प्रत्येक युगकें रचनाकारसँ किछु अपेक्षा रहैत छैक ।"

—"मुदा ई अपेक्षा कोना पूर्ण होयतैक ? युग हमरा की दऽ रहल अछि ? बेकारी, सामर्थ्यहीनता आ दोगला सन्तान । विष पीबि अमृत कतऽसँ देबैक ? महादेवक कण्ठ ककरा उधार भेटतैक ? युग जे देतैक, रचनाकार ओकरे ने बाँटत ?"

विकास जेना मध्यस्थता करैत कहलकैक— "भऽ गेल दू पीढ़ीक मान्यतामे संघर्ष शुरू । ई भोगल यथार्थक गप्प तँ जेना हमरो माथमे नहि अँटैत अछि । एकर अर्थ जे डुबैत व्यक्तिक 'हॉरर'कें अभिव्यक्त करबा लेल स्वयं पानिमे डूबब आवश्यक । तखन ओहि भोगल यथार्थकें अभिव्यक्त के करत ? हमरा जनैत तँ जे डूबि क्यो रहल हो, मुदा डूबैत व्यक्तिक आतंक छूबि ककरो जाइक, हाथमे सुइ ककरो गड़ैक आ दर्द ककरो भऽ जाइक, वैह असल यथार्थ छैक, भोगल यथार्थ छैक । वैह साहित्यकें शाश्वत बनबैत छैक, दर्दकें भाषा आ आतंककें अभिव्यक्ति दैत छैक । मुदा आजुक लोक से किएक मानत ?"

—ठीक कहैत छें भाइ !" प्रकाश विवादकें हल्लुक करैत कहैत छैक— "हमरालोकनि तँ बीचक पीढ़ी छी । पुरनासभ अगत्ती कहि नकारैत अछि आ नवका लेल 'आउट आफ डेट', एक्झॉस्टेड, रिक्त । की श्रीमती सिन्हा ?"

सभकें हँसी लागि जाइत छैक । तावत होटलक छौंड़ा चाह राखि जाइत छैक । विकास दूरेसँ मधुकर, सत्येन, आ निखिलकें अबैत देखि छौंड़ाकें तीन टा आर चाह अनबाक आदेश दैत छैक । आ प्रकाश दिस तकैत कहैत छैक— "आबि रहल छथुन मैथिलीक उद्धारकर्त्ता त्रिमूर्ति ।"

प्रकाश श्रीमती सिन्हाकेँ फुसफुसाकऽ कहैत छैक– "मैथिलीमे हमरालोकनि एहि नव-पुरान विवादसँ मुक्त छी । पुरान चाउर पथ्य, तँ नवको वाह-वाह । 'यात्री'जी नीक तँ षट्शास्त्रियोजी बेजाय नहि । छपि जायब पर्याप्त, अधलाह क्यो नहि लिखैत अछि– सुरसुर-मुरमुर दुनू बेस । मैथिलीमे एम.ए. आ पी-एच.डी. छी तँ कथा-कविता लिखबाक पहिल अधिकार अछि । सम्पादक नहि छपताह तँ बूड़ि छथि, पी-एच.डी. की घास छीलिकऽ भेटल अछि ?"

श्रीमती सिन्हा हँसऽ लगैत छैक । तावत विभूति लग आबि जाइत छथि आ नमस्कारक आदान-प्रदानक संग बैसि जाइत छथि । फुटपाथी होटलक छौंड़ा तीन टा चाह राखि जाइत छैक । चाह तीनू दिस बढ़बैत विकास पुछैत छैक– "आइ कोना कृपा कयल ?"

–"नहि-नहि, कृपा की ? ओहिना भेंट-घाँट करऽ चल अयलहुँ ? ओना हमर ई उपन्यास तँ देखने होयबैक– 'सूतल समाज' । झोरीसँ एक टा पुस्तक बाहर कऽ विकासक हाथमे दैत मधुकर कहैत छथिन– "सभ युनिभरसिटीमे आनर्सक पढ़ाइक लेल स्वीकृत भेल छैक ।" फेर प्रकाशकेँ सम्बोधित करैत कहैत छथिन– "अधलाह नहि मानब । एक्के टा प्रति बाँचल अछि । दोसर संस्करण प्रेसमे छैक, अहाँकेँ फेर दऽ जायब । दहेजक समस्यापर लिखने छिऐक ।"

–"वाह ! की सुन्दर आ सामयिक विषय चुनल अछि !"

प्रकाश श्रीमती सिन्हा दिस ताकि मुसकियाइत अछि । मुदा मधुकर प्रायः ओकरा लक्ष्य नहि करैत छथिन । झोरासँ दोसर पुस्तक बहार करैत प्रश्न करैत छथिन– "ई नवका प्रकाशन देखलिऐक अछि अपने लोकनि ? –मैथिली साहित्यक इतिहास । बड़ सुन्नर लिखलनि अछि, हमरो पोथीक उल्लेख आयल छैक । फेर कनेक सहानुभूति देखबैत कहैत छथिन– "मुदा एक टा आश्चर्य होइत अछि । अहाँ दुनू गोटेक चर्च नहि कयने छथि ।"

प्रकाश हँसैत छनि– "नहि कयने छथि तँ जाय दियौक । नाममे दम होयतैक तँ फेर दोसर इतिहासकारसँ लिखा लेब । आ मानि लियऽ जे ओतहु पिछड़ि जायब तँ अपन पैसा खर्च कऽ एक टा किरायाक साहित्यकारसँ खूब चर्चा करब लेब । मानि लियऽ, ओहो नहि लहल तँ हम अपन इतिहासमे विकासक चर्चा कऽ देबैक आ विकास अपन इतिहासमे हमर झण्डा गाड़ि देत ।"

मधुकर एकदम अप्रतिभ भऽ जाइत छथि । दुनू सहयोगीक मुँह तमतम

जाइत छनि । झोरा-झपटा उठा विदा होइत विकासकेँ कहैत छथिन– "एहि सप्ताह अपन कार्यक्रममे एहि पोथीक समीक्षा कऽ देबैक नीक सन । ओना ई पोथी एहि बेर अकादमी-पुरस्कार लेल सेहो प्रस्तावित भऽ रहल छैक ।"

तीनूकेँ गेलाक बाद विकासकेँ हँसी लगैत छैक जोरसँ– "एकदम लोहछा देलहिक आइ तोँ । एतेक कटाह कहियासँ भऽ गेलेँ ?"

–"देंगे वही जो पायेंगे तेरे जहाँ से हम । की श्रीमती सिन्हा ?" प्रकाश श्रीमती सिन्हा दिस ताकि मुसकियाइत अछि आ फेर तीनू भभाकऽ हँसि पड़ैत अछि । बड़ी काल धरि हँसैत रहैत अछि ।

आ डेरा घुरैत काल प्रकाश बड़ उत्साहपूर्ण अनुभव करैत अछि, एक टा तनावरहित सुखद संध्याक स्मृतिसँ भरल । डेरामे पयर रखिते मीरा किछु टाका हाथमे राखि कहैत छैक– "घरसँ आयल अछि ।"

प्रकाशकेँ आश्चर्य होइत छैक । मीरा खाली घरसँ आयल अछि कहलकैक– 'अहाँक घर' नहि कहलकैक । मोनमे किछु हुलसैत छैक जकरा तत्क्षण दबाकऽ प्रकाश रुपैया गनऽ लगैत अछि । पाँच सय छैक आ पचासो दसटकियाक ऊपरमे राखल मनीआर्डर-कूपनपर लिखल छैक– पाँच सय टाका पठा रहल छियऽ ! परीक्षाक 'फीस' अबस्से जमा कऽ लिहऽ ! कनियाँ आ बच्चा सभकेँ आशीष– वीरेन !"

प्रकाश पत्र पढ़ि मीरा दिस तकैत अछि । ओ मूड़ी झुकौने ठाढ़ि छैक । मुदा ओकरा लगैत छैक जेना एखने मीरा किछु कहतैक जकरा सुनबाक ओ कहियासँ प्रतीक्षा कऽ रहल अछि ।

मुदा मीरा किछु नहि कहैत छैक । भनसाघर दिस चल जाइत छैक । प्रकाश कपड़ा बदलऽ लगैत अछि । मिनी झट खीचिकऽ बिछौन दिस लऽ जाइत छैक– "पप्पा, खिस्सा कहू ।"

बिछौनपर पड़ैत देरी नहि जानि किएक प्रकाशकेँ ओ खिस्सा मोन पड़ैत छैक जे ओकर बाबी बच्चामे ओकरा सभ दिन कहैत छलैक । प्रकाश वैह खिस्सा कहऽ लगैत छैक– "एक टा रहय भिखारि । ओकरा एक टा देवताक शाप रहैक । एक गाम माङय तँ तैयो एक तामा आ सात गाम माङय तँ एक्के तामा । ओ भिखारि गामेगाम बौआयल फिरय आ..."

खिस्सा सुनैत-सुनैत मिनी सुति रहैत छैक । मुदा ई पुरना खिस्सा एतेक

दिनका बाद अपन मुँहसँ कहैत काल प्रकाशकें एक टा नव अर्थ-बोध होइत छैक जेना ई अभिशाप ओहि भिखारिक नहि, समस्त नोकरीपेशा निम्नमध्यवर्गीय लोकक हो– एक गाम माङय तँ एक तामा, सात गाम माङय तैयो एके तामा।

मीरा खयनाइ लऽ अनैत छैक। ऊठिकऽ खाय बैसि जाइत अछि प्रकाश। मुँहमे कओर दैत-दैत एक बेर अनायास दृष्टि ऊपर उठैत छैक। मीराक आँखिमे नोर भरल छैक। ओ बामा हाथें ओकरा लग घीचैत छैक। मीरा अनायास एकदम समीप आबि ओकर पीठपर मुँह नुकाकऽ कानऽ लगैत छैक– निःशब्द। ओकर पीठपर अपनत्वक स्पर्श दैत प्रकाश मोन पड़बाक चेष्टा करैत अछि जे बाबी अपन खिस्सामे ओहि भिखारिक शाप-मुक्त होयबाक कोन उपाय कहने छलैक ?

●

युगपुरुष